श्रीवल्लभ वंशवृत्त

(१)

तथा

उत्तर-भारतीय—

आन्ध्र (तैलंग)–भट्ट–वंशवृत्त

(२)

श्रीमद्वल्लभ वंशज–गोस्वामिपरिषद्
द्वारा प्रकाशित

सम्पादक :
गो० श्रीव्रजभूषण शर्मा
कांकरोली.

सम्पादक
पो. कण्ठमणि शास्त्री
क. गोकुलानन्द तैलंग
विद्याविभाग,
काँकरोली (राजस्थान)

शु. वै. वे. युवक-मण्डल
के
अर्थ-साहाय्य से प्रकाशित.

[श्रीविट्ठलेश जयन्ती, २००७ वि०]

प्रकाशक
गो. श्रीविट्ठलनाथ शर्मा
मन्त्री,
शु. वै. वे. महासभा तथा युवकमण्डल

उत्तर भारतीय—

आन्ध्र (तैलङ्ग)–भट्ट-वंशवृक्ष [२]*

सं०	गोत्र	अवटङ्क	सङ्केत	सांस्थानिक परिचय			पृष्ठ
१.	भारद्वाज	(i) नेत	क/१	अजयगढ़. मैहर			१
			क/२	बाँदा, गौरहार, टीकमगढ़, चित्रकूट			२
			क/३	सागर, कोटा, नाथद्वारा (हिंडोरियास्थ)			
			क/४	सागर, बिलहरा, मिर्जापुर			३
			क/५	बसई, मथुरा, जयपुर, बरेली			४
		(ii) वाजपेयी	ख	नयाकिल्ला, दतिया, टीकमगढ़, सागर, विजावर			५
२.	आत्रेय	(i) द्राविड़ा गोस्वामी	क (i)	बीकानेर			६
			क (ii)				७
			क (iii)				८
			क (iv)	बीकानेर-महापुरा			९
		(ii) कवीश्वर	ख/१	बाँदा, अजयगढ़, दतिया, जयपुर, रायपुर			१०
			ख/२	जैतपुर, जबलपुर			११
		(iii) बागरोद्दी	ग	जयपुर, बम्बई, अलवर, ब्रजनगर, नाथद्वारा			१२
		△(iv) आत्रेय	घ	जतीपुरा, कोटा			
		∠(v) द्राविड़ा	ङ	कोटा, नाथद्वारा			
		卐(vi) कठौद्दी	×	×	×		×
३.	गौतम	(i) सिमरी	क(i)	नौहरा, रेवै, बीकानेर, चित्रकूट			१३
			क ii)	सिवाड़, बीकानेर (झिलाइया), बालेर, वृन्दावन जयपुर			१३अ
			क(iii)	नरी, ऊंचागाम, बीकानेर			१४
			क(iv)	नरी, बीकानेर (अटेर), वृन्दावन (गोकुल)			
		(ii) चक्रवर्ती	ख	लश्कर, टीकमगढ़			१५
		(iii) देवर्षि	ग	जयपुर, नाथद्वारा			१६
४.	श्रीवत्स	(i) पोतकूर्चि	क/१(i)	कांकरोली, नागपुर, भोपाल			१७
			क/१(ii)	सागर, जयपुर, नागपुर, रायपुर			१८
			क/२	टीकमगढ़			१९
		(ii) भद्रमा	ख	ऊंचागाम			२०
		卐(iii) महापात्र	×	×	×		×

सं०	गोत्र	अवटङ्क	सङ्केत	सांस्थानिक परिचय			
५.	कौण्डिन्य	(i) करञ्जी	क/१(i)	वृन्दावन (षट्भ्रातृ), मथुरा			२१
			क/१(ii)	वृन्दावन			२२
			क/२	कोंडा जहानाबाद, कानपुर			२२अ
			क/३	बम्बई, अहमदाबाद, बेट, नाथद्वारा			२३
		(ii) वाशिष्ठ	ख/१	बीकानेर (झिलाइया)			
			ख/२	बीकानेर (बांदास्थ)			
				टीकमगढ़			
		(iii) दीक्षित	ग	वृन्दावन (करंजी), कौंकरोली, मथुरा			२४
६.	मुद्गल	षट्भ्रातृ-छभैया	१	लखनौ, खुर्जा, लश्कर, कामवन			
			२	दग्धा			२५
			३ (i)	बीकानेर, अजयगढ़			२६
			३ ii)	चंदौसी, कोटा, गोकुल, घाटा, काशी, नाथद्वारा,			
७.	काश्यप	(i) रेही	क/१	अहमदाबाद, नासिक, मंडालिया			२७
			क/२	गोकुल, काशी, मांडवी, अहमदाबाद, नाथद्वारा			२८
			क/३	चित्रकूट			
		(ii) त्रिगृह	ख/१	मथुरा			२९
			ख/२	कोटा			३०
		(iii) करम्भा	ग	नाथद्वारा			
		△ (iv) झांमेय	घ	बम्बई			
		卐 (v) मठपति	×	×	×		×
८.	लोहित	अबोटी		भोपाल, सागर			३१
९.	कौशिक	△ गोष्ठीशाल	...	अहमदाबाद			
१०.	हरतस	△ (i) पालगुल्ल △(ii पेद्दीभोटला △(iii)		मेंडूर △ (iv) चिन्तलपाटी			
		कामवन	सूरत	कामवन	नाथद्वारा		३२
११.	वाधुलस	पञ्चनदी	...	मथुरा, कोटा			
१२.	...	...	...	देवप्रयाग +			

*प्रथम भाग रूप में देखो "श्रीवल्लभ वंशवृक्ष"– गो० श्रीब्रजभूषण शर्मा (कांकरोली) द्वारा सम्पादित   卐 लुप्तवंश ∠ आंशिक प्राप्त △अनुपलब्ध वंशवृक्ष + परिचयादि अप्राप्त

मुद्रक :
प्रभुदयाल मीतल,
अग्रवाल प्रेस, मथुरा.

उत्तर भारतीय —

"आन्ध्र-जगत् के इतिहास की रूपरेखा"

क. मूलस्रोत तथा भौगोलिक अधिष्ठान—

उत्कल के दक्षिण, द्राविड के उत्तर, कर्णाटक के पूर्वोत्तर, महाराष्ट्र के पूर्व समुद्र के पश्चिम अर्थात् श्रीशैल से चोला स्थान के मध्य तक तैलंग देश है।

इनमें निवसित तैलङ्ग ब्राह्मणों के अनेक भेद हैं।

जो ब्राह्मण परदेश से आकर बसे थे, वे 'वेल्लाटि' अथवा 'वेलनाडि' नाम से प्रसिद्ध हुए। वेल = बाहिर भाग, नाडू = देश, परदेशी ब्राह्मण जो तैलङ्ग देश में बस गये।

और उनसे भी जो पहिले स्वग्राम दग्ध हो जाने से यहाँ आकर बसे, वे सब 'वेगिनाडू' कहलाये। वेगि = दग्ध, नाडू = देश।

जो थोड़े समय से स्वदेशाधिपति के मर जाने तथा अनाचारादि के भय से यहाँ आकर बसे हैं, वे 'मुर्किनाडू' कहलाये। मुर्कि = परण, नाडू = देश या देशाधिपति।

तीनों देशों से आये हुए ब्राह्मण 'कर्णकर्मा' नाम से प्रसिद्ध हुए अर्थात् कर्म करने में कुशल।

कुछ दूषित संसर्गी जो 'तिलंगाणि' नाम से प्रसिद्ध हैं और 'कासलनाडू' नाम से विख्यात हैं।

इस प्रकार वहाँ जाति के ये विभेद स्थापित हैं, जिनमें ऋग्वेदी और आपस्तम्ब बहुत हैं। याज्ञवल्क्य सम्बन्धी वाजसनेयी न्यून हैं। इनका विवाह–सम्बन्ध अपने-अपने वर्ग में होता है।

श्रीवल्लभाचार्य और उनके वंश के परिचय के साथ यह भी अन्यत्र उल्लेख मिलता है कि लक्ष्मण भट्ट के साथ जो ब्राह्मण थे उनमें कितनेक कर्णाटक, द्राविड और तैलङ्ग थे। अस्तु †

यह तो हुई दक्षिण के आन्ध्र समाज की बात। अब हम अपनी बात करते हैं। हमारा जाति-समाज सीधा दक्षिण से सम्बन्ध रखता है। हम लोग उसी ब्राह्मण वर्ग के पंचद्राविड-देश भेदान्तर्गत आन्ध्र तैलङ्ग देश के हैं! वैदिक-षोडष-संस्कार की पद्धतियाँ हमारे मूल-संस्कृति का आभास कराती हैं।

देश-काल के प्रभाव से हमारा बाह्य, लौकिक, व्यावहारिक जीवन भले ही इतना आमूल-चूल परिवर्त्तित और काया-कल्प का सा स्वरूप धारण कर चुका हो, किन्तु आज भी हम में वे पुरातन संस्कृति के तत्व यथाकथंचित् रूप में विद्यमान हैं।

हमारा जाति समाज जहाँ विशाल संख्या में दाक्षिणात्य तैलङ्ग देश तथा उसके पार्श्ववर्त्ती भू-भागों में विस्तृत है वहाँ उत्तर भारत में भी सर्वत्र उसकी शाखाएँ बिखरी हुई हैं। यहाँ हम कुछ वर्ग शुद्धाद्वैत 'वेल्लनाटीय' हैं, जिनमें समस्त गोस्वामी, गोकुलस्थ और कतिपय मथुरास्थ कुटुम्बों का समावेश है और कुछ वर्ग 'तैलङ्ग' 'भट्ट' 'द्रविड़' 'आन्ध्र' आदि उपपद-वाच्यों से सम्बोधित किये जाते हैं। अमुक-अमुक स्थानों में तत्तद्वर्गों की प्रतिष्ठा, आजीविकोपार्जन-साधन, मूलस्थान-निर्देश आदि दृष्टिकोणों से अमुक-अमुक-उपपदों से परिलक्षित किये जाते हैं।

उत्तर भारतीय तैलङ्ग समुदाय में 'भट्ट' शब्द ही हमारी जाति के सभी वर्गों के साथ प्रयुक्त होता रहा है। यह हमारे उस वैदुष्य—प्रकाण्ड प्रतिभा का द्योतक है, जो विगत शताब्दियों में हमारे पूर्ववर्त्ती महानुभावों ने उपार्जित की थी। विद्वत्ता वा पाण्डित्य के पर्य्याय की यह सार्वभौम महत्त्वपूर्ण उपाधि है! हमारे पुरातन इतिहास की अधिकांश विभूतियों के साथ हमें यह 'भट्ट' शब्द प्राप्त होता है और वर्त्तमान में भी हमारा उससे निर्देश कराया जाता है। इसी प्रकार 'तैलङ्ग' शब्द है, इससे स्पष्टतः ही हमारी मूल जाति, देश और संस्कृति का बोध होता है। जातीयता के निदर्शन के लिये सर्वत्र इसी शब्द को प्रयुक्त किया गया है। उत्तर देश में 'तैलङ्ग' शब्द से तैलङ्ग देशस्थ ब्राह्मणत्व का स्वतः ही बोध हो जाता है। जाति के प्रत्येक वर्ग में इस शब्द को स्थान और महत्व है। हाँ, समस्त जाति को अभिसूचित करने और दक्षिण-उत्तर का मौलिक विभाजन प्रदर्शित करने के लिये 'उत्तर देशस्थ' विशेषण सर्वथा उपयुक्त है।

हमारे जातीय-समाज का प्रवाह कब, किस परिस्थिति में और कैसे दक्षिण से उत्तर की ओर अभिमुख हुआ तथा हम क्रमशः किस प्रकार उत्तर-भारत में फैले, यह क्रमिक ऐतिह्य सामग्री के द्वारा जाना जा सकता है। सामान्यतः यह स्पष्ट रूप में जाना जा सकता है कि आज जो हमारी जाति की विविध शाखाएँ विभिन्न स्थानों में यहाँ फैली हुई हैं, ये सब एक समय, एक साथ और एक ही उद्देश्य से उत्तर में नहीं आयीं, न एक साथ ही उन्होंने अपने जातीय-संस्थान की प्रतिष्ठापना की! हमारा अपने स्वदेश दक्षिण से सर्वांशतः सम्बन्ध-विच्छेद और दक्षिण की सर्वथा विस्मृति, अपरिचय आदि से यह प्रतिध्वनित होता है कि हमारे विभिन्न समुदाय कोई ४-५ प्रत्युत इससे भी अधिक शताब्दियों पूर्व दक्षिण से उत्तर की ओर प्रस्थापित हुए होंगे. इस दीर्घ काल में आज हमारा दक्षिण से सर्वथा सम्पर्क नहीं रह गया है। हम क्रमशः समय-समय पर तीर्थाटन, धर्म प्रचार, आजीविकोपार्जन आदि के लक्ष्य से उत्तर भारत में विन्ध्याचल के ऊपर के भूभाग में आते रहे और आज हमारा समुदाय उत्तर भारत में कोई १५०० की जनसंख्या में विद्यमान है। जिसमें प्रायः २७६ घर हैं। ‡

वह तो युग ही ऐसा था, जिसमें लगातार जातीय कुटुम्बों ने उत्तर की ओर अभिप्रयाण किया। उन पूर्व महानुभावों के अपार विद्याबल, चमत्कार और प्रतिभा से उत्तर देशस्थ विभिन्न कुटुम्ब, सद्गृहस्थ, नरेशों आदि ने उन्हें कवि, गुरु, गायक, धर्मशास्त्री, ज्योतिषी, वैद्य, पौराणिक, उपदेशक आदि रूप में एवं ग्राम्य-सम्मान आदि राज्याश्रय देकर अपने यहाँ बसाया। कुछ लोग स्वतन्त्र आजीविका वृत्तियों में लगे रह कर यश, सम्मान और सम्पन्नता का उपार्जन करने लगे। कुछ कुटुम्ब श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभुजी तथा श्रीगुसाईं जी के साथ उत्तर भारत में आये और उन्हीं के आश्रय तथा स्वतन्त्र स्थिति में यत्र-तत्र बस गये। उस समय के आये हुए सभी कुटुम्बों में जन-बल, बुद्धिबल, अर्थबल, प्रतिभा वैदुष्य आदि सभी उच्च महानुभावानुकूल सद्गुण विद्यमान थे। इस उत्तर की ओर अभिप्रयाण और अवस्थिति के प्रारम्भिक युग में एक दूसरे से मिलने की परिस्थिति में उनमें परस्पर समान भाव और सद्-व्यवहार था। जातीयता और आत्मीयता के भाव से अभि-प्रेरित होकर समस्त जातीय व्यवहारों में उनका सम सहयोग और भेदभावहीन वर्त्तन था। उस समय कुछ काल तक दक्षिण से भी हमारा व्यवहार-स्रोत चलता रहा और उत्तर में भी हम निस्सङ्कोच भाव से बिना भेद-बुद्धि के मिलते जुलते रहते। किन्तु धीरे धीरे हमारे जातीय जीवन का दाक्षिणात्य-स्रोत विच्छिन्न होगया।

हमारा पारस्परिक मौलिक भेद न होते हुए भी परिस्थितियों ने हमारे जाति–समाज को वर्गभेद की विविधरूपता और सङ्कुचितता में विभाजित कर दिया। इसमें कुछ कारण भी हो सकते हैं और प्रमुखतः वे हैं–आवागमन–साधनाभाव, विभिन्न सम्प्रदाय वा आजीविका-वृत्यनुसरण, अर्थाभाव, विभिन्न देश-काल–वातावरण-जन्य दैनिक जीवनचर्य्यादि में भेद, कतिपय निर्मूल धारणाएँ, जनश्रुतियाँ, विद्वेष-भावना वा अपरिचयादि। इसीलिये जो जहाँ अपनी आजीविकाओं में स्थित हो गया, उसके व्यवहार और जातीयता की सीमा अपने उसी क्षेत्र वा आस–पास के स्थित जातीय कुटुम्बों तक ही बँध गयी। इधर साम्प्रदायिक दीक्षाओं की विभिन्नताओं से भी वर्गभेद को पोषण मिला। ब्रज और आस-पास में स्थित श्रीगुसाईं जी के कुल एवं उनके आश्रितजनों ने अपने शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय का समुदाय एक पृथक् सा बना लिया। यद्यपि उस युग में जाति के अधिकांश समुदाय पर इस सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ा और क्रमशः आज तक पड़ता आ रहा है, तथा एतत्सम्प्रदायेतर सजातीय जनों के साथ भी उस समुदाय का परस्पर में सद्भाव रहा, तथापि कतिपय पारस्परिक विवाद की घटनाओं के फल स्वरूप और अनन्तर उनके विषय में विद्वेषपूर्ण भ्रामक धारणाओं वा जनश्रुतियों के आधार पर हुए विभेद ने और भी पुष्ट रूप धारण किया और हमारा पारस्परिक सद्भाव भी सम्प्रदायवाद की जटिलता में कटुता से आपूरित हो गया। इसी प्रकार उत्तरभारत, मध्य–भारत, राजस्थान आदि में भी विभिन्न कुटुम्ब माध्वगौड़ेश्वर, भागवत वैष्णव, स्मार्त्त आदि सम्प्रदायों में विभाजित होकर अपने-अपने समुदायों में—एक जातीयता-बन्धुता होते हुए भी–पृथकत्व की कल्पना करने लगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न कुटुम्ब आजीविकाओं के वश होकर विभिन्न देश-काल--वातावरण में रहने लगे और उनका कुटुम्ब अन्यान्य कुटुम्बों से विच्छिन्न होने के कारण उनकी सामाजिक रीति पद्धति, रहन--सहन, भोजन--पान, भाषा, शिक्षा--दीक्षा, आचार--विचार, प्रतिष्ठा एवं नैतिक प्रणाली में गहरा मतभेद दिखाई पड़ने लगा और एक प्रान्त के निवासी परस्पर गहरा भेद लेकर पृथक् पृथक् क्षेत्र में पनपने लगे। इनकी इस रहन--सहन वा सदाचारों की विभिन्नता वा न्यूनाधिक्य में उनके विभिन्न आर्थिक धरातलों का होना भी एक कारण हो सकता है। जो लोग साधन–सम्पन्न श्रीमन्त थे उनके सदाचार का दृष्टिकोण निम्न आर्थिक श्रेणी के लोगों से अधिक विकसित था।

† पंचद्राविड और तदन्तर्गत तैलङ्ग ब्राह्मणों की उत्पत्ति तथा परिचय के परिज्ञान के लिये देखो : 'जातिभास्कर'' (वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित)। ‡ जन तथा घर संख्या के आंकड़े शु० वै० वे० महासभा द्वारा आयोजित सं० २००० वि० की गणना के अनुसार दिये गये हैं।

इन समस्त और और कुछ ऐसे ही मिलते--जुलते कारणों की पृष्ठभूमि पर हमारे वर्गभेदों की सृष्टि हुई और गोस्वामी, गोकुलस्थ, मथुरास्थ, सागरस्थ, बीकानेरस्थ, टीकमगढ़स्थ आदि विभिन्न वर्ग भेद प्रचलित होगये जिनका समाज की उन्नति पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ा। किन्तु अब समय की परिस्थिति और उदार विचार ने इस भेद मत को दूर कर दिया है।

भारतवर्ष के उत्तर और दक्षिण के नैसर्गिक विभाजन के साथ-साथ उनमें परस्पर मौलिक सांस्कृतिक विभेद भी हैं। संस्कृति वा सभ्यता पर अधिकांश प्रभाव तत्तत्स्थानों की प्रकृतियों का पड़ता है, जहाँ वे उद्भव, प्रचार और पोषण प्राप्त करती हैं। हमारे वर्त्तमान उत्तरदेशस्थ और विशुद्ध दाक्षिणात्यों की गति विधि में देश–काल परिस्थिति के प्रभाव से एक गहरा अन्तर दृष्टिगत होता है। इसीलिये दक्षिण में बिखरी हुई हमारी समाज शाखाओं को सहज ही पहिचान और परिचय में लाना एक दुरूह असाध्य सी कल्पना हो जाती है। अतएव दाक्षिणात्य सजातीय अपरिचित समुदाय का परिचय और वस्तुस्थितिविश्लेषण बहु अर्थ-समय और श्रम–साध्य होने से सम्प्रति यहाँ नहीं किया जा रहा है और न, उत्तरदेशस्थ समुदाय की अपेक्षा वह उतना उपादेय और आवश्यक ही है। यथा समय दक्षिणस्थ सजातीय समुदाय का भी साधन-सुविधाओं के प्राप्त होने पर अन्वेषण और परिचय-प्रकाशन एवं वस्तुस्थिति-विश्लेषण किया जावेगा। यहाँ हम अपने जाति-समाज को विशुद्ध भौगोलिक दृष्टि-विन्दु से चार प्रान्तों में विभाजित करते हैं और जन-गणना परिचय-प्रदान भी वर्ग भेद पर आधारित न होकर जन--संख्या न्यूनाधिक्य पर आधारित गोत्रक्रम से करते हैं!

१—संयुक्तप्रान्त—[जनसंख्या ३२७—घर ६३]

यह प्रान्त दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—ब्रज और तदितर स्थल। ब्रज (जन-संख्या २२८—घर ५०) गोकुल, मथुरा, वृन्दावन, जतीपुरा, घाटा, कामवन, सेवर, नरी, प्रेम-सरोवर, ऊँचाग्राम आदि जातीय केन्द्रस्थल हैं। सं० १६२८ दि० में गोकुल ब्रज का जातीय केन्द्र था। जहाँ पर गोस्वामी श्री विट्ठल-नाथजी ने अनेक जातीय कुटुम्बों को दक्षिण भारत से लाकर अवस्थित किया किन्तु अब २–४ घरों के सिवा प्रायः उजड़ गया है—तत्स्थित जन बारह यत्र-तत्र जीविकावश बस गये हैं। यहाँ का जातीय सदाचार आचार–विचार की दृष्टि से अन्यान्य स्थानों की अपेक्षा अधिक ऊँचे धरातल पर है। गोस्वामी-वर्ग के शुद्धाचार, पवित्रता और महत्ता से तो सभी परिचित हैं। तथा कथित मथुरास्थ, गोकुलस्थ वर्गों पर भी उन्हीं का अधिकांश प्रभाव है। ब्रज और उसकी विभूतियों के पुनीत वातावरण में यहाँ का जीवन शुद्ध, सरस और सात्विक है। सभी सामान्यतः शुद्धाद्वैत-सम्प्रदाय-दीक्षित वैष्णव हैं। वृन्दावन का करञ्जी तथा पट्भ्रातृ-कुटुम्ब यद्यपि माध्व और गौड़ेश्वर-सम्प्रदायानुयायी है, तथापि अपनी सहज उदारता से पुष्टि-साम्प्रदायिक सदाचार–प्रणाली से भी उसका कोईविराग-भाव नहीं है और किसी प्रकार की साम्प्रदायिक प्रतिद्वन्दिता दृष्टिगत नहीं होती, जो श्लाघ्य है! यहाँ के जातीय-जनों में प्रायः संस्कृत-विद्वत्ता ही अधिकांश है, तथापि नवीन सन्तति आधुनिक अंग्रेजी-शिक्षा-कला आदि के परिज्ञान की ओर झुकी हुई है। संस्कृतज्ञ–समाज आधुनिकता के बहुत कम सम्पर्क में रहता है। फिर भी यहाँ के नवयुवकों में नवीन विचारधारा स्वसंस्कृति और सदाचारों के पोषण की भावना लेकर आगे बढ़ती जा रही है। प्रधानतः यहाँ की वृत्ति पौराणिक है—कर्मकाण्ड, पूजापाठ, कथा-वार्ता ही उनकी प्रमुख आजीविकाएँ हैं। वृन्दावन और मथुरा का भट्ट–वंश श्रीमद्भागवत की अपूर्व ब्रजभाषा–रसात्मक कथा–प्रवचन के लिये सर्वत्र लब्ध प्रतिष्ठ है। कतिपय कुटुम्ब परम्पराप्राप्त ग्राम्याजीविकोप भोगी भी हैं। कतिपय अपवादों को छोड़ कर सामान्यतः यहाँ की आर्थिक–श्रेणी 'सामान्य' कही जा सकती है। यहाँ की भाषा ब्रजभाषा है—जो जाति-भाषा कही जा सकती है। वेष भी धोती बगलबन्दी–उपरना– ब्रज वेष। कहना चाहिये कि जातीय वेषानुरूप है। इसके अतिरिक्त सङ्गीत का विशेष रूप से प्रचार है। अधिकांश जन अच्छे सङ्गीतज्ञ हैं। कुछ गोस्वामी और गोकुलस्थ–वर्गीय कुटुम्बों के अतिरिक्त– प्रायः सभी एक वर्ग के तथाकथित मथुरास्थ–वर्ग का समुदाय यहाँ पर है, जिसका विशेष सङ्गठन जयपुर प्रान्त से है। ब्रज में गोस्वामी, करञ्जी, षट्भ्रातृ, नेत, सिमरी, 'भदरसा, त्रिगृह, आत्रेय, रेही आदि गोत्री कुटुम्ब हैं, जो अधिकांश कृष्ण यजुर्वेदीय और कुछ ऋग्वेदीय हैं!

संयुक्तप्रान्त के दूसरे भाग (जन संख्या ६६—घर १३) में खुर्जा, कानपुर, बाँदा, लखनऊ, जहानाबाद, बनारस, मिर्जापुर, चंदौसी, बरेली, कालपी, चित्रकूट, दिल्ली, गोरखपुर, (कलकत्ता भी) आदि केन्द्र हैं। यहाँ के आचार--विचार पर--गोस्वामी और तत्सम्बन्धियों के अतिरिक्त—पूर्वी सदाचार का प्रभाव है, इसी प्रकार भाषा भी। वेषभूषा सामान्यतः आधुनिक है, यत्र-तत्र प्राचीन भी। प्रायः सभी शुद्धाद्वैत तथा स्मार्त भागवत वैष्णव है बरेली का अवोटी कुटुम्ब रामानुज सम्प्रदायानुयायी और सङ्गीत में पूर्ण निष्पन्न है। साधारणतः इतर जनों में पौराणिक, ज्योतिष–कर्मकाण्ड की वृत्ति है। आर्थिक स्थिति भी सामान्य है कुछ ग्राम्य-वृत्तिभोगी एवं शिष्य–सेवकाना वाले भी हैं। देशाचार का इन पर अधिक प्रभाव है। गोत्रों में गोस्वामी, षट्भ्रातृ, नेत, करञ्जी, सिमरी, आत्रेय, रेही अवोटी, महापात्र, द्रविड, बाजपेयी, आदि यजुर्वेदीय–ऋग्वेदीय कुटुम्ब विद्यमान हैं।

२—मध्यभारत—(जनसंख्या ३६६—घर ७०)

यह भी मध्यप्रान्त और मध्यभारतीय रियासतों के रूप में दो विभागों में विभाजित किया जा सकता है। मध्यप्रान्त (जनसंख्या १३३—घर १६) के जातीय केन्द्र सागर, बिलहरा, जबलपुर, नागपुर, रायपुर आदि हैं। इनमें सागर समस्त आनुषङ्गिक केन्द्रों का उद्भव-स्थल है, जिस पर इस वर्ग के समुदाय को 'सागरस्थ' संज्ञा दी जाती है। आचार–विचार के क्षेत्र में इस पर देशाचार का—विशेष कर महाराष्ट्रीय प्रभाव है। शुद्धाद्वैत सम्प्रदायी जन–वर्ग में जो आचार-विचार की सूक्ष्मताएँ हैं, उनका उतना प्रोज्ज्वल दर्शन हमें यहाँ नहीं मिलता। एक सामान्य आर्थिक–श्रेणी और यहाँ के देश-काल–परिस्थिति में पले जन-समूह से जितना सदाचार शक्य है, उतना यहाँ प्राप्त है और साधारण स्थिति वाले हमारे जाति–समाज के लिये यही सम्भव भी है। यहाँ प्रायः सभी वैष्णव वा शुद्धाद्वैत वैष्णव हैं–कुछ घरों में गणपति, शिव, आदि की आराधनाएं भी प्रचलित हैं। सागर का अवोटी कुटुम्ब रामानुज सम्प्रदायी और आचार्य–कुल है। यह प्रान्त शिक्षा की दृष्टि से वस्तुतः उन्नत है। अधिकांश व्यक्ति अंग्रेजी, हिन्दी शिक्षा-दीक्षित हैं। संस्कृत के भी कुछ विद्वान् अच्छे हैं। सागर-बिलहरा में कुछ लोग ग्राम्याधीश है। आर्थिक दृष्टि से भी गोस्वामी-वर्ग के अतिरिक्त यह प्रान्त उत्तम श्रेणी में रखा जा सकता है। हिन्दी साहित्य–काव्य प्रेमी तथा विज्ञान दर्शनवेत्ता भी कुछ लोग हैं। यहाँ की भाषा बुन्देलखण्डी हिन्दी है। कुछ लोग मराठी, तेलगु के भी ज्ञाता हैं। वेषभूषा नवीन आधुनिक है, अधिकांश महाराष्ट्रों का प्रभाव है।

मध्यभारत के दूसरे विभाग (जनसंख्या २६३–घर ५४) में लश्कर, दतिया, टीकमगढ़, रेवै, नयाकिल्ला मकसूदगढ़, इन्दौर भोपाल, अजयगढ़, विजावर, मैहर, गौरहार, बीबीपुर-बृसिंहपुर, दगधा, धनपुरी, आदि मध्य-भारतीय रियासतें रखी जा सकती हैं। संस्कृति सदाचार, आचार विचार आदि में यह विभाग सामान्यतः मध्यप्रान्तीय जनों से साम्य रखता है। तथापि कुछ सामूहिक विभिन्नताएँ हैं।

लश्कर केन्द्र मथुरा–वृन्दावन वर्ग की शाखा है। अतः वह सभी बातों में उनके समान है। यह राज्याश्रित पौराणिक चक्र-वर्ती कुटुम्ब है और साहित्य काव्य, सङ्गीत का यहाँ अच्छा प्रचार है। यहाँ के सभी नवयुवक आधुनिक उच्च शिक्षा-दीक्षित है।

टीकमगढ़ का अलग संगठन है। यहाँ का पौतकूर्चि दाऊजू कुटुम्ब-भट्टाचार्य राज्यगुरु नाम से प्रसिद्ध है। संस्कृत, हिन्दी, काव्य साहित्य का अच्छा प्रकार है—प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ संग्रह भी अच्छा है। यहाँ की यह विशेषता है कि सभी लोग राज्य की विविध नौकरियों में—उच्च पदों में सभी विभागों में आजीविका सम्पन्न हैं। अतः आर्थिक स्थिति उत्तम है। यहाँ का समुदाय वैष्णव है।

इसी प्रकार अजयगढ़ बुन्देलखण्ड का केन्द्र है और उसका संगठन भी एक स्वतन्त्र सा है, जिसमें सभी बुन्देलखण्डस्थ रियासतों के जातीय समूह का समावेश हो जाता है। यहाँ के सभी जन विविध रूप में राज्याश्रित हैं। शिक्षा अर्थ हीनता का प्रतिकूल प्रभाव सबसे अधिक बीबीपुर, बृसिंहपुरादि स्थल के जातीय जनों पर पड़ा है। फलतः उनके रहन-सहन अवैध से देखने में आते हैं। जातीय सदाचार के संस्कार उनमें बहुत थोड़े हैं, जिससे आज शताब्दियों से वे त्यक्त से समझे जाते रहे हैं। इसके अतिरिक्त इन सभी रियासतों के निवासी सजातीय जन तत्तत् रियासतों के नरेशों के आश्रित वा वेतन-भोगी कार्यकर्त्ता हैं। उनकी भाषा-भूषा, शिक्षा-दीक्षा आदि मध्यप्रान्तस्थों के समान है, जिस पर अधिकांश प्रभाव तत्तत रियासतों का है। यहाँ चक्रवर्ती, बाजपेयी, दीक्षित, पोतकूर्चि, नेत, षटभ्रातृ, करंजी, आत्रेय आदि गोत्रों के कुटुम्ब अवस्थित हैं, जो प्रायः ऋग्वेदीय हैं। साहित्य और काव्य की दृष्टि से भी यह विभाग महत्वपूर्ण है।

३-राजस्थान—(जनसंख्या ६५६–घर १२४)

इसे भी मारवाड़ और मेवाड़ दो विभागों में विभाजित किया जाता है। मारवाड़ (जनसंख्या ५७५—घर १०६) में बीकानेर, चापासेनी, किशनगढ़, जयपुर, महापुरा, बसई, मण्डालिया, नीमराना, अलवर, कोटा, ब्रजनगर, बालेर आदि केन्द्र परिगणित होते हैं। गोस्वामी वर्ग और तदनुवर्त्तियों के अतिरिक्त प्रायः सभी जातीय-केन्द्रों के आचार-विचार सदा-चारादि पर देशाचार का प्रभाव अधिक है। शिक्षा-दीक्षा में यह प्रान्त पर्य्याप्त सन्तोषजनक रूप में है, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी का प्रचार है। वेषभूषा भी राजस्थानी प्रभाव से अछूता नहीं है, तथापि ब्रजभाषा का प्रायः सर्वत्र ही प्रचार है।

राजस्थान के इस अंचल में बीकानेर का अपना निजी समूह है। हमारी जाति में बीकानेर के साथ ही यह एक गौरवपूर्ण विशेषता है कि वहाँ एक ही विशाल कुटुम्ब के ३००–४०० व्यक्ति एक ही स्थान पर अवस्थित हैं और उनके समस्त सम्बन्ध व्यवहारादि तदितर स्थानीय २-३ अन्य कुटुम्बों तक ही सीमित हैं और उनकी समस्त वर-कन्यादि की आवश्यकता पूर्ति अपने ही वर्ग में अच्छे रूप से हो जाती है। यही कारण है कि बीका-नेर का सम्बन्ध हमारी जाति के मथुरास्थ, सागरस्थ, गोकुल-स्थादि वर्ग से बहुत कम देखने में आता है। महापुरा, नीम-राना, नरी, ऊँचाग्राम आदि इस समुदाय से अधिक सम्बद्ध

है। यहाँ का प्रमुख बहुसंख्य ऋग्वेदीय द्रविड परिवार 'गोस्वामी, पद से परिचित है और यह 'गोस्वामी' इतने रूढ़ार्थ से में प्रयुक्त होने लगा है कि यहाँ का समस्त जातीय समुदाय-'द्रविड गोस्वामी' के अतिरिक्त षट्भ्रातृ, सिमरी, वाशिष्ठ आदि कुटुम्ब भी अपने आपको 'गोस्वामी' लिखता और बोधित किया जाता है। वस्तुतः यह 'गोस्वामी' पद सम्मानास्पद उपाधि है, जो केवल बीकानेर के द्रविड परिवार को, जिसकी शाखाएँ महापुरा में भी विस्तृत हैं, राज्य की ओर से राज्यगुरुत्व वा विविध आश्रयत्वेन प्रदत्त है। राज्य में इस सजातीय समुदाय की अद्यापि अच्छी प्रतिष्ठा है और प्रायः सभी महानुभाव शिक्षित-दीक्षित होकर राज्य की नौकरी वा राज्य-मन्त्र-शास्त्री, कर्म-काण्डी, राज्यवैद्य, ज्योतिषी, अध्यापक आदि आश्रय-रूप विविध प्रवृत्तियों में निरत हैं। सामान्यतः सभी शाक्त व स्मार्त्त और कतिपय कुटुम्ब शुद्धाद्वैत सम्प्रदायी वा वैष्णव भी हैं। बीकानेर राजस्थान-मारवाड़ के अन्तरङ्ग अंचल में अवस्थित रहने से यहाँ की सामाजिक गति विधियों पर राजस्थानी प्रभाव है। आर्थिक दृष्टि से भी इसे सामान्यतः उत्तम श्रेणी में रखा जा सकता है।

बीकानेर के अतिरिक्त इस मारवाड़-विभाग में आने वाले समुदायों में जयपुर का भी एक स्वतन्त्र संगठन है। यह सदाचार व्यवहारादि में मथुरा-वृन्दावन वर्ग से सम्बद्ध है। आर्थिक दृष्टि से इस प्रान्त की मध्यम श्रेणी है—विशेषकर राज्याश्रय, ग्राम्य वृत्ति तथा कुछ स्वतन्त्र सरकारी नौकरियाँ वा श्रमजीवी प्रवृत्तियाँ हैं। संस्कृत साहित्य, संगीत-काव्य की भी अच्छी प्रतिष्ठा है।

राजस्थान का तीसरा स्वतन्त्र संगठन कोटा केन्द्र है। कतिपय सागरस्थादि को छोड़ कर यहाँ का समस्त समूह गोस्वामी वर्ग और उनके आश्रित गोकुलस्थ वर्ग का है। कोटा प्रान्त में कुछ अपवादों को छोड़ कर सामान्यतः शिक्षा का अभाव है। फलतः आर्थिक अवस्था भी साधारण है।

कोटा के अतिरिक्त अन्यान्य राजस्थानी केन्द्र सामान्यतः आचार-विचार शिक्षा-दीक्षा, अर्थ आदि दृष्टि में सन्तोषजनक हैं। प्रायः सभी राज्याश्रित वा राज्यावृत्युपभोगी हैं। अधिकांश सभी शुद्धाद्वैत सम्प्रदायी हैं। हाँ, नीमराना का भद्रसा-व्रजिया कुटुम्ब माध्व-सम्प्रदायानुयायी और राज्य से ग्राम्य-वृत्ति आदि आश्रय-प्राप्त है। इस प्रान्त में गोस्वामी, द्राविड़ा, षट्भ्रातृ, वाशिष्ठ, सिमरी, देवर्षि पोचकूर्चि, नेत, रेही, भद्रसा, बागरोदी आदि गोत्रों के ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय कुटुम्ब विद्यमान हैं।

राजस्थान के दूसरे विभाग (जनसंख्या ८४—घर १८) में मेवाड़ का स्थान है। इसमें हैं, केवल दो केन्द्र—नाथद्वारा और काँकरोली। कहना नहीं होगा कि ये दोनों स्थान हमारी जाति के अन्यान्य जातीय साम्प्रदायिक पीठ, गृह आदि के समान ही शिरमौलि, शिरोभूषण और शिरोमणि है। लाखों वैष्णव जनता के जो आराध्य सर्वस्व निधि हैं उन आचार्य महानुभावों के ये पीठ-स्थान है। ये ही दो-एक ऐसे स्थान हैं, जिन्हें वृहद् राजस्थान के पूर्व शासनाधिकार प्राप्त थे, अतएव 'नरेश' कहलाने का गौरव और साम्प्रदायाचार्यत्व के साथ साथ नरेशात्वनुरूप गतिविधि का भी इन पर अधिक प्रभाव था। ये शुद्धाद्वैत-सम्प्रदाय के केन्द्रस्थल हैं। अतएव यहाँ के निवासी जातीय समुदाय का आचार-विचार सदाचार-शुद्धाद्वैत-सम्प्रदायानुरूप है। आर्थिक दृष्टि से भी गोस्वामियों के अतिरिक्त एक-दो अपवादों को छोड़ कर शेष सामान्य श्रेणी के हैं, क्यों कि प्रायः सभी श्रीमानों के आश्रित वा नौकरी आदि में नियुक्त हैं। हिन्दी, संस्कृत की सामान्य शिक्षा है। पीठों के सम्बन्ध से ही साहित्य-काव्य-कला का अच्छा प्रचार है। राजस्थान में स्थित होते हुए भी यहाँ देशाचार, वेषभूषा आदि का प्रभाव कम है। प्रायः ब्रजभाषा-भूषा का ही प्रचलन है। यहाँ गोस्वामी, करञ्जी, रेही, बागरोदी, द्राविड़ा, करंभा झाँझेय, बाजपेयी, देवर्षि, पोतकूर्चि, षट्भ्रातृ, नेत आदि यजुर्वेदीय-ऋग्वेदीय कुटुम्ब विद्यमान हैं।

४—गुजरात-(जनसंख्या ११८-घर १९)

गुजरात को भी बम्बई और काठियावाड़ दो विभागों में विभाजित किया जा रहा है। बम्बई प्रान्त (जनसंख्या ९२ घर १३) में बम्बई, नासिक, सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि केन्द्र आते हैं, जिनमें प्रमुखतः गोस्वामी वर्ग और उनके आश्रित वा स्वतन्त्र गोकुलस्थों का निवास है। कुछ मथुरास्थ भी हैं। अतएव उनके आचार-विचार-सदाचारादि उत्तम हैं और सभी शुद्धाद्वैत वैष्णव हैं। बम्बई का वृन्दावनस्थ एक करञ्जी कुटुम्ब गौड़ेश्वर-सम्प्रदायानुवर्ती है। शिक्षा और आर्थिक दृष्टि से उत्तम कोटि का सन्तोषजनक रूप कहा जा सकता है। संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी भाषा विज्ञान-शास्त्रों के ज्ञान के साथ साथ जिन लोगों में दाक्षिणात्य सम्बन्ध-व्यवहार है उनमें तेलगु, तामिल आदि का भी ज्ञान अच्छा है। आन्तरिक जीवन की गति-विधि एवं भाषा-भूषा आदि पर गुजरात का प्रभाव होते हुए भी वह ब्रज-भाषा-भूषा से सम्पन्न है। यह प्रान्त बम्बई, सूरत, अहमदाबाद आदि आधुनिक उन्नतिशील नगरों के सम्पर्क से आधुनिक तथा सामयिकता के प्रवाह के अनुकूल है। गोस्वामी करञ्जी, रेही, बागरोदी, गोष्ठीशाल आदि ऋग्वेद, यजुर्वेदीय कुटुम्ब इस प्रान्त में विद्यमान हैं।

गुजरात के दूसरे विभाग में है काठियावाड़ (जनसंख्या २६ घर ६) जिसमें पोरबन्दर, माण्डवी, द्वारका और जूनागढ़ परिगणित किये जाते हैं। यह प्रान्त प्रायः सभी दृष्टियों से बम्बई के ही समान है। यहाँ गुजराती भाषा-भूषा आदि का अधिक प्रभाव है। शिक्षा-दीक्षा सम्प्रदाय अर्थ आदि दृष्टियों से उत्तम है। यहाँ गोस्वामी करञ्जी, रेही, करम्भा आदि यजुः ऋग्वेदीय कुटुम्ब विद्यमान हैं।

ख. गोत्र-परिचय और वर्गीकरण—

१. भारद्वाज. [जनसंख्या ३४६: घर ५९]

[आङ्गिरस, बार्हस्पत्य भारद्वाज-त्रिप्रवर कृष्ण यजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

(i) खंभंपाटि (जनसंख्या १४० : घर २८)

गोस्वामी 卐 (श्रीवल्लभवंशवृक्ष)

यह परिवार श्री वल्लभवंशज 'गोस्वामी' उपपद से सम्बोधित है। आन्ध्रप्रांतीय कांकरवाड़ से इसका मूल उद्गम है। श्रीलक्ष्मण भट्ट सोमयाजी इस वंश के मूल पुरुष हैं। इनके वंश में सौ सोमयज्ञों की पूर्ति होने पर जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु का प्रादुर्भाव हुआ। लक्ष्मण भट्टजी और उनकी पत्नी इल्लमागारु सं० १५३० में उत्तर भारत में काशी यात्रा करने आये।

श्रीवल्लभाचार्य ने विद्याध्ययन कर शुद्धाद्वैत पुष्टिमार्ग की स्थापना की। काशी, अड़ैल और गोकुल में स्थायी निवास कर भारत की तीन बार परिक्रमा करते हुए शुद्धाद्वैत भक्ति-पुष्टिमार्ग का प्रचार किया। इनके कनिष्ठ पुत्र प्रभुचरण गुसांई श्रीविट्ठलनाथजी ने अपने आचार्य काल में सम्प्रदाय का विशेष प्रचार किया और सात भगवद्स्वरूपों और सात पुत्रों के रूप में सात पीठों की स्थापना की, जिनके वंशज आज भारत के विभिन्न प्रांतों में ब्रज, राजस्थान, गुर्जर, सौराष्ट्र, मध्यभारत आदि के नगरों में विद्यमान हैं।

मुगल साम्राज्य से लेकर आज तक राजन्य वर्ग के द्वारा इनके संस्थानों को सम्मान, जागीरें और राज्याश्रय समय-समय पर प्राप्त हुए हैं।

इस परिवार में तेलगु, ब्रज राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी आदि बोल-चाल की भाषाएँ प्रचलित हैं—ब्रजमण्डल प्रांतीय वेष, वैष्णव धर्म के प्रचार तथा प्राप्त राज्यवृत्तियों की आजीविकाएँ हैं। यह परिवार शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय का अनुगामी एवं आचार्य पद पर प्रतिष्ठित है। इसमें संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी भाषाओं के विद्वान् और विभिन्न कलाओं के अभिज्ञ, पोषक विद्यमान हैं। धर्माचार्य होने के कारण इनकी आर्थिक वैभव पूर्ण स्थिति है और लक्षावधि अनुयायी होने के कारण इन्हें देश में एक गौरव पूर्ण पद प्राप्त है। सामान्यतः उत्तरभारत में इसी वंश के आश्रय से सम्बन्धित होकर प्रायः शेष परिवारों की अवस्थिति हुई है, जिसका अधिकांश श्रेय श्रीवल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र श्रीविट्ठलनाथ जी को है।

शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय सिद्धान्त और भक्तिमार्ग के प्रतिष्ठाता होने के कारण इस वंश में मूलतः प्रत्येक पीठ में समर्थ विद्वान् होते आये हैं। महाप्रभु ने प्रस्थान चतुष्टय पर ग्रन्थ रचना कर अपने सम्प्रदाय को परिपुष्ट किया। उनके अनन्तर उनके दोनों पुत्र गोपीनाथजी, विट्ठलनाथजी तथा उनके सात पीठाधीश्वर पुत्रों ने मूल आचार्य के ग्रन्थों पर भाष्य, टिप्पणी, टीकाएँ लिख कर पुष्टिमार्गीय वाङ्मय को समृद्ध किया और स्वतन्त्र ग्रन्थों के प्रणयन द्वारा उसके आवश्यक अङ्गों की पूर्ति की।

मूल आचार्यों के अतिरिक्त विट्ठलनाथजी ने हिन्दी साहित्य में अष्टछाप की स्थापना कर उसे गौरवान्वित किया। उनके चतुर्थ पुत्र गोकुलनाथजी ने वार्ताओं द्वारा उसे प्रोज्जीवन दिया। इस वंश में हरिरायजी, योगी गोपेश्वरजी, दशदिगन्तविजयी पुरुषोत्तमजी आदि अनेक उद्भट विद्वान् हुए हैं। इन्हीं के प्रोत्साहन से जाति के अन्य वर्गों के विद्वानों ने भी साहित्य में अमूल्य रचनाएँ की। वर्तमान में प्रायः सभी गोस्वामी विद्वान और कलाप्रेमी हैं। समस्त पीठों में साहित्य-सङ्गीत-कलाओं का सुन्दर संकलन उपलब्ध होता है, जिनमें नाथद्वारा, कोटा, काँकरोली कामवन, सूरत, बम्बई आदि के संग्रह अन्तर्देशीय ख्याति प्राप्त हैं। यहाँ के प्रकाशित व संग्रहीत ग्रन्थ, साहित्य जगत् को एक आलोक प्रदान करते हैं।

(ii) नेत (जनसंख्या १८६ : घर २७)

अजयगढ़—मैहर + (क / १ पृष्ठ १)*

यह परिवार श्रीलक्ष्मणभट्ट जी के चतुर्थ आत्मज एवं श्रीवल्लभाचार्यजी के अनुज विश्वनाथजी की शाखा है। मूल ग्राम कांकरवाड़ ही है। ये अनुमानतः सोलहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्यप्रदेश के समुदाय के साथ आकर उत्तरभारत में बसे और बुन्देलाधिपति महाराजा छत्रसाल के वंशधरों के द्वारा राज्याश्रय पाकर अजयगढ़ मैहर में अवस्थित हुए। वहाँ उन्होंने अपने वैदुष्य से

卐 सम्पूर्ण परिचय के लिये देखो "श्रीवल्लभवंशवृक्ष" कांकरोली का इतिहास 'सम्प्रदाय कल्पद्रुम" "वार्ता साहित्य" वल्लभदिग्विजय

+ देखो : परमानन्द कृत 'राज्यकल्पद्रुम' *'उत्तरभारतीय आन्ध्र(तैलङ्ग)'—वं· वृक्ष, सङ्केत।

राज्याचार्य-धर्माधिष्ठाता पद प्राप्त किया और काव्य के द्वारा सम्मानित हुए। 卐

इस वंश में बुन्देलखंडी हिन्दी प्रचलित है। प्रान्तीय वेश के साथ ब्रजमण्डलीय वेषभूषा का भी प्रभाव है। राज्यवृत्ति के साथ स्वतन्त्र व्यवसाय इनकी आजीविका के साधन हैं। सभी वैष्णव धर्मानुयायी हैं। यह एक आश्चर्य है कि लक्ष्मण भट्ट की परम्परा में होते हुए भी वल्लभ वंश से यह पृथक ... सागरस्थ समुदाय के अन्तर्गत रहा। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रे... भाषाओं के पाण्डित्य के साथ पौरोहित्य और काव्य के इस ... में समर्थ विद्वान हैं। विश्वनाथ "कविराज" उनके अनुज रामचन्द्र 'वाणीपति', रेवारामजी, व्रजचन्द्रजी,' परमानन्दजी आदि संस्कृत, हिन्दी, काव्य के अच्छे विद्वान और ग्रन्थकार हुए हैं। ये सम्प्रति अजयगढ़, जबलपुर, जयपुर आदि में निवास करते हैं।

बाँदा–गौरहार (क/२ : पृष्ठ २)

प्राप्त वंशवृक्ष में केवल पाँच पीढ़ियों का ही उल्लेख है जिसमें मुरलीधरजी कवीश्वर से परम्परा चलती है, जो महाराज छत्रसाल द्वारा विशेष सम्मानित हुए। मूल पुरुष और मूलग्राम अज्ञात है। संभवतः यह कुटुम्ब सोलहवीं शताब्दी में मध्यप्रदेश के समुदाय के साथ ही उत्तर भारत में आकर बाँदा के नवाब गौरहार के राजा, ओरछा नरेशों के आश्रय में राजकवि रूप में सम्मानित और राजवृत्ति प्राप्त हुआ।

इसमें बुन्देलखण्डी हिन्दी, प्रान्तीय वेष और वैष्णवधर्म की दीक्षा प्रचलित है। संस्कृत भाषा के साथ हिन्दी कविता के पाण्डित्य के लिये यह ख्याति और आजीविका प्राप्त है। इसमें मुरलीधरजी, गिरिधरजी, गंगाधरजी, रमाधरजी (पीताम्बरजी) ... कवीश्वरों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में ये ...र, टीकमगढ़ आदि में निवास करते हैं।

सागर—हिण्डोरिया (क/३ : पृष्ठ २)

मूल पुरुष के नामोल्लेखरहित प्राप्त वंशवृत्त केवल आठ पीढ़ी का है। अतः मूलग्रामादि का परिज्ञान नहीं हो सका है। संभवतः यह कुटुम्ब भी मध्यप्रदेश के समुदाय के साथ ही सागर के आसपास किसी आश्रय और पौराणिकादि वृत्ति को लेकर बसा है।

यह भाषा, वेष, धर्म, शिक्षा आदि में प्रांतीय परिकर से साम्य रखता है। सम्प्रति इसके वंशधर सागर, कोटा, नाथद्वारा आदि में स्वतन्त्र वृत्तियों में स्थित है।

सागर–बिलहरा (क/४ : पृष्ठ ३)

मूलपुरुष नन्दकिशोरजी वर्तमान पीढ़ी से बारहवीं पीढ़ी पर हैं‡ मूल ग्राम अज्ञात है। तत्कालीन बिलहरा के राजाओं द्वारा विशिष्ट विद्वान् रूप में प्रदत्त आश्रय के साथ अवस्थिति मध्यप्रांतीय समुदाय के साथ ही रही।

यह भी शिक्षा संस्कृति आदि में मध्यप्रान्तीय समुदाय से सहयोग रखता है। हिन्दी, संस्कृत अंग्रेजी आदि में विद्वत्ता प्राप्त कर इस वंश ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। नन्दराम पुराणी, हरिभट्ट, रामकृष्ण शास्त्री, विट्ठल शास्त्री, रत्नगोपाल शास्त्री, श्रीरामनेत जनार्दन राव, केशव शास्त्री, आदि प्रसिद्ध विद्वान् और ज्योतिषी हुए हैं। वर्तमान में यह कुटुम्ब सागर बिलहरा, मिर्जापुर आदि में स्वतन्त्र वृत्ति के साथ निवास करता है।

बसई—मथुरा (क ५: पृष्ठ ४)

मूलपुरुष आज से ११ पीढ़ी ऊपर विद्यागुरु दीक्षितलालजी हैं। मूल ग्राम अज्ञात है। श्रीविट्ठलनाथजी द्वारा स्थापित कुटुम्बों में से यह भी एक है। गुसाईंजी का सतघरा नामक मथुरा का मूल निवास स्थान अद्यावधि एतद् वंशजों के अधिकार में है: जहाँ श्रीनाथजी की बैठक विद्यमान है।

इस पर ब्रजमण्डलीय भाषा, वेष, सदाचार, शिक्षा आदि का प्रभाव है। यह पौराणिक वृत्त्युपभोगी कुटुम्ब है। वेणीमाधवजी रमेश शास्त्री, श्रीकृष्णजी, शीघ्रकवि नन्दकिशोर शास्त्री आदि अच्छे विद्वान् और ग्रन्थाकार हुए हैं। वर्तमान में वंशधर बसई, मथुरा, जयपुर, बरेली आदि में हैं।

(iii) वाजपेयी (जनसंख्या २० : घर ४)

नयाकिल्ला–मकरन्दन गढ़ (ख : पृष्ठ ५)

वर्तमान पीढ़ी से छठी पीढ़ी पर मौक्तिक लाल (मण्डन कवि) से इस वंश की परम्परा दिखाई गयी है। मूल पुरुष और मूल ग्राम अज्ञात है मध्यप्रान्तीय सागरस्थ कुटुम्बों के साथ ही अवस्थिति समझना चाहिये। अपनी विद्वत्ता, काव्य प्रतिभा और पौराणिक वृत्ति के सम्बन्ध से उन्हें नयाकिल्ला, मकसूदनगढ़ बिजावर आदि में राज्याश्रय प्राप्त हुआ। भाषा, वेषभूषा, शिक्षा धर्म आदि में अपने प्रान्तीय समुदाय से सहयोग है। मण्डन कवि जयगोविन्दजी पुरुषोत्तमजी, देवानारायणजी आदि समर्थ विद्वान् और ग्रन्थकार हुए हैं। वर्त्तमान में ये दतिया बिजावर आदि में निवास करते हैं।

२. आत्रेय [जनसंख्या २६२ : घर ५८]

[आत्रेय, आर्चनानस, श्यावाश्व-त्रिप्रवरः कृष्णयजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

(i) द्राविड़ गोस्वामी△ (जन संख्या २०२ घर ४०)

बीकानेर (क (i) से क (iv) : पृष्ठ ६ से ६)

मूल पुरुष श्रीबेङ्कटेशजी हैं जो वर्त्तमान पीढ़ी से सोलहवीं पीढ़ी पर आते हैं। बेङ्कटेशजी के प्रपौत्र श्रीनिकेतनात्मज

卐 प्रकाशितवंशपरम्परा में कुछ संशोधन प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है— (i) छविनाथ जी के पौत्र, बलदेवात्मज जागेश्वरजी के पुत्र रघुनाथराव (जबलपुर) और उनके गणेश आदि दो पुत्र विद्यमान में छपने से रह गये हैं। (ii) इसी प्रकार कर्मचन्द्रजी के पुत्र गोविन्दजी के तीन पुत्र होने चाहिये-प्रथम जनार्दन द्वितीय नारायण, तृतीय बिहारीलाल। नारायणजी के कोई सन्तान नहीं। बिहारीलालजी के दो पुत्र रामानुज(अंधूजी)और गणेशजी टीकमगढ़में विद्यमान हैं। ये छपने से रहगये हैं। △देखो 'श्रीशिवार्चनचन्द्रिका'

‡ इनके द्वितीय पौत्र पद्माकरजी की परम्परा अशुद्ध रूप में प्रकाशित होगयी है—संशोधित रूप इस प्रकार है—

पद्माकरजी

- गोपीकान्तजी
  - रामकृष्णजी
    - बल्लभजी
      - गोकुलेशजी
        - रामकृष्णजी ०
    - विट्ठलशास्त्री
      - रत्नगोपालशास्त्री ०
      - छन्नूजी ०
      - केशवशास्त्री (मिर्जापुर)
  - श्रीवल्लभजी ०
  - हरिभट्ट
    - गोविन्दजी (गोद आये)
      - केशवशास्त्री (मिर्जापुर)
        - गोपीकान्तजी ❀
          - हरिकृष्ण ❀
          - नन्दकृष्ण ❀
          - श्रीकृष्ण ❀
          - बालकृष्ण ❀
        - गौरीकान्त ०
      - राधावल्लभजी
- बालमुकुन्दजी
  - नन्दराम पुराणीक
    - बलदेवप्रसादजी
      - श्रीरामजी ०(बिजावर)
      - उपेन्द्रजी ०
    - गोविन्दजी ०(गोद गये)
    - श्रीकृष्णजी
      - दादा भैया ०(टीकमगढ़)
- श्रीधरजी
  - रघुपतिजी
    - कृष्णाकिशोरजी ०
    - नारायणजी ०
  - बेंकटेश्वरजी ०
- उपेन्द्रजी ०
- सोमजी
  - लक्ष्मापतिजी ०
  - जुगलजी ०

+ अब ज्ञात हुआ है कि मौक्तिकलाल मण्डनकवि नहीं है मण्डनकवि उनसे ४ पीढ़ी ऊपर आते हैं, संशोधित परम्परा इस प्रकार है—

मण्डन कवि

- जयगोविन्दजी [कुमारमणि के समकालीन]
  - कल्याणरायजी
    - हरगोविन्दजी
      - मौक्तिकलालजी [इससे आगे प्रकाशित वंशवृक्ष]
- पुरुषोत्तमजी
  - लीलाधरजी
    - गिरिधारीजी ०

(प्रकाशित मौक्तिकलाल के द्वितीय पुत्र के रूप में पुरुषोत्तमजी की परम्परा न होकर उपरिलिखित होना चाहिये।)

श्रीनिवासजी उत्तरभारत में संभवतः सोलहवीं शताब्दी में शिव काञ्ची पाषांपट्ट से आकर काशी, चन्देरी में अवस्थित हुए। यहाँ के राजाओं ने इनके मन्त्रानुष्ठान से प्रभावित होकर राज मान्य रूप में आश्रय दिया। बाद में ये बीकानेर नरेश द्वारा गुरु पद पर प्रतिष्ठित हुए।

भाषा, वेष, रहन सहन राजस्थानी बीकानेर प्रान्तीयता से प्रभावित है। अधिकांश यह परम्परागत शाक्त दीक्षा दीक्षित हैं—मन्त्रानुष्ठान पौरोहित्य और स्वतन्त्र वृत्तियों पर अवलम्बित हैं। समरपुंगवजी, तिरुम्मलजी, श्रीनिकेतनजी, श्रीनिवासजी, जगन्निवासजी, जनार्दनजी, शिरोमणिजी आदि प्रकाण्ड विद्वान् तथा अनेक मन्त्र शास्त्र काव्य ग्रन्थों के रचयिता हुए हैं। हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी भाषाओं में वर्तमान वंशधर भी अच्छे विद्वान् हैं। सम्प्रति यह परिवार बीकानेर, महापुरा में अपनी राजवृत्ति तथा स्वतन्त्र आजीविकाओं का उपभोग करते हुए निवासित है।

(ii) कवीश्वर ▽ (जनसंख्या ३८ : घर ६)

बांदा (ख।१-२ : पृष्ठ १०-११)

इस परिवार के मूल पुरुष मधुकर भट्ट आज की पीढ़ी से १२ वीं पीढ़ी ऊपर हैं। यह वंश मध्यप्रान्तीय परिकर के साथ मध्यप्रदेश में गोदावरी जिले से आकर सोलहवीं शताब्दी में आकर बसा है और बांदा, अजयगढ़, दतिया, जयपुर राज्यों में अपने काव्य चमत्कार से सम्मानित हुआ।

इस पर प्रान्तीय बुन्देलखण्डी भाषा, वेष, रहन सहन आदि का प्रभाव है। स्मार्त वैष्णव दीक्षा इसे प्राप्त है। मोहन भट्ट, क्षेमनिधि,पद्माकर,मिहीलाल, अम्बुज गदाधर आदि प्रत्येक पीढ़ी में समर्थ कवीश्वर, जिन्होंने हिन्दी काव्य साहित्य में विशेष रचनाएँ की हैं, हुए हैं। संस्कृत और हिंदी भाषाओं के वतमान वंशधर विद्वान् हैं। सम्प्रति ये अजयगढ़, दतिया, जयपुर, रायपुर, जबलपुर आदि में राज्याश्रय तथा स्वतन्त्र वृत्तियों में निवास करते हैं।

(iii) वागरोदी (जनसंख्या ३६ : घर ५)

गोकुलस्थ (ग : पृष्ठ १२)

इसके मूल पुरुष यज्ञनारायण भट्ट वर्तमान पीढ़ी से सोलहवीं पीढ़ी ऊपर आते हैं। श्रीगुसाईं जी द्वारा गोकुल में स्थापित तथा आश्रित कुटुम्बों में यह भी एक है।

भाषा,वेषभूषा, सदाचार, शिक्षा आदि पर ब्रजमण्डल और शुद्धाद्वैत वैष्णव धर्म का प्रभाव है। वर्तमान समय में जयपुर, अलवर, बम्बई, ब्रजनगर, नाथद्वारा में यह कुटुम्ब विस्तृत है, जिसमें हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार है। इस वंश में बालकृष्णजी, गिरिधरजी (वैष्णवराज) व्रजनाथजी, गोकुलचन्द्रजी आदि समर्थ साम्प्रदायिक हिन्दी संस्कृत के विद्वान् हुए हैं।

(iv) आत्रेय (जनसंख्या ८ : घर २)

गोकुलस्थ (घ : पृष्ठ १२)

इसका वंशवृत्त तथा ऐतिह्य परिचय प्राप्त नहीं हुआ है, अतः विशेष प्रकाश नहीं डाला जा सका है। जतीपुरा, कोटा आदि में इसके वर्तमान वंशधर हैं। गोकुल में अवस्थित होकर श्रीगुसाईंजी के समय से परम्परा से गोस्वामियों के आश्रित रूप में है। तदनुसार शिक्षा दीक्षा, भाषा वेषभूषा आदि है।

(v) द्राविडा (जनसंख्या ८ : घर २)

गोकुलस्थ (ङ : पृष्ठ १२)

इस वंश के मूल पुरुष परशुराम भट्ट आज की पीढ़ी से दसवीं पीढ़ी पर आते हैं। मूल ग्राम अज्ञात है। यह कुटुम्ब भी श्रीगुसाईंजी के द्वारा गोकुल में उन्हीं के आश्रय में अवस्थित हुआ और गोस्वामी वंश की उपाध्याय वृत्ति दी गयी। भाषा, वेषभूषा, शिक्षा,कला,दीक्षा आदि पर उन्हीं का प्रभावहै। परशुराम भट्ट, बलराम भट्ट आदि अच्छे विद्वान् हुए हैं। सम्प्रति कोटा, नाथद्वारा में उनके वंशज आश्रित रूप में अवस्थित हैं। प्राप्त वंशवृत्त में केवल कोटा निवासी ही उल्लिखित हैं। नाथद्वारा की परम्परा उपलब्ध नहीं हुई है।

(vi) कठौडी ❋

गोकुलस्थ ❋

यह वंश अब लुप्त हो गया है—कोई परम्परा उपलब्ध नहीं हुई है। यह भी श्रीगुसाईंजी द्वारा स्थापित आश्रित कुटुम्ब है। अतः सभी दृष्टि से उस पर इनका प्रभाव है। रणछोड़ भट्ट आदि इस वंश में अच्छे संस्कृत काव्य के विद्वान् हुए हैं, जिन्हें राज्याश्रय भी प्राप्त था।

२. गौतम (जनसंख्या २३१ : घर ४०)

[आङ्गिरस, आयास्य, गौतम-त्रिप्रवर कृष्णयजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

(i) सिमरी (जनसंख्या १६७ : घर ३०)

रेवै❋ (क।१ : पृष्ठ १३)

मूल पुरुष रामकृष्णजी (तेजरामजी) के पिता नन्दनाथ दीक्षित सोमयाजी विद्यमान पीढ़ी से १० पीढ़ी ऊपर आते हैं। रामकृष्णजी के प्रथम पुत्र गोपिकेशजी का वंश नौहरा वालों का और पंचम पुत्र बलभद्र अध्वर्यु का रेवै वालों का है, जो मथुरा में यात्रार्थ आकर बसे और बल्लभकुल से संमानित हुए। मूल ग्राम दक्षिण "सिमरी" है। यह कुटुम्ब मध्यप्रान्तीय समुदाय के साथ सागर में अवस्थित हुआ और क्रमशः ओरछा, नौहरा, रेवै आदि में राज्याश्रित हुआ।

बुन्देलखण्डीय प्रान्तीय भाषा, वेषभूषा है—यह वैष्णव कुटुम्ब है। राज्याश्रय और पौराणिक वृत्ति मुख्य है। हिन्दी संस्कृत की शिक्षा प्राप्त है। बलभद्र अध्वर्यु, केशव, गोपेश्वरजी, यदुनाथजी, गिरिधर शास्त्री, रामकृष्ण भट्ट, गोपालराव आदि हिन्दी संस्कृत के अच्छे विद्वान् और कवि हुए हैं। वर्तमान में इसके वंशज रेवै, नौहरा, चित्रकूट, बीकानेर में हैं।

झिलाइया (का२ : पृष्ठ १३ अ.)

ये परम्पराएँ नन्दनाथ दीक्षितात्मज रामकृष्णजी के द्वितीय तृतीय चतुर्थ पुत्रों के वंशधरों में विभक्त हैं। यह मूलतः झिलाय में अवस्थित और राज्याश्रित होने से 'झिलाइया' कहलाया। अनन्तर जीवनात्मज रामकृष्णजी बीकानेर आ बसे और कुछ वंशज गोकुल जा बसे जहाँ से सिवाड़ वालेर में अवस्थित हुए।

सिवाड़, बीकानेर, अटेर आदि के वंशजों की भाषा, वेषभूषा, शिक्षा-दीक्षा आदि पर बीकानेर प्रांत का प्रभाव है और स्वतन्त्र वृत्तियों पर अवलम्बित है। नरी, ऊँचाग्राम ब्रजमण्डलीय भाषा वेषभूषादि से प्रभावित है और कृवि तथा पौराणिक वृत्ति पर निर्भर है। बालेर और वृन्दावन की शाखा मथुरा-वृन्दावन समुदाय से सम्बद्ध है। अतः सभी दृष्टि से उससे प्रभावित है। यह समग्र कुटुम्ब वैष्णव है। विशिष्ट विद्वानों का विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ है। सम्प्रति उपर्युक्त स्थानों में ये निवास करतेहैं।

(ii) चक्रवर्ती卐 (जनसंख्या २५ : घर ४)

लश्कर (ख : पृष्ठ १५)

इस वंश के मूल पुरुष विष्णु शर्मा हैं, जो वर्त्तमान पीढ़ी से पन्द्रहवीं पीढ़ी पर आते हैं और सप्त गोदावरीतीर के निवासी थे। बाद में विद्यानगर में आकर राज्याश्रित और सम्मानित हुए। अनन्तर ये काशी आ बसे। इनके प्रपौत्र माधव के आत्मज विष्णुदेव को कर्णाटक नरेश से 'कवि चक्रवर्ती' की उपाधि प्राप्त हुई जिस पर इनका वंश चक्रवर्ती नाम से विख्यात है। विष्णुदेव के तृतीय पुत्र माधवजी मथुरा आकर १६वीं शताब्दी में बसे।

इस कुटुम्ब की भाषा, वेषभूषा पर ब्रजमण्डल का प्रभाव है। मूलतः ये रामानुज सम्प्रदायानुयायी हैं। किन्तु ४-५ पीढ़ी से पुष्टि संप्रदाय के अनुयायी हो गये हैं। श्रीपुरुषोत्तमजी पुराणचक्रवर्ती सिन्धिया राज्य ग्वालियर में पौराणिक वृत्ति पर राज्याश्रित हुएहैं। यह संस्कृत साहित्य और श्रीमद्भागवत पुराण का विशेष विद्वान् रहा है। इस वंश में विष्णु शर्मा, यज्ञेश्वर, वाचिदेव, माधवजी (द्वि०) प्रपन्न मुरलीधरजी, श्रीकृष्णवल्लभजी, पुरुषोत्तमजी, श्रीनिवासजी, रामचन्द्रजी आदि उद्भट विद्वान् हुए हैं। वर्तमान में यह कुटुम्ब लश्कर में है और संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं में शिक्षित है। राज्याश्रित पौराणिक वृत्ति तथा स्वतन्त्र आजीविकाओं पर निर्भर है।

(iii) देवर्षि △ (जनसंख्या ३६ : घर ६)

जयपुर (ग: पृष्ठ १६)

इस वंश के मूल पुरुष पुरुषोत्तम गोस्वामी वर्त्तमान पीढ़ी से १२ वीं पीढ़ी ऊपर हैं। मूल ग्राम अज्ञात है। ये प्रारम्भ में प्रयाग में अवस्थित हुए, जहाँ इन्हें दिवरिखिया ग्राम प्राप्त होने से इनका उपपद 'दिवरिखिया' वा देवर्षि' कहलाया। प्रयाग से आकर यह वंश अपनी काव्य-कला-विद्वत्ता के आधार पर आमेर (वर्त्तमान जयपुर) में राज्याश्रित और सम्मानित हुआ।

इस पर राजस्थानी प्रान्तीय भाषा-वेष आदि का प्रभाव है। तथापि व्रज के जातीय समुदाय से सम्बद्ध है, ये वैष्णव हैं। कवि मण्डन, श्रीकृष्ण भट्ट कविकलानिधि, द्वारकानाथजी, व्रजपाल भट्ट, जगदीश भट्ट, वासुदेव भट्ट, रमानाथ शास्त्री आदि संस्कृत हिन्दी साहित्य के प्रखर विद्वान् हुए हैं। वर्त्तमान में यह कुटुम्ब जयपुर, नाथद्वारा में में राज्याश्रित तथा स्वतन्त्र वृत्तियों में संलग्न हैं।

४. श्रीवत्स [जनसंख्या १७० : घर ३०]

[भार्गव, च्यवन आप्नवान, और्व, जामदग्न्य पंचप्रवरः ऋग्वेद शाकल, आश्वलायन]

(i) पोतकूचि (जनसंख्या १५८ : घर २७)

शास्त्री वंश† (क/१(i)—(ii) : पृष्ठ १७—१८)

इस वंश के मूल पुरुष रुद्रणाचार्य विद्यमान पीढ़ी से १४ वीं पीढ़ी ऊपर हैं। राजमहेन्द्री जिला मूल ग्राम है। १६ वीं शताब्दी में दक्षिण भारत से आकर मध्य प्रदेश में गढ़ामण्डला में ये अवस्थित हुए। यहाँ पर तात्कालिक नरेशों द्वारा विद्वत्ता से सम्मानित होकर राज्याश्रय प्राप्त किया। इसके बाद सागर, बानपुर और दतिया में राज्यमान्य पण्डित रूप में क्रमशः अवस्थित हुए। यह वंश भागवत वैष्णव रहा है। शुद्धाद्वैत संप्रदाय के सहयोग के कारण पुष्टिमार्गीय है।

भाषा-वेषभूषा पर मध्य प्रांतीय प्रभाव है। शिक्षा की दृष्टि से संस्कृत हिन्दी का विशेष वैदुष्य इस कुल में रहा है। अतएव यह अध्ययनाध्यापनादि प्रवृत्ति के कारण 'शास्त्रीवंश' नाम से प्रख्यात है। पौराणिक वृत्ति से बुन्देलखण्ड के राज्यों

△ देखो : गदाधर कविकृत 'सभाविनोद' ❋ देखो : गोपकवि कृत 'रामचन्द्राभरण' 卐 देखो : "दानलीला" काव्य, △ देखो. ६. मथुरानाथ शास्त्रिकृत "साहित्य वैभवम्" †कुमारमणि कृत "रसिकरसाल" रसिकरंजन "भगन्माधुर्य कल्पद्रुम" श्रीकृष्ण शास्त्री कृत 'वंशावली' आदि

में इसे प्रश्रय मिला और कई राज्यों में गुरुसम्मान अधिगत हुआ। कण्ठमणिजी, हरिवल्लभजी, कुमारमणिजी, वासुदेवजी, भोजराज, केशवराज, विहारीलालजी, बालकृष्ण शास्त्री, श्रीकृष्ण शास्त्री, हरि शास्त्री आदि सभी परम्पराओं में अनेक शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के विद्वान ग्रंथकार और कवि हुए हैं। वर्त्तमान में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तीनों भाषाओं के सभी विद्वान् हैं, जो काँकरोली, नागपुर, रायपुर, भोपाल, रायपुर, सागर आदि में स्वतन्त्र वृत्तियों में संलग्न हैं।

दाऊजू–टीकमगढ़‡ (क/२ : पृष्ठ १६)

इस वंश के मूल पुरुष ब्रह्मदेव हैं, जिनकी परम्परा में शिवदेव से इसका विस्तार होता है, इनका मूल ग्राम विद्यमान पीढ़ी से ८ वीं पीढ़ी ऊपर आते हैं। इनका मूल ग्राम राजमहेन्द्री जिला है। यहाँ से आकर ये काशी और विन्ध्याचल में बसे, जहाँ बुन्देल नरेशों के सम्पर्क में आने पर अपने पौराणिक संस्कृत हिन्दी के वैदुष्य के प्रभाव से गुरु सम्मान प्राप्त कर ओरछा में राज्याश्रित हुए। ये भागवत वैष्णव हैं।

प्रान्तीय भाषा वेषभूषा का इन पर प्रभाव है। इस वंश में माधवदेव, दामोदरदेव, जयदेव, रामदेव, तेजदेव, रघुनाथ देव, जयदेव(द्वि.) आदि प्रतिष्ठित विद्वान, ग्रन्थकार, कवि हुए हैं। राज्य द्वारा भट्टाचार्य उपाधि से विभूषित होने का गौरव प्राप्त है। संप्रति संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा के साथ राज्याश्रय तथा स्वतन्त्र वृत्तियों पर निर्भर है। ये टीकमगढ़ में हैं।

(ii) भद्राश्व भदरपिया (जनसंख्या १२ : घर ३)

माध्व व्रजिया ऊँचाग्राम+ (ख : पृष्ठ २०)

इस वंश के मूल पुरुष भैरव दीक्षित हैं, जो वर्त्तमान पीढ़ी से १६ वीं पीढ़ी ऊपर आते हैं। मूलग्राम मदुरा है। नारायण भट्टजी दक्षिण भारत से ब्रजमण्डल ऊँचाग्राम में अवस्थित हुए और उन्होंने ब्रज के बहुत से लीला-स्थलों को प्रकट किया। अतएव 'महन्त–गोस्वामी' नाम से विख्यात हैं। शिष्य परम्परा एवं माध्व सम्प्रदाचार्यत्व इस वंश को प्राप्त है।

इसकी भाषा-वेषभूषा ब्रजमण्डलीय है। भट्ट भास्कर भैरव दीक्षित, रङ्गनाथजी, नारायण भट्ट, दामोदर भट्ट आदि भक्ति मार्ग के अच्छे विद्वान और ग्रन्थकार हुए हैं। सम्प्रति ये ऊँचाग्राम, नीमराना आदि में धार्मिक वृत्ति में स्थित हैं।

(iii) महापात्र (जनसंख्या १ : घर १)

गोकुलस्थ

इस वंश की परम्पराएँ अप्राप्त हैं। अतः मूल पुरुष वा मूल ग्राम अज्ञात है। यह कुटुम्ब श्रीविट्ठलनाथजी द्वारा गोकुल में आश्रित तथा अवस्थित किया गया। अन्तिम वंशधर कालपी में आज से कुछ वर्ष पूर्व विद्यमान थे। इस वंश में सुमतिनाथ एक अच्छे विद्वान् हुए हैं।

५. कौण्डिन्य (जनसंख्या १६६ : घर ३६)

[वाशिष्ठ, मैत्रावरुण, कौण्डिन्य-त्रिप्रवरः कृष्णयजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

(i) करञ्जी (जनसंख्या ११३ : घर २४)

वृन्दावन–मथुरा‡ (क/१ (i) (ii) : पृष्ठ २१)

मूल पुरुष गदाधर भट्टजी हैं, जो १५६० में उत्तरभारत में ब्रजमण्डल में गौडेश्वर चैतन्य—सम्प्रदाय के अनुगत होकर अवस्थित हुए। चैतन्य महाप्रभु को ये श्रीमद्भागवत सुनाया करते थे, जिनके सेव्य श्रीमदनमोहनजी और शिष्य परम्परा वृन्दावन में अद्यावधि हैं। इन्हीं की परम्परा में श्रीकृष्णजी–सुत लालजी से इस वंश का विस्तार है जो विद्यमान पीढ़ी से नवीं पीढ़ी पर हैं। इनका समय १८०० वि० मिला है। यह कुटुम्ब श्रीमद्भागवत के प्रवचन और पौराणिक वृत्ति के द्वारा ब्रज-मण्डल के भक्तिसम्प्रदाय में सम्मानित हुआ है। मूल ग्राम अज्ञात है।

भाषा, वेषभूषा ब्रजमण्डलीय और सम्प्रदाय का आचार परम्परा चैतन्य सम्प्रदाय से प्रभावित है। वर्त्तमान समय में अधिकांश वर्ग शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय से संबद्ध है। इस वंश में पुराण के अधिकांश अच्छे प्रवचनकार हुए हैं। संस्कृत हिन्दी शिक्षा और काव्य में दक्ष हैं। गदाधर भट्ट, वल्लभरसिक, रसिकोत्तंस, गोवर्द्धन भट्ट, नारायण भट्ट, दामोदर भट्ट, नन्दकुमारजी, गोविन्दवल्लभजी, मधुसूदन भट्ट पुराणभूषण आदि विद्वान् उल्लेखनीय हैं। वर्त्तमान समय में यह वंश वृन्दावन मथुरा में है, जो पौराणिक और स्वतन्त्र आजीविकाओं पर निर्भर है।

लालजी के प्रपौत्र माधवलालजी मन्नूलालजी के यहाँ संतान न होने से मातामह—षट्भ्रातृ (मथुरा) पक्ष से दत्तक आये हैं। तथापि यह शाखा अपने को षट्भ्रातृ ही कहती है। वंश परम्परा से करंजी में ही सम्मिलित होना चाहिये।

जहानाबाद–कानपुर卐 (क। २ : पृष्ठ २२)

मूल पुरुष श्री कृष्णजी सुत हरि भट्ट हैं, जो वर्त्तमान पीढ़ी से आठवीं पीढ़ी पर आते हैं। मूल ग्राम अज्ञात है। सागरस्थ समुदाय के साथ उत्तर भारत में यह परिवार अवस्थित हुआ। ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीविट्ठलनाथजी ने इनको पारिवारिक सम्मान प्रदान किया। कोड़ा जहानाबाद में निवास कर उन्होंने अपनी शिष्य परम्परा प्रचलित की। चित्रकूट दुर्ग से प्राप्त चतुर्भुजराय की सेवा और प्राचीन मन्दिर जहानाबाद में विद्यमान है।

पौराणिक वृत्ति, ज्योतिष आदि संस्कृत हिन्दी शिक्षा में यह कुटुम्ब दक्ष है। हरिभट्ट, पुण्डरीकाक्ष, देवकीनन्दन, दामोदर "दत्त" आदि अच्छे विद्वान् और ग्रन्थकार हुए हैं। अवध प्रान्तीय भाषा, वेषभूषा से अधिक प्रभावित और शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के ये अनुगामी हैं। वर्त्तमान समय में जहानाबाद कानपुर, जबलपुर आदि में ये पौराणिक तथा स्वतन्त्र वृत्तियों के साथ निवास करते हैं।

गोकुलस्थ (क। ३ : पृष्ठ २२ अ)

मूल पुरुष श्रीकृष्णजी विद्यमान पीढ़ी से १० वीं पीढ़ी ऊपर हैं, जो श्रीविट्ठलनाथजी के द्वारा गोकुल में दक्षिण भारत से लाये जाकर आश्रित और अवस्थित किये गये। मूल ग्राम अज्ञात है।

भाषा वेष भूषा सम्प्रदाय की दृष्टि से ये शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के अनुगत हैं। संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी शिक्षा द्वारा ये स्वतन्त्र वृत्तियां तथा आश्रित रूप में संलग्न हैं। गोवर्द्धनजी, रणछोड़जा, हरिकृष्णजी आदि सम्प्रदाय तथा विभिन्न विषयों के विद्वान् हुए हैं। वर्त्तमान में ये बम्बई, अहमदाबाद, वेट, नाथद्वारा आदि में निवास करते हैं।

(ii) वाशिष्ठ (जनसंख्या ४५ : घर १०)

बीकानेर भिलाइया (ख। १-२ : पृष्ठ २३)

इस वंश में ख। १ (बीकानेर भिलाइया) के मूल पुरुष दिवाकरजी विद्यमान पीढ़ी से सातवीं पीढ़ी ऊपर आते हैं और बीकानेर बाँदास्थ शाखा के श्रीकृष्णजी पाँचवीं पीढ़ी पर। अतएव मूल ग्राम, आगमन समय तथा अवस्थिति अज्ञात है।

भाषा, वेष भूषा, सदाचार में बीकानेर प्रान्तीय समुदाय से प्रभावित है। वर्तमान समय में संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी आदि की शिक्षा से स्वतन्त्र तथा पौरोहित्य वृत्ति से आजीवन है। सामान्यतः वैष्णव धर्म के अनुयायी हैं। सम्प्रति ये बीकानेर में है। दिवाकरजी, बल्लभजी, नगेन्द्रजी, बसन्तलालजी आदि विविध विषयों के विद्वान् हुए हैं।

(iii) दीक्षित (जनसंख्या ८ : घर २)

टीकमगढ़ (ग : पृष्ठ २३)

मूल पुरुष गिरिधरजी की कुछ पीढ़ी पर दामोदर दीक्षित से इस वंश का प्रस्तार है, जो वर्तमान पीढ़ी से नवीं पीढ़ी पर हैं। संभवतः सागरस्थ समुदाय के साथ आकर ये स्वतन्त्र वृत्तियों में अवस्थित हुए हैं। ओरछा राज्य में उन्हें विशिष्ट सम्मान और राज्याश्रय से आजीविका प्राप्त हुई। शिक्षा-दीक्षा, भाषा, वेष आदि में प्रांतीय प्रभाव है। वैष्णव हैं।

इस वंश में दामोदर दीक्षित, लालसाहब, पीताम्बरजी, गोवर्द्धनजी, सुन्दरलालजी आदि अच्छे विद्वान् तथा कवि हुए हैं। सम्प्रति ये टीकमगढ़ में हैं।

६. मुद्गल (जनसंख्या १२४ : घर २०)

[आङ्गिरस, भार्म्याश्व, मौद्गल्य-त्रिप्रवर : कृष्णयजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

६. ↑ षट्भ्रातृ–छभैया (पिट्टमंडलु)

मथुरा (१ : पृष्ठ २४)

मूल पुरुष विद्यमान पीढ़ी से ८ वीं पीढ़ी ऊपर श्रीकृष्णजी हैं, जिनके चार पुत्रों से इस वंश का विस्तार है। दक्षिण भारत से आकर यह कुटुम्ब ब्रजमण्डल में बाह-बटेश्वर में श्रीविट्ठल-नाथजी के समय में अवस्थित हुआ। तदनन्तर सिन्धिया राज्य से अपने वैदुष्य परंपण्डितराज उपाधि से सम्मानित होकर इन्हें राज्याश्रय प्राप्त हुआऔर जयपुर मथुरा में आकर स्थित हुए। इसी वंश में से ब्रजनाथजी सुत माधवलालजी कौण्डिन्य करंजी (वृन्दावन) में दत्तक गये हैं। मूल ग्राम अज्ञात है।

भाषा वेष भूषा सदाचार में वैष्णवता और ब्रजमण्डल का प्रभाव है। पौराणिक, पौरोहित्य, राज्याश्रय, संस्कृत हिन्दी में विद्वत्ता से यह वंश विशिष्ट है। बलरामजी, ब्रजभूषणजी, द्वारकानाथजी, मगनजी आदि संस्कृत साहित्य काव्य के अच्छे विद्वान् हुए हैं। वर्त्तमान में यह कुटुम्ब काँकरोली, मथुरा में स्वतन्त्र वृत्तियों में स्थित है।

खुर्जा-जयपुर (२ : पृष्ठ २४)

मूल पुरुष श्रीकृष्णजी के दो पुत्रों से वंश की शाखाएँ चलती हैं, जो ७ वीं पीढ़ी पर विद्यमान पीढ़ी से हैं। मूल ग्राम अज्ञात है। इनकी अवस्थिति अनूपशहर में यथा समय हुई है। संभवतः यह कुटुम्ब भी मथुरा के कुटुम्ब के साथ अवस्थित हुआ। भाषा वेष भूषा धर्म वृत्ति आदि में यह उसी से साम्य रखता है।

वर्त्तमान में ये लखनौ, खुर्जा, लश्कर, कामवन आदि में हिन्दी अंग्रेजी संगीत आदि शिक्षाओं की दक्षता के साथ स्वतंत्र वृत्तियों में स्थित है।

दग्धा (३।१–२ : पृष्ठ २५–२६)

मूल पुरुष काशीनाथजी वर्त्तमान पीढ़ी से १६ वीं पीढ़ी ऊपर आते हैं। इनके छः पुत्र गोविंद (गिट्टा), लंबोदर (लंबुक), योगेश्वर (जोगिया), तिघरा, गिरिधरन, भद्राक्ष (भरत) हुए। इसी कारण यह वंश 'षट्भ्रातृ (छभैया)' नाम से विख्यात हुआ। तत्कालीन यवन साम्राज्य के द्वारा इन्हें राज्य

‡ देखो : "प्रतापवंशार्णव" + देखो "ब्रजोत्सवचन्द्रिका" ‡ देखो : नाभाजी कृत "भक्तमाल" 卐 देखो : "चतुर्भुजराय प्रशस्ति" ↑ 'षट्भ्रातृ छभैया' संज्ञा के कारण पर विशेष प्रकाश इसी वंश के ३।१ की दग्धा शाखा के साथ आगे देखो।

सम्मान प्राप्त हुआ। गिट्टा, लम्बुक, जोगिया आदि नामों के अवटङ्कों से यह वंश १८ वीं शताब्दी तक सम्बोधित होता रहा है। सम्प्रति छभैया रूप में प्रख्यात है। यह वंश गोविंदजी (गिट्टा) की परम्परा है—शेष परंपराओं व अल्लों का परिचय सम्प्रति नहीं मिलता। संभवतः दूसरे षट्भ्रातृ कुटुम्ब इन्हीं परम्पराओं के हों। वैसे जुगिया (कौण्डिन्य) तिघरा-त्रिगृत (काश्यप), भद्राश्व-भद्रसिया (श्रीवत्स) स्वतन्त्र अल्ल भी हैं।

मूल ग्राम दक्षिण भारत में धर्मपुरी है। १६ वीं शताब्दी में मध्यप्रान्तीय समुदाय के साथ-मंडला,हटा, संकोलीग्राम में वैदुष्य से प्राप्त राज्याश्रय के साथ अवस्थित हुआ। अनन्तर दग्धा और वहाँ से अजयगढ़ तथा बुन्देलखण्डों के राज्यों एवं बीकानेर में ये आकर राज्याश्रित हुए।

दग्धा, अजयगढ़, शाखा पर बुन्देलखण्डी भाषा, वेष, भूषादि का प्रभाव है ये वैष्णव हैं। बीकानेर का परिकर सभी बातों में राजस्थानी से प्रभावित है। पौराणिक और संस्कृत हिन्दी के कई उद्भट कवि, विद्वान् नागनाथ, गोरेलाल (लाल-कवि), गङ्गाधरजी, कन्हैयालालजी, पन्नगेन्द्रजी आदि हुए हैं। वर्तमान में ये दग्धा, अजयगढ़, बीकानेर में हिन्दी, अंग्रेजी आदि शिक्षाओं में दक्ष स्वतन्त्र आजीविकाओं में संलग्न हैं।

७. कश्यप (जनसंख्या १२३-घर २४)

[काश्यप, आवत्सार, नैध्रुव-त्रिप्रवर : ऋग्वेदः आश्वलायन शाकल]

(i) रेही‡ (जनसंख्या १०१—घर १७)

गोकुलस्थ (क/१-२ : पृष्ठ २७-२८)

इस (क/१) वंश के मूल पुरुष नारायणैया हैं, जो वर्तमान पीढ़ी से २२ वीं पीढ़ी ऊपर आते हैं। मूलग्राम दक्षिण मदुरा है। नारायणैया के प्रपौत्र रघुनन्दन दक्षिण से श्रीविट्ठलनाथजी के आश्रय में आकर गोकुल में अवस्थित हुए। क/२ के मूलपुरुष श्रीकृष्णजी सुत गोकुलजी विद्यमान पीढ़ी से चौथी पीढ़ी ऊपर और क/३ (चित्रकूट) के मूल पुरुष कृष्णकिशोरजी तृतीय पीढ़ी ऊपर हैं। अतएव पूरा परिचय विदित न हो सका।

भाषा, वेषभूषा, धर्म शुद्धाद्वैत सम्प्रदायानुकूल व्रजमण्डल से प्रभावित है। संस्कृत तथा हिन्दी भाषा, काव्य, ग्रन्थ, रचनादि के पाण्डित्य में इसके कतिपय वंशधर विख्यात हुए हैं, जिनमें विष्णु अय्या, विष्णुस्वामी, जगन्नाथ पण्डितराज, विट्ठलनाथ, मनरञ्जन कवि, हरदेव, प्रवीण कवि, टीकमजी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में ये चंदौसी, कोटा, गोकुल, घाटा, काशी, नाथद्वारा, मण्डालिया, अहमदाबाद, मांडवी, चित्रकूट आदि में आश्रित और स्वतन्त्र आजीविकाओं में नियुक्त हैं।

(ii) त्रिगृह (जनसंख्या १५ : घर ५)

गोकुलस्थ (ख/१-२ : पृष्ठ २६-३०)

मूल पुरुष रामचन्द्र दीक्षित वर्तमान पीढ़ी से ११ पीढ़ी ऊपर हैं। इनके पुत्र हरिहर दीक्षित और उनके गणेश दीक्षित दक्षिण से आकर श्रीविट्ठलनाथजी के आश्रय में गोकुल में अवस्थित हुए।

भाषा, वेष भूषा, धर्म आदि में व्रजमण्डलीय एवं शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के अनुगत हैं। इस वंश में हरिहर दीक्षित, गणेश दीक्षित, गोविन्दरायजी, लालू भट्ट, गोवर्द्धनजी, बलदेवजी, मलभद्रजी आदि समर्थ विद्वान्, कवि और साम्प्रदायिक ग्रंथकार हुए हैं। वर्तमान समय में ये मथुरा, कोटा में निवास करते हैं और आश्रित तथा स्वतन्त्र वृत्तियों पर निर्भर हैं।

(iii करम्भा (जनसंख्या ५ : घर १)

गोकुलस्थ (ग : पृष्ठ ३०)

मूल पुरुष रामकृष्ण भट्ट वर्तमान पीढ़ी से छठी पीढ़ी ऊपर है। अतएव विशेष विवरण नहीं दिया जा सका है। संभवतः यह वंश भी श्रीविट्ठलनाथजी के आश्रय में अवस्थित हुआ है।

इस पर व्रजमण्डलीय भाषा, वेषभूषा और शुद्धाद्वैत वैष्णव सम्प्रदाय का प्रभाव है। अधिकांश यह वर्ग उपाध्याय वृत्ति से जीविका प्राप्त है। इस वंश में कृष्णचन्द्र भट्ट, पुरुषोत्तम भट्ट, रणछोड़जी आदि अच्छे विद्वान् हुए हैं। सम्प्रति नाथद्वारा में आश्रित रूप में निवासी है।

(iv) झाञ्झेय (जनसंख्या २ : घर १)

गोकुलस्थ (घ : पृष्ठ ३०)

इस कुटुम्ब का वंशवृत्त बहुत प्रयत्न करने पर भी अप्राप्त रहा है; अतएव कुछ प्रकाश नहीं डाला जा सका है। संभवतः श्रीविट्ठलनाथजी के ही आश्रित रूप में अवस्थित हुआ। वर्तमान में ये बम्बई में स्वतन्त्र वृत्ति में निवास करते हैं।

(v) मठपति ×

गोकुलस्थ×

यह वंश अब लुप्त है। श्रीगुसाईंजी के आश्रय में ही अवस्थिति हुई है। मठपति वा मठेश उप पद से चिन्तामणि जयगोपाल, श्रीनाथ, गोपीनाथ, लक्ष्मण भट्ट आदि संस्कृत साहित्य के समर्थ विद्वान् और शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के अच्छे ग्रन्थकार हुए है।

८. लोहित (जनसंख्या २४ : घर ३)

[वैश्वामित्र, अष्टक, लोहित—त्रिप्रवरः कृष्ण यजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

अवोटी

सागर-भोपाल (पृष्ठ ३१)

मूल पुरुष श्रीलक्ष्मणाचार्यजी विद्यमान पीढ़ी से ८ वीं पीढ़ी ऊपर हैं। मूल ग्राम पृथुतर ग्राम है। इन्हें कावेरी तट पर श्रीलक्ष्मण बालाजी की मूर्ति प्राप्त हुई। यह वंश १७ वीं शताब्दी में दक्षिण भारत से आकर जयपुर,मथुरा,धौलपुर,नरवर, सिरोंज (टोंक) में क्रमशः अवस्थित हुआ।

यह रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य रूप में सम्मानित और शिष्य परम्परा प्राप्त है। पौराणिक विद्वत्ता की विशेषता रही है। भाषा, वेष भूषा में व्रजमण्डलीय समुदाय से साम्य रखता है। लक्ष्मणाचार्य, रङ्गनाथजी, विट्ठलनाथजी, यदुनाथजी, श्रीनिवासाचार्य आदि समर्थ विद्वान हो गये हैं। सम्प्रति ये भोपाल-सागर में रहते हैं—संस्कृत, हिन्दी, संगीत, कलादि में ये निपुण हैं।

९. कौशिक (जनसंख्या ११ : घर १)

[वैश्वामित्र, देवरात, औदल—त्रिप्रवरः कृष्ण यजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

गाष्ठीशाल

गोकुलस्थ (पृष्ठ ३१)

इसका वंशवृक्ष भी उपलब्ध नहीं हुआ है, अतएव उनके ऐतिह्य परिचय पर प्रकाश नहीं डाला जा सका है। यह भी श्रीगुसाईंजी द्वारा अवस्थित होकर उन्हीं के आश्रय में उन्हीं के अनुरूप शिक्षा, भाषा सम्प्रदाय आदि में अनुगत हैं। घनश्याम भट्ट गोपाल सत्कवि आदि अच्छे ग्रंथकार हुए हैं। वर्तमान में ये अहमदाबाद में स्वतन्त्र जीविकाओं में स्थित हैं।

१०. हरतस (जनसंख्या १० : ४)

[आङ्गिरस, अम्बरीष, यौवनाश्व-त्रिप्रवरः कृष्ण यजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

(i) पालगुल्ला (जनसंख्या ५ : घर १)
(ii) मैडूर (जनसंख्या २ : घर १)
(iii) पेद्दीभोटला (जनसंख्या २ : घर १)
(iv) चिंतलपाटी(जनसंख्या १ : घर १)
} दाक्षिणात्य (पृष्ठ ३१)

ये दाक्षिणात्य कुटुम्ब वर्तमान शताब्दी में ही वल्लभवंशज गोस्वामियों के सम्बन्ध से कामवन, सूरत, नाथद्वारा में अवस्थित हुए हैं। वंशवृत्त अनुपलब्ध हैं, अतः विशेष विवरण नहीं दिया जा सका है। ये तत्तत्स्थानों के गोस्वामियों के आश्रय में हैं। इनके साहचर्य से समाज में तेलगु भाषा का प्रचार हुआ है। इनकी वेषभूषा अधिकांश दाक्षिणात्य और भाषा तेलगु, अंग्रेजी और साधारण हिन्दी है। चिंतलपाटी के० लक्ष्मीनारायणजी शास्त्री अच्छे विद्वान् थे, जो इन्हीं दिनों स्वर्गस्थ हुए हैं।

११. वाधुलस (जनसंख्या ३ : घर १)

[भार्गव, वैतहव्य, सावेतस-त्रिप्रवरः कृष्णयजुर्वेद तैत्तरीय आपस्तम्ब]

पञ्चनदी△.

गोकुलस्थ (पृष्ठ ३२)

सिद्ध लक्ष्मण सुत अल्लाड भट्ट वर्तमान पीढ़ी से १६ वीं पीढ़ी ऊपर मूल पुरुष हैं। वंशवृत्त संपूर्ण उपलब्ध नहीं हुआ है तथापि प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यथासमय प्रस्तुत किया गया है। यह भी श्रीविट्ठलनाथजी द्वारा उनके आश्रयमें अवस्थित हुआ है। पंचनद तीर्थ में गोपाल कृष्ण भगवन्मूर्ति प्राप्त होने पर य 'पञ्चनदी' कहलाये।

भाषा वेषभूषा व्रजमण्डलीय और सम्प्रदाय-दीक्षा शुद्धाद्वैत है। यह एक उद्भट विद्वत्कुल हुआ है। इसमें अल्लाडभट्ट, औभलभट्ट, माधव भट्ट, अल्लाड भट्ट (द्वि०) श्रीकृष्ण, मधुसूदन भट्ट, गोवर्द्धन (गट्टू लालाजी-" भारतमार्तण्ड") श्रीकृष्ण रससिन्धु आदि सम्प्रदाय के उत्कृष्ट विद्वान हुए हैं। वर्तमान समय में ये कोटा, मथुरा में आश्रय तथा स्वतन्त्र वृत्ति में स्थित हैं।

१२.............(जनसंख्या...:घर...)

[...... ....]

तैलङ्ग विल्लाट

देवप्रयाग ×

यह वंश श्रीवल्लाभाचार्य के समय से गढ़वाल-देवप्रयाग में बद्रीनारायण के पुरोहित रूप में अवस्थित है। इनके पास आचार्यचरण का वृत्तिपत्रक है। यह एक स्वतन्त्र कुटुम्ब है, जो अपने वैदुष्य और प्रतिभा के आधार पर स्वतन्त्र जीवी रहा है। कुछ समय पूर्व तक समाज के साथ अपरिचित होने से यह वंश अज्ञात सा रहा है और जातीय व्यवहारमें उत्तरभारतीय गोस्वामी, गोकुलस्थ आदि देशस्थ समुदाय से व्यापक नहीं हुआ है। तथापि प्राचीन महज्जर तथा सम्बन्ध पत्रों से इसके सम्बन्धों का उल्लेख 'तैलङ्ग विल्लाट' देवप्रयाग नाम से समाज के सभी परिकरों के साथ मिलता है। वर्तमान समय में चक्रधर जोषी और उनका परिकर देवप्रयाग में ज्योतिष और पौरोहित्य वृत्ति में स्वतन्त्र आजीविका प्राप्त है। विशेष परिचय अप्राप्त होने से सम्प्रति नहीं दिया जा सका है।

‡ देखो : रे. विट्ठलनाथ कृत " सम्प्रदाय कल्पद्रुम " △ देखो : पं० मधुसूदन कृत "वंशावली "

इस प्रकार प्रस्तुत गोत्र परिचय से सामुदायिक प्रभाव डालने वाले कुछ ऐतिह्य सूत्र निम्नलिखित रूप में और संकलित होते हैं—

(i) इन गोत्रों के अन्तर्गत ही कुछ विशिष्ट ग्रन्थकार तथा उनके जातीय सम्बन्धों का उल्लेख और जीवन चरित्र अद्यावधि ऐतिह्य सामग्री में उपलब्ध होता है। किन्तु प्रस्तुत वंशवृक्षों में वे समधिगत नहीं होते हैं। अतएव उन्हें अज्ञात वंश के रूप में तत्तत् गोत्रों के साथ इतिहास में सन्निविष्ट किया जायगा।

(ii) इसके अतिरिक्त दससेरी, परदेसियानेत आहारवारे, द्राविड़ा (गाडीवान् प्रसिद्ध), जुगियानेत नागल आदि अवटङ्कों का भी प्राचीन सामग्री में उल्लेख मिलता है।

(iii) इसी प्रकार वर्त्तमान जातीय केन्द्रों के अतिरिक्त आगरा, कालपी, जैसलमेर, टिकारी, नंड़ी नागल, प्रयाग, पटना, बटेश्वर, बीबीपुर, वृसिंहपुर, वूंदी, लिधौरा, शेरगढ़, हाथरस, चरखारी, अनूपशहर, कटारी, गुलिया, बतरोली, जोधपुर, दिल्ली, गुजरात मेहालार, टेहरी, ईसागढ़, झांसो, अटेर जैतपुर, हिंडोरिया, दादर, झिलाय, टोंक, गुजरोरा, सिवनी, चकरधा, प्रेमसरोवर, सेमरी, ओरछा, धनपुरी, नीमराना, काशी, गढ़ाकोटा, सतना, संभलपुर, चँदेरी, सिरोंज, आदि केन्द्रों का भी उल्लेख मिलता है, जहां कभी जातीय समुदाय वा व्यक्ति निवास करते थे।

(iv) इसके अतिरिक्त प्रयाग, बीबीपुर, वृसिंहपुर, कटारिया, गुलिया, टोंक महापुरा, नरीसेमरी, ऊंचाग्राम, चित्रकूट, दरधा, नीमराना, हिंडोरिया, जैतपुर आदि ग्रामों के कुटुम्ब तथा तत्संसर्गी अमुक व्यक्तियोंका अव्यवहार्य वा त्याज्य रूपमें प्राचीन महजरों में उल्लेख मिलता है। संभवत: इसके कारण वैयक्तिक चरित्रहीनता अतएव देशस्थ-सम्बन्ध और सदाचार–विभिन्नता, यातायात साधनाभाव जन्य अपरिचितता, पारस्पारिक वर्गभेद (तड़) जनित द्वेष वा सङ्कुचितता आदि रहे होंगे।

(v) इसी का परिणाम था कि मोटे रूप में हमारा समाज गोस्वामी (गोकुलस्थ), मथुरा, वृन्दावन, जयपुर, (मथुरास्थ) सागर बुन्देलखण्ड (सागरस्थ), बीकानेर, महापुरा (बीकानेरस्थ) दाक्षिणात्य, तैलङ्ग–विल्लाट तथा अव्यवहार्य वा त्याज्य आदि अनेक समुदायों में विभक्त होगया और तदन्तर्गत भी अनेक अवान्त भेद (तड़) कल्पित कर ली गयीं। इन विभिन्न वर्गों में अनेक पंचायतें रहीं, जो अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति स्थितिस्थापकता एव भुक्तभोगिता के लिये अपने परिकरों में प्रायश्चित वा अमुक-अमुक दण्ड विधान का अनुशासन रखती थीं। यह सब होते हुए भी सभी समुदाय वा अवान्तर वर्गभेद आज से १०० वर्ष पूर्व तक पारस्परिक कन्यादान-प्रदान एवं व्यवहार न्यूनाधिक रूप में करते रहे हैं। इसके बाद ही वर्गभेद की विभीषिका समाज में पनपी, जो आज समय के प्रभाव और आवश्यकताओं के व्यापक दृष्टिकोण एव जातीय मानवता के भाव के सम्मुख मुरझा गयी। हमारे विभिन्न वर्ग मूलत: अभिन्न हैं। यही कारण है कि भारद्वाज, आत्रेय, श्रीवत्स, कौण्डिन्य आदि गोत्रों में गोस्वामी, मथुरास्थ, सागरस्थ, बीकानेरस्थ, गोकुलस्थ आदि सभी परिकरों के अवटङ्क सन्निविष्ट होते हैं। अजयगढ़ का नेत कुटुम्ब तो श्रीलक्ष्मणभट्टजी का वंशज ही है। इसी प्रकार कौण्डिन्य–करजी कुटुम्ब सागरस्थ, मथुरास्थ और गोकुलस्थ सभी में मिलता है। हमारे अवान्तर वर्गभेद भी मूलत: अभिन्न हैं। उदाहरणार्थ-भारद्वाजनेत (सागरस्थ, मथुरास्थ) गौतम-सिमरी, (सागरस्थ, बीकानेरस्थ, मथुरास्थ), श्रीवत्स-भद्राश्व (सागरस्थ, बीकानेरस्थ,, कौण्डिन्य–करजी (सागरस्थ, मथुरास्थ) मुद्गल–छभैया (मथुरास्थ, बीकानेरस्थ सागरस्थ) आदि भी समानरूपेण प्राप्त हैं। इन सब वर्गभेदों में भी संप्रदायभेद है किंतु वह व्यवहार में कभी अवरोधक नहीं रहा है।

(vi) हमारे जातीय साहित्य का विहङ्गम अवलोकन करने से विदित होगा कि हमारे समाज की सर्वतोमुखी प्रतिभा, सार्वत्रिक वर्च्चस्व और सार्वभौम समादर था। भारतीय संस्कृति के उत्थान–युग में ज्ञान–कर्म–भक्ति की त्रिवेणी धारा में हमने अवगाहन ही नहीं किया, अपितु उसे अनुपल गतिशील रखने में भगीरथ प्रयत्न भी किया। हमारे समाज में किसी सम्प्रदाय वा शाखा विशेष के ही आचार्य वा अनुगामी नहीं हुए किंतु वैष्णवधर्म की समस्त धाराएँ, शैव, शाक्त, स्मार्त आदि विविध निर्गुण–सगुण आराधनाएँ हमारे आचार्यत्व वा नेतृत्व से प्रोज्जीवित और प्रवर्त्तित थीं। पुष्टिमार्ग, माध्व, गौडेश्वर, रामानुज निम्बार्क आदि वैष्णव भागवत सम्प्रदाय तथा अन्य शाखाएँ स्पष्टत: हमारे वैदुष्य–बल और सांस्कृतिक संजीविनी शक्ति से अनुप्राणित हैं। सामान्य जनता से लेकर बड़े बड़े भारतीय अभारतीय श्रीमन्त-राजन्य वर्ग हमारे आचार्यों की शिष्य परंपरा में आते हैं। मुगलनरेश तदनुगामी नवाब, ठाकुर आदि के साथ तात्कालिक एवं परंपरागत अनेक देशी राज्य अद्यावधि हमारे धर्माचार्यत्व से अनुग्रहीत हैं। अजयगढ़, मैहर, पन्ना, छतरपुर, रीवां, बांदा, गौरहार, ओरछा, सागर, बिलहरा, बिजावर, दतिया, नयाकिला, काशी, चंदेरी, बीकानेर, जयपुर, झिलाय, सिवाड़, टोंक, विजानगर, कर्नाटक, सिंधिया, गढ़ामण्डला, बानपुर, विन्ध्याचल, अलवर, नीमराना, बाह, दरधा, धौलपुर, सिरोज, नरवर, भोपाल, कोटा, बूंदी, जोधपुर, जैसलमेर, इन्दौर, उदयपुर आदि शत शत देशी तथा भारतीयेतर राज्यों और श्रीमन्त, श्रेष्ठिवर्ग प्रभृति में हमारे समाज को गुरुपद धर्माधिष्ठातृत्व, पौरोहित्य, पौराणिकत्व, मन्त्रानुष्ठातृत्व राज्यपण्डित, शास्त्रीत्व, इत्यादि का सम्मान मिला। यह सम्मान राज्याश्रय, जागीरें, चरणोदक, नियमित आर्थिक वृत्ति, ग्रामवृत्ति, विशिष्ट उपाधि प्राप्ति, राज परंपरारूप उपचार आदि से लेकर कनकाभिषेक तक प्राप्त होता रहा है। यह सम्मान समाज के प्रत्येक वर्ग को न्यूनाधिक रूप में मिला है। समाज का अधिकांश वर्ग धर्मप्रचार में ही प्रवृत्त हुआ है और वह उसके वैदुष्यबल से संग्रथित होकर अखिल भारतीय व्यापक प्रभाव का कारण हुआ। आज समाज के सभी वर्गों की, न्यूनाधिक रूप में, शिष्य परंपराओं में सहस्र सहस्र लक्ष–लक्ष अनुयायी विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त हमारी आचार–परंपरा, सांप्रदायिक पद्धतियां, धार्मिक सांस्कृतिक भाषा, वेषभूषा, कला साहित्य आदि अन्य संप्रदायों एवं वर्गों को भी प्रभावित करती रहीं हैं। इस दिशा में हम दूसरों से भी प्रभावित हुए हैं।

(vii) धर्मोपदेश वा धर्माचार्यत्व के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट विद्या एवं कलाओं के गहन ज्ञान तथा चत्कृति के कारण भी हमें विविध राज्यों एवं स्थलों में आश्रय और सम्मान मिला। कवि पौराणिक, प्रवक्ता,, ज्योतिषी, वैद्य, कर्मकांडी, मन्त्रानुष्ठाता, पुरोहित, संगीत, चित्र, वाद्य, साहित्यकार आदि रूपों में–तत्तद् कलाओं के ज्ञान तथा तद्विषयक ग्रन्थ–निर्माण में हमारी अबाध गति थी। इस सम्बन्ध से हम अटूट श्रीसम्पन्नता के साथ बड़े–बड़े नरेशों से पूजित और समादृत हुए।

हमारे श्रीवल्लभाचार्यचरणने शुद्धाद्वैत, पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक होकर लक्ष–लक्ष दैवी जीवों का उद्धार किया। उन्हें भक्तिकाव्य साहित्य की अविरल सुधाकल्लोलिनी में निमग्न कर रसानन्द स्वरूप शब्द ब्रह्म में तल्लीन कराने का श्रेय है। सूर–परमानन्द सरीखे भावुक महानुभावों को शरण में लेकर उनकी काव्य–वीणा द्वारा समस्त जीव जगत् को अनुप्राणित करना उन्हीं की दिव्य प्रेरणा का फल है। महाप्रभु की इस बीज रूप प्रेरणा को ही गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजी ने अष्टछाप–स्थापना के रूप में पल्लवित, पुष्पित और फलित किया। आज अष्टछाप हिन्दी–साहित्य की आधारशिला है। उन्हीं की काव्यधारा का अनुगमन उनके परवर्त्ती कवियों ने किया। सारा भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल अपने पथनिर्माण में उनसे आलोक रेखाएँ लेता रहा है। अष्टछाप के बाद श्रीगुसाईंजी तथा श्रीगोकुलनाथजी ने वार्ताओं द्वारा हिन्दी–गद्य की एक शैली को परिस्कृत रूप दिया, जिसके आधार पर आज की राष्ट्रभाषा हिन्दी का वर्च्चस्व सिद्ध होता है। इस प्रकार हमारे आचार्य जहाँ हिन्दी–गद्य–पद्य के मूल अधिष्ठाता हैं, वहां वेणीमाधव, मण्डन कवि, पद्माकर, श्रीकृष्णभट्ट कविकलानिधि, कुमारमणि, नारायण भट्ट, गदाधर भट्ट, दत्त कवि, लालसाहब, लाल कवि, प्रवीण कवि, मनरंजन कवि आदि अगणित विमल विभूतियाँ भक्ति–रीति-अलङ्कार–काव्यादि के निर्माण एवं हिन्दी गद्य-काव्य साहित्य को संजीवन देने वाली हैं।❀

संस्कृत साहित्य तो हमारा गौरव और प्राण है और उसके षट्शास्त्रों में हमारा अगाध पाण्डित्य रहा है। स्वयं श्रीमहाप्रभु ने ब्रह्मसूत्र पर भाष्य किया और श्रीमद्भगवद्गीता पर व्याख्या, श्रीमद्भागवत पर सुबोधिनी टीका, उपनिषदों की मीमांसा आदि कर संस्कृत वाङ्मय की संपूर्ण समृद्धि के साथ साथ अपने प्रकाण्ड वैदुष्य का परिचय दिया। उनके परवर्ती श्रीप्रभुचरण तथा तद्वंशज आचार्यों ने नवीन ग्रन्थरचना के साथ साथ अपने पूर्वजों के ग्रन्थों तथा वेद-उपनिषदादि पर विवृतियां, टिप्पणी, निबन्ध, वाद, निर्णय, टीका, भाष्य, चंपू, नाटक तथा स्फुट स्तोत्र, काव्यादि का निर्माण किया। श्रीवल्लभाचार्य, श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगोकुलनाथजी, श्रीहरिरायजी, श्रीपुरुषोत्तमजी, विष्णु स्वामी, जगन्नाथ पंडितराज, भारतमार्त्तण्ड गट्टूलालाजी आदि हमारे ही समाज की समर्थ प्रतिभाशाली विभूतियाँ हैं।

(viii) जहाँ तक भाषा संस्कृति और वेषभूषा का सम्बन्ध है, हमारे समाज का दक्षिण से लेकर उत्तर भारत तक व्यापक प्रस्तार और प्रभाव रहा। हमने सबका समन्वय किया और सब को प्रभावित भी हिन्दी, ब्रज, बुन्देलखण्डी, अवधी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, गुजराती, सौराष्ट्री, महाराष्ट्री, तेलगु, तामिल अंग्रेजी, उर्दू आदि भारत की समग्र भाषाएँ हमारी अपनी बोलचाल और परिज्ञान की भाषाएँ रही हैं। इसी प्रकार सम्पूर्ण भारत में बिखरे हुए होने के कारण हमारी जाति में विविध प्रांतीय वेषभूषा, रहन सहन के ढङ्ग, संस्कार और सामाजिक रीति पद्धतियां मिलेंगी।

दक्षिण तो हमारा उद्गम ही है। अतएव न्यूनाधिक रूप में सभी वर्गों में आज भी दाक्षिणात्य संस्कृति की झलक है। विवाह यज्ञोपवीत आदि मांगलिक अवसरों पर कुछ विशिष्ट लौकिक और कौटुम्बिक परम्पराएँ हमारे मूल स्वरूप की स्मृति दिलाती हैं। अटलपूमा, इन्द्रवन्या, उक्कर, कुरू कुट्टू, तलंताट, दलम, पट्टू, पीतांबली, प्रोलू, मोटालू, षष्ठिपंडगु, शकुल,

❀ आन्ध्रजातीय ग्रन्थकारों की तालिका परिशिष्ट में यथास्थान दी जा रही है।

शकुनपिष्ट सरीखे शब्द और उनसे निर्दिष्ट जातीय कुलाचार प्रायः दाक्षिणात्य संस्कृति के ही अवशेष हैं । इसके अतिरिक्त उत्तर भारतीय प्रांतों में से हमारी संस्कृति पर गुजरात,राजस्थान ब्रज और बुन्देलखंड का अधिक प्रभाव रहा है। पुष्टिमार्गीय सेवा-पद्धति में प्रयुक्त बहुत सी कलाएँ, भाषा, सामग्री, वस्त्र, आभूषण, संगीतप्रणाली, वस्तुएँ, साजसज्जा और वैभव मुगलकाल से लेकर आज तक अनेक परिवर्त्तित देशकाल के प्रभाव की रेखाओं से युक्त हैं। हमारे प्रस्तावों की पोशाक, कुलदेव की शाखा, चित्र, मूर्ति, परम्पराएँ गीत आदि पर विविध परिस्थितियों की छाप है और इन सब के अन्तराल में छिपी हुई धुंधली स्मृतियों के मूल में हमारा सांस्कृतिक इतिहास छिपा हुआ है ।

ग. ऐतिह्य सामग्री का आधार—

हमारे जातीय जीवन की यह रूपरेखा ऐतिह्य सामग्री के कुछ मोटे-मोटे सूत्र हैं। इतिवृत्त के पोषक तत्वों की जैसे-जैसे गवेषणा होगी—साधन-सामग्रियों की उपलब्धि की जैसे-जैसे सुविधाएँ मिलती जायंगी, इनकी विशद् व्याख्या की जा सकेगी और तभी हमारा जातीय इतिहास सांगोपांग रूप में सम्पूर्ण हो सकेगा और ऐसी-ऐसी अमूल्य निधियां प्रकाश में आयेंगी जो सांस्कृतिक एवं ऐतिह्य जगत् में अद्यावधि अविदित हैं । तथापि संप्रति हमने प्रस्तुत जाति के इतिहास-संकलन के विषय में उत्तर भारत में अवस्थिति के समय से अद्यावधि जिस प्रकार प्रकाश डाला है, उसकी ऐतिह्य सामग्री का आधार यह है—

क. चरित्र चित्रणात्मक ग्रन्थः-श्रीवल्लभाचार्य और उनके वंशजों की जीवनियां—सम्प्रदायप्रदीप, ब्रजभाषा वार्तासाहित्य, वल्लभदिग्विजय, श्रीवल्लभवंशवृत्त, कल्पवृक्ष (हस्तलिखित तथा मुद्रित) आदि ।

ख. पारिवारिक वंशावली और ग्रन्थोद्धरणः—सम्प्रदायकल्पद्रुम, काँकरोली का इतिहास, परमानन्द कृत राज्यकल्पद्रुम, बीकानेर-आत्रेय-वंशावली (दिव्यादर्श आश्विन, कार्तिक ९८वि०) गदाधर कवि कृत सभाविनोद, गोपकृत रामचन्द्राभरण, दानलीला काव्य, साहित्यवैभव, श्रीकृष्णशास्त्री कृत शास्त्री-वंशावली, भगवन्माधुर्यकल्पद्रुम, केशव शास्त्री कृत बिहारी-वंश वर्णन, प्रतापवंशार्णव, ब्रजोत्सवचन्द्रिका, नाभादास कृत भक्तमाल, चतुर्भुजरायप्रशस्ति, मधुसूदन वंशावली आदि ।

ग. सामूहिक परिचयात्मक ग्रन्थः—इस प्रकार की सामग्री का तो अभाव ही रहा है । तथापि कुछ स्फुट सामग्री से पारस्परिक सम्बन्धों का परिचय विशाल रूप में मिलता है, जो इस प्रकार प्राप्त हुई है—

१. गोत्र (संबंध) विषयक—मथुरेश पुस्तकालय, विद्याविभाग काँकरोली ब० पु० सं० $\frac{13}{1}$। इसका समय १८५० के लगभग है ('दिव्यादर्श' 'जातीय इतिहास के कुछ सूत्र' शीर्षक लेख)

२. क. श्रीगौरगोपालजी वृन्दावन द्वारा "मथुरास्थ सम्बन्ध विच्छेद पर एक दृष्टि" शीर्षक के अन्तर्गत 'प्राचीन महज्जर' ('दिव्यादर्श', माघ-फाल्गुन २००१ वि०) इसका समय पौष शुक्ल १५ । १८५० वि० है ।

३. मुद्रित (लिथो) सं० १९३९ में प्रकाशित "सम्बन्ध नाममाला" पत्र, गो० श्रीगोविन्दलालजी म० की आज्ञा से सिमरी वशीधरजी नरी द्वारा तैयार किया गया ।

४—एक प्राचीन पत्र—गोत्र, जातीय केन्द्र नामावली—

क. नित्यानन्दजी भट्ट वृन्दावन के संग्रह से प्राप्त। इसका समय भी १८०० के लगभग है ।

५—श्रीराम नेत दीवान विजावर राज्य द्वारा संग्रहीत जातीय वंशवृत्त तथा कुटुम्ब परिचय संग्रह—क. श्रीरत्नगर्भजी कानपुर द्वारा प्राप्त—इस समय सन् १९२० के करीब हैं ।

६—पो० कण्ठमणि शास्त्री द्वारा संकलित, लिखित एवं सम्पादित आन्ध्रजातीय इतिहास तथा आन्ध्रजातीय कवि, नामक अप्रकाशित ग्रन्थों की टायप एवं पाण्डुलिपियाँ—पिछले २५-३० वर्षों के निरवधि प्रयास से संग्रहीत सामग्री ।

७—श्री शुद्धाद्वैत वैष्णव, वेल्लनाटीय, महासभा-संयोजित "जनगणना" में क० गोकुलानन्द तैलङ्ग द्वारा संकलित, लिखित एवं सम्पादित सामग्री—जो आज से १० वर्ष पूर्व प्रस्तुत की गयी थी ।

८—द्रा० गो० श्रीफाल्गुनजी, श्रीजागेश्वरजी एवं पं० श्रीउत्तमलालजी बीकानेर के पास से प्राप्त वंशवृत्त तथा वंश परिचय की स्फुट सामग्री ।

घ. जातीय पत्र-स्फुट सूत्र तथा निबन्ध सामग्री—

(i) "आन्ध्रोन्नति पत्रिका" बीकानेर (हस्तलिखित—कुछ अंक मुद्रित) मासिक—सं० १९७७ वि०

(ii) "जागृति" कानपुर (हस्तलिखित), मासिक-१९३५ ई०

(iii) "तरुण" जबलपुर (हस्तलिखित) मासिक-१९३५ ई०

(iv) "नवज्योति" काँकरोली (हस्तलिखित)-शु० वै० वे० युवकमण्डल द्वारा प्रकाशित-त्रैमासिक-१९९६ वि०

(v) "दिव्यादर्श" काँकरोली (मुद्रित) : शु० वै० वे० महासभा एवं युवकमण्डल से प्रकाशित—द्वैमासिक १९९६ वि० से २००२ वि० तक ।

ङ. संस्थाएँ-सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियां—

(i) विद्याविभाग—शु० एकेडमी काँकरोली-विगत २५-३० वर्षों से चल रही प्राचीन सम्प्रदायिक साहित्यिक गवेषणा की सामग्री से हमारे इतिहास निर्माण में बहुत सहायता मिली है। सरस्वतीभण्डार के प्राचीन ग्रन्थों तथा उनकी पुष्पिकाओं से अनेक ऐतिह्य सूत्र उपलब्ध हुए हैं। शुद्धाद्वैत पुष्टिमार्गीय पत्रों तथा ग्रन्थों से भी सामग्री संकलित की गयी है ।

(ii) सागरस्थ, बीकानेरस्थ आदि तैलङ्ग भट्ट सभा (१९७५ वि.) गोकुलस्थ, मथुरास्थ व्यवहार—अनिमन्त्रित गोस्वामियों में जाना—मथुरास्थ सम्बन्ध ।

(iii) श्रीमती देशस्थ तैलंग भट्ट महासभा बीकानेर (१९७५ वि.) कलाकौशल, संस्कृत पुस्तकालय, आन्ध्रजातीय पत्रिका जनगणना ।

(iv) स्ववेषभाषा-प्रचारिणी समिति राँझा जबलपुर सी० पी० पञ्चद्राविड़ सहभोज ।

(v) श्री शु० वै० वे० महासभा : कामवन कांकरोली—(१९७७ से २००७ वि०)—जनगणना, मथुरास्थ सम्मेलन तथा समय समय की प्रवृत्तियाँ ।

(vi) प० दे० तै० ब्रा० (भट्ट) जातीय तरुण मित्रमण्डल वृन्दावन (सं० १९८९ से २००७ वि०) जनगणना ।

(vii) श्री शु० वै० वे० यु० मण्डल कांकरोली—(१९९५ वि० से २००७ वि०) जनगणना ।

(viii) सागर सभा (१९९४ वि०)—नामकरण, इतिहास जातीयफण्ड जाति बहिष्कृत सम्मेलन-मथुरास्थ सम्मेलन छात्रवृत्ति, वेषभूषा ।

(ix) श्री मध्यभारत तैलंग परिषद् टीकमगढ़ (१९९५ वि०)-पञ्चद्राविड़ सम्मेलन, साहित्य प्रकाशन ।

(x) श्रीमद्वल्लभवंशज गोस्वामीपरिषद्-कांकरोली (२००१ से २००७ वि०)-मथुरास्थसम्मेलन, श्रीवल्लभ वंशवृत्त दक्षिणयात्रायोजना ।

इन गतिविधियों के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थकारों के ग्रन्थों में दिये आत्मपरिचय, विद्यमान वंशधरों से प्राप्त निर्देशन, प्राचीन उपलब्ध स्फुट पद्य संकलन आदिक भी आधार लिया गया है। समय-समय पर समाज के प्रत्येक वर्ग में इतिवृत्त संकलन के सामूहिक वा व्यक्तिगत प्रयास हुए हैं, उनका यथासाध्य सहयोग प्राप्त किया गया है ।

इस प्रकार यावद्बुद्धिबलोदय हमने उत्तरभारतीय आन्ध्र जगत के इतिहास की एक रूपरेखा तैयार कर ली है। प्रस्तुत वक्तव्य तथा वंशवृत्त रूप में उसी की सारभूत सामग्री समधिगत की गयी है। इस सामग्री के नियोजन में हमने किसी वर्ग भेद वा प्रान्तीयता के पक्ष को प्रश्रय नहीं दिया है। मूल ऋषियोंके गोत्रों की जनसंख्या के अनुपात के आधार पर वंश वृत्त वा गोत्र परिचय का क्रम देते हुए यथातथ्य वस्तु को समुपस्थित किया है। अब इस सामग्री के सूत्रों का विशद् भाष्य और उसके आधार पर साङ्गोपांग इतिहासलेखन की आवश्यकता शेष है, जो आर्थिक सुविधाओं के समधिगत होने पर ही शक्य है। साथ ही उत्तरभारतीय ऐतिह्य शृंखला को मूल उद्गम दक्षिण के जातीय इतिहास के साथ संयोजित और सम्पूर्ण करने के लिये दाक्षिणात्य परिकर का परिचय भी अति आवश्यक है, जो कभी दक्षिणयात्रा द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। निस्साधन अथवा न्यून साहाय्य की दशा में जितना शक हो सकता है, उतना हमने किया है—अवशिष्ट पूर्ति समय करायेगा, यदि हम अपने उत्तरदायित्व को समझते रहे। हमें दुःख है कि उनके वंशधरों से अनेक वंश का परिचयादि बीसों बार माँगने पर भी प्राप्त न हो सका। उन्होंने पत्र का उत्तर तक देने की शिष्टता भी प्रकट करने की आवश्यकता नहीं समझी । अस्तु—

अब हम अन्त में अपने उन आत्मीय बन्धुजनों वा आदरणीय मित्रों अथवा संस्थाओं वा पत्रों तथा ग्रन्थकारों का आभार स्मरण करते हैं, जिन्होंने हमें पूर्ण सहयोग भावना से इस ऐतिह्य सामग्री के संकलन को अधिकाधिक पूर्ण और उपयोगी बनाने में सहायता की है। और भी जो जाने, अनजाने हमारे प्रयास में सहायक हुए हैं, हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं। विशिष्ट उल्लेखनीय नाम ये हैं—द्रा० गो० श्रीफाल्गुनजी, श्रीजागेश्वरजी, ष० श्री उत्तमलालजी बीकानेर—पो० श्रीजयकृष्णदेवजी, श्रीबालकृष्ण देवजी टीकमगढ़—ने. श्रीपीतांबरजी अजयगढ़—क० श्री रत्नगर्भजी कानपुर—क० श्रीगौरगोपालजी, श्रीनित्यानन्दजी, श्रीनन्दनन्दनजी वृन्दावन—पो० श्रीकेशव शास्त्री भोपाल आदि—

इनके सर्वोपरि श्री शु० वै० वे० महासभा तथा युवकमण्डल एवं श्रीमद्वल्लभवंशज गोस्वामीपरिषद् के प्रति हमारा उपकार स्मरण है, जिनके सम्पूर्ण अर्थसाहाय्य तथा साहित्य-सामग्री से आज वर्षों का प्रयास आंशिक वा आज की दृष्टि से तो सम्पूर्ण मूर्त्तरूप पा सका है। इसका श्रेय इन संस्थाओंके कर्णधार सर्वस्व आदरणीय गो० श्रीब्रजरत्नलालजी म० सूरत, गोस्वामी श्री ब्रजभूषणलाल जी म० काँकरोली तथा गो० श्रीविट्ठलनाथजी म० काँकरोली हैं जिनकी प्रेरणा और आदेश से यह कार्य सफलीभूत हो सका है। गोस्वामिपरिषद् द्वारा श्रीवल्लभवंशवृत्त पूर्व में प्रकाशित हो चुका था । किन्तु उत्तर भारतीय आन्ध्र जगत् का ही एक समर्थ अङ्ग होने के नाते वल्लभवंश की सामग्री का भी समावेश होना इसमें अपेक्षित था । इस दृष्टि से परिषद् की कृपापूर्ण सहमति से हमने 'श्रीवल्लभवंशवृत्त' को भी इस भट्टवर्ग के संग्रह में अविकल सन्नियोगित कर लिया है ।

प्रभु अनुग्रह से अवशिष्ट कार्यपूर्ति की मंगल कामना करते हुए हम अपने वक्तव्य को विश्राम देते हैं। शुभम्

ब्रज निकुञ्ज : कांकरोली (राजस्थान)
दोलोत्सव : २००७ विक्रम

विधेय—
पो० कंठमणि शास्त्री
क० गोकुलानन्द तैलंग

परिशिष्ट

उ. भा. आन्ध्रजातीय कवि और ग्रन्थकार [ग्रंथ-सूची]

★

१. भारद्वाज

(i) खंभंपाटि : गोस्वामी

गंगाधर भट्ट
मीमांसारहस्य
गणपति भट्ट—
सर्वतन्त्रनिग्रह
वल्लभ भट्ट
दशग्रंथी टीका
भक्तिदीप
लक्ष्मण भट्ट—
नैषधचरित-भावद्योतनिका टीका
श्रीवल्लभाचार्य—(१५३५)卐
अणुभाष्य।
बृहद्भाष्य
निबन्ध ३
भगवत्पीठिका
सुबोधिनी
सूक्ष्म टीका
षोडष ग्रन्थ
पुरुषोत्तमसहस्रनाम
गायत्रीभाष्य
त्रिविध नामावली
पत्रालम्बन
पूर्वमीमांसाभाष्य
प्रकीर्ण स्तोत्र तथा सिद्धांतग्रंथ
वेदवल्लभ।
गोपीनाथ जी (१५६८)
सेवा विधि
साधन दीपिका,
नाम निरूपण संज्ञा
वल्लभाष्टक,
गो० श्रीविट्ठलनाथजी-(१५७२)
विद्वन्मण्डन
सुबोधिनीविवृति (टिप्पणी)
भक्तिहंस
भक्ति हेतु
षोडष ग्रंथ टीका
प्रकीर्ण स्तोत्र
शृंगार रस मण्डन
उत्सव निर्णय ग्रंथ
विज्ञप्ति
आर्याएँ
गीतगोविन्द टीका
अष्टपदी टीका
न्यासादेश विवरण
गो० गिरिधरजी-(१५६७)
गद्य मन्त्र टीका
उत्सव निर्णय
स्तोत्र
गो० गोविन्दराय जी
श्रीविट्ठलाष्टक
गो० बालकृष्णजी—(१६०६)
भक्ति वर्द्धिनी टीका
मधुराष्टक टीका
प्रसाद् वागीश भाष्य
प्रकीर्ण स्तोत्र
सर्वोत्तम स्तोत्र टीका
गो० गोकुलनाथजी-(१६०८)
गद्यमन्त्रटीका
दंडी मद मर्दन
मालाकार
सुबोधिनी प्रश्न टीका
षोडष ग्रंथ व्याख्यान
प्रकीर्ण स्तोत्र व्याख्यान
उत्सव निर्णय
भाव रसायन
वाद ग्रन्थ
वचनामृत❀
सर्वोत्तम स्तोत्र टीका
८४ तथा वैष्णव वार्ताएँ *
निजवार्ता❀
घरूवार्तादि❀
गो० रघुनाथजी—(१६११)
षोडष ग्रन्थ टीकाएँ
भक्ति हंस टीका
उत्सव निर्णय
प्रकीर्ण स्तोत्र
गो० यदुनाथजी—(१६१५)
वल्लभ दिग्विजय
प्रकीर्ण स्तोत्र
गो० घनश्यामजी—(१६२८)
मधुराष्टक टीका
गुरुरस-टीका
गो० व्रजनाथजी—(१७४४)
षोडष ग्रन्थ टीका
गो० व्रजरायजी—(१७५८)
ब्रह्मवाद
गो० द्वारकेशजी—(१८५२)
षोडष ग्रंथ टीका
गो० जीवनजी—(१८५६)
उत्सव निर्णय
बालकृष्ण चम्पू
किंपच नाटक
ब्रह्मसूत्र वृत्ति
आर्याएँ
गो० कन्हैयालालजी-(१८७८)
प्राभंजन
गो० कल्याणरायजी-(१६२५)
सिद्धान्त मुक्तावली टीका
पुष्टिप्रवाह मर्यादा टीका—
सिद्धान्त रहस्य टीका
कृष्णाश्रय स्तोत्र प्रकाश
भक्तिवर्द्धिनी विवृत्ति
जलभेद विवृति
सेवाफलोक्ति
निबन्ध टिप्पणी
उत्सव निर्णय
गो० हरिरायजी—(१६४७)
मार्ग स्वरूप निर्णय :
स्वमार्गीय कर्त्तव्य निरूपणम्
स्वमार्गीय साधनरहस्यम्
भक्तिमार्गे पुष्टिमार्गत्वनिश्चय:
भक्ति द्वैविध्य निरूपणम्
स्वमार्गीय भक्ति द्वैविध्य विवेक
स्वमार्गीय मुक्ति द्वैविध्य निरूपणम्
स्वमार्गीय सेवा फलरूप निर्णय:
पुष्टिमार्गीय स्वरूप निरूपणम्
स्वमार्गीय स्वरूप स्थापन प्रकार:
श्रीमत्प्रभोश्चिन्तनप्रकार:
स्वमार्गीय शरण समर्पण सेवादिनिरूपण
श्रीपुष्टिमार्ग लक्षणानि
ब्रह्म सन्बन्ध वाक्य कठिनांश विवेचनम्
अष्टाक्षर मन्त्र पूर्वपक्ष निरास:
स्वमार्ग मर्यादा निरूपणम्
स्वमार्ग रहस्य निरूपणम्
मधुराष्टक तात्पर्यम्
सर्वात्मभाव निरूपणम्
निवेदन तात्पर्यार्थ
स्वमार्ग मूल निरूपणम्
मूलरूप संशय निराकरणम्
श्रीमत्प्रभुप्राकटयहेतु निर्णयः
श्रीपुरुषोत्तमस्वरूपाविर्भाव निर्णय:
स्वमार्गीयभावनास्वरूप निरूपणम्
स्वरूपतारतम्य निर्णय:
अन्तरग बहिरंग प्रपञ्च विवेक:
भावसाधक बाधक निरूपणम्
श्रीकृष्ण शब्दार्थ निरूपणम्
श्रीमत्प्रभो:.सर्वान्तरत्वनिरूपणम
श्रीमत्प्रभोः प्रादुर्भावप्रकारनिरू० गवत्प्रादुर्भाव सिद्धान्त
प्रभुप्रादुर्भावविचार:
प्रभुप्राकट्य विचार
श्रीमत्प्रभोर्वयोनिरूपणम्
अष्टाक्षर मन्त्रार्थ
गद्यार्थ
पुष्टिमार्गीयध्यानप्रकारविवेचनम्
जपसमये स्वरूप ध्यानम्
स्वमार्गे शरणद्वय निर्णय
स्वमार्गीय सन्यास वैलक्षण्य निरूपणम्
जन्मवैफल्यनिरूपणाष्टकम्
दुस्संग विज्ञान प्रकारनिरूपणम्
कामाख्य दोष विवरणम्
निष्कामलीला
बहिर्मुखत्व निरूपणम्
बहिर्मुखत्वनिवृत्तिः
भगवत्प्रकृतिवर्णनम्
कथाश्रवण बाधक निर्णय:
सत्संग निर्णयः
गवां स्वरूपवर्णनम्
कार्पण्योक्तिः
मदत्यागहेतु:
मार्ग शिक्षा
श्रीनिजाचार्याष्टकम्
श्रीवल्लभ पञ्चाक्षर स्तोत्रम्
श्रीवल्लभभावाष्टकम्
प्रभाताष्टकम्
श्रीगोकुलेशसेवान्हिकम्
श्रीमद्गोकुलचन्द्राष्टकम्
श्रीनवनीतप्रियाष्टकम्
भुजङ्गप्रयाताष्टकम्
स्मरणाष्टकम्
स्वप्रभुविज्ञप्तिः (प्रथमा-द्वितीया)
श्रीकृष्णाचरणविज्ञप्तिः
विज्ञप्तिः
दैन्याष्टकम्
स्तोत्रम्
षोडषस्तोत्रम्
श्रीकृष्णशरणाष्टकम् (प्र०-द्वि०)
पञ्चाक्षरमन्त्रगर्भस्तोत्रम
भगवच्चरणचिह्न वर्णनम्
नैवेद्यसम्बन्धि स्तोत्रम
मध्याह्नलीला
श्रीगोकुलप्रवेशलीला
प्रमाणिकाष्टकम्
श्रीगिरिधराष्टकम्
प्रार्थनाष्टकम
श्रीगोपीजन वल्लभाष्टकम्
प्रातर्युगल स्मरणम्
श्रीनागरी नागर स्तोत्रम्
विपरीत शृङ्गारफलकम्
श्रीमद्राधाष्टकम्
श्रीमुख्यशक्तिस्तोत्रम्
श्रीस्वामिनीप्रार्थनाष्टकम्
श्रीयमुनाविज्ञप्तिः
श्रीवल्लभशरणाष्टकन
श्रीवल्लभचरणविज्ञप्तिः
दैन्याष्टकम्
हा हा दैन्याष्टकम्
श्रीवल्लभभावाष्टकम्
श्रीवैश्वानराष्टकम्
श्रीमदाचाय सकलावतार—
साम्य निरूपणम्
श्रीमहाप्रभोरष्टोत्तरशतनामानि
स्व स्वामिपाणि युगलाष्टकम्
श्रीमदाचार्य चिन्तनम
प्रातःस्मरणम्
श्रीविट्ठलेश्वराष्टोत्तरशत नामावलिः
श्रीविट्ठलविभोरष्टक
श्रीगोकुलेशाष्टकम
श्रीगोकुलेशाष्टोत्तर शत-नामावलिः
श्रीगुरुदेवाष्टकम्
प्रभुस्वरूपनिरूपणाष्टकम्
स्वप्रभुविज्ञप्तिः
रसात्मकभावस्वरूपनिरूपणम्
चतु:श्लोकी
भगवदीय परिशिक्षणम्
(प्रथमं द्वितीयं तृतीयं)
सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम
(प्रथमं द्वितीयं तृतीयं)
स्वमार्ग सर्वस्वम्
गर्वापहाराष्टकम्
राजभोग भावना
वीटिका (वीडी) समर्पणभाव निरूपणम्
स्वतन्त्रलेख :
फलविवेक:
भगवच्छास्त्रनिर्णय:
वाक्यचक्षुर्मुख्यत्वनिरूपणम्
सर्वाभोग्यसुधाधिक्यनिरूपण
चतुर्भुजस्वरूपविचार
भावपोषकम्
गोपी वचनदिन निर्वाहकम्
दास्याष्टकम्
श्रीनृसिंह वामन जयन्त्युत्सव व्रतवैशिष्ट्य निरूपणम्
श्रीभागवतनित्यपूजनविधि:
अष्टषष्टिरपराधाः फलानि- तत्प्रायश्चित्तानि च
अष्टपदीद्वयम
द्वादशपदानि(प्रभो:स्तवनरूपाणि
पदद्वयम् (श्रीमदाचार्यस्तवनरूपन)
ब्रह्मवाद
शिक्षापत्राणि
सहस्त्रीभावना
गो० गोकुलोत्सवजी—(१६३४)
विवेक धैर्याश्रय-टीका
सिद्धान्त रहस्य-टीका
संन्यासनिर्णय—टीका
सौन्दर्य पद्य
गो० योगी गोपेश्वरजी-(१६४६)
षोडष ग्रंथ टीका
भाष्य प्रकाश रश्मि
बुभुत्सुबोधिका
वादग्रंथ
यजुर्वेद नवार्थी-टीका
भक्तिमार्त्तण्ड
अधिकरण माला
छान्दोग्य भाष्य
बृहदारण्यक भाष्य
भक्तिरत्न टीका
परिवृढाष्टक
गो० अनिरुद्धजी-(१६४६)
गोपाल पूर्व तापिनी भाष्य
नारायणोपनिषद् भाष्य
गो० द्वारकेशजी—(१६४६)
सर्वोत्तम स्तोत्र विवृति
बालकृष्ण अष्टोत्तर शत नामावलि
गो० गिरिधरजी—(१६८२)
गो० व्रजभूषणजी (प्र०)(१७००)
प्रकीर्णपद्य
गो० गिरिधरजी—(१७४५)
प्रपञ्चपाद
सिद्धान्त रहस्य विवृति
भक्ति वर्द्धिनी विवृति
गो० व्रजभूषणजी द्वि.-(१७६४)
नित्यविनोद ❀
नीति विनोद ❀
द्वारकाधीश प्राकट्य वार्ता ❀
वल्लभाचार्यजीवन चरित्र❀

卐जन्म संवत अथवा जीवनकाल। * हिन्दी-ग्रन्थ

श्यामाश्याम लीला❀
धौल पद ❀
गुणसागर❀
स्फुट कवित्त❀
आचार्यनामावली
बालकृष्ण नामावली
गो० पुरुषोत्तमजी —(१८४७)
प्रकीर्ण पद कीर्तन❀
गो० गिरिधरलालजी❀ (१८६८)
पद कीर्तन वचनामृत
गो० बालकृष्णलालजी-(१९२४)
प्रकीर्ण कविता पद नाटक ❀
गो० ब्रजभूषणलालजी-(१९६८)
श्रीवल्लभवंशावृत्त ❀
गोवर्द्धन लीला❀
द्वारकाधीश की प्रा० वार्ता❀
गो० ब्रजरायजी —(१६८२)
चतुःश्लोकी टीका
अन्तःकरण प्रबोध टीका
कृष्णाश्रय टीका
विवेक धैर्याश्रय टीका
निरोध लक्षण टीका
अमृततरंगिणी गीता-टीका
ब्रह्मवाद
सम्वत्सरोत्सव कल्पलता
गो० ब्रजरायजी-(१७०७)
वेदान्त सिद्धान्त-चन्द्रिका
गो० पीताम्बरजी—(१७००)
भक्तिरसत्ववाद
चतुःश्लोकी टीका
गो० पुरुषोत्तमजी—(१७२४)
अणुभाष्य प्रकाश
षोडषग्रन्थ टीकाएँ
अवतार वादावलि
प्रस्थान रत्नाकर
अधिकरण न्यायमाला
पुरुषोत्तम सहस्रनाम विवृति
द्रव्य शुद्धि
वाद-संग्रह
उत्सव प्रतान
गो० वल्लभजी—
सुबोधिनी लेख

सिद्धान्त मुक्तावली टीका
नवरत्न प्रकाश
भक्तिवर्द्धिनी विवृति
संन्यास निर्णय विवृति
निरोध लक्षण विवृति
सेवाफल टीका
चतुःश्लोकी टीका
वाद ग्रन्थ
उत्सव निर्णय
अनिरुद्ध विजय काव्य
वृत्रासुर चतुःश्लोकी
गद्यमन्त्र टीका
गो० देवकीनन्दनजी—(१६३४)
बालबोध प्रकाश
रसाब्धिकाव्य
प्रभुचरित्रचिंतामणि
ब्रह्मवादकारिका
गो० रघुनाथजी— (१६६०)
विट्ठल स्तोत्र
श्रीकृष्णशरणाष्टक
राधाकृष्णाष्टक
उत्सवनिर्णय
नामरत्न स्तोत्र टीका
गो० गिरिधरजी—(१८४७)
अणुभाष्य विवरण
विद्वन्मण्डन-टीका
हरितोषिणी
शुद्धाद्वैत मार्त्तण्ड
बालप्रबोधिनी भागवत टी०
गद्यमन्त्र टीका
प्रपंचवाद
गो० चाचा गोपीशजी-(१६३३)
विवेक धैर्याश्रय टीका
संन्यासनिर्णय विवरण
निरोधलक्षण विवरण
सेवाफल विवरण
गो० द्वारकेशजी— (१७५१)
भावना
चतुःश्लोकी टीका
सिद्धान्त मुक्तावली टीका
सेवाफल टीका
भक्तिवर्द्धिनी टीका

यमुनाष्टक टीका
कृष्णाश्रय टीका
मेष संक्रान्ति निर्णय
गो० विट्ठलरायजी—
जीवस्वरूप निर्णय
ब्रह्मस्वरूप निर्णय
जीव ब्रह्म ऐक्य निरूपण
गो० श्रीकृष्णचन्द्रजी—
भावप्रकाश विवृति
गो० मथुरानाथजी—
चतुःश्लोकी टीका
अणुभाष्य प्रकाश
गो० मुरलीधरजी—
अणुभाष्य व्याख्यान
वल्लभजीवनचरित्र
गो० ब्रजभूषणजी दीक्षित—
गद्यमन्त्र टीका
गो० ब्रजनाथजी
सिद्धान्त मुक्तावली टीका
गो० बालकृष्णजी—
भक्तिवर्द्धिनी टीका
गो० ब्रजपालजी—
शृङ्गाररसमंडन टीका
गीतगोविन्द टीका
गो० गोकुलाधीशजी—
वल्लभस्तुति रत्नावली
गो० ब्रजरायजी —
नवाख्यान सं० टीका
गो० दीक्षितजी —
गो० ब्रजनाथलालजी—
(ii) नेत : अजयगढ़ मैहर
विश्वनाथ कविराज—
वाणीपति रामचन्द्र-(१५३७)
कृपाकुतूहल
रसिकरंजन
गोपाल लीला
शृङ्गारोमावलिशतक
रेवारामजी— (१८२०)
ब्रजचन्द्रजी—कविराज(१८५८)
परमानन्दजी— (१८७२)
शृङ्गारसप्तशती-बिहारीटी०
गंगावतरण नाटक

राजवंश प्रस्तार
हनुमन्नाटक ❀
भरतमिलाप ❀
महीपति भूषण ❀
राज्यवंशकल्पद्रुम ❀
अलंकार गंगाधर ❀
हनुमत्पचासा ❀
कविप्रमोद ❀
नखशिख वर्णन ❀
माधव विलास ❀
भाषाभूषण ❀
रसदर्पण ❀
वार्षिक व्रतनिधि ❀
कविप्रिया टीका ❀
उपवन विनोद ❀
सूदन चरित्र *
रसतरंग ❀
शुकरम्भा संवाद ❀
छत्रिनाथजी—
पुरुषोत्तमजी — (१९००)
काव्याभरण ❀
नायकभेद ❀
वंशावलि ❀
चिन्तामणि ❀
बुन्देलचरित्र ❀
नीति मनोरमा ❀
हनुमत्पचीसी ❀
राजवंश प्रस्तार ❀
वैशेषिक दर्शन 'प्रभा' टीका ❀
उपवनविनोद ❀
जीवनलालजी—
नीति मनोरमा-छन्दोबद्ध टीका ❀
अलंकार भूषण—
'मंजुभाषिणी' टीका ❀
बांदा गौरहार
मुरलीधर भट्ट कवीश्वर-(१७८०)
कविविनोद ❀
रसविनोद ❀
साहबजी की कविता ❀
नलोपाख्यान ❀

गिरिधरजी— (१८३०)
जुल्फिकारभूषण *
राजनीति कल्पद्रुम *
शालिहोत्र *
हारीतक्यादि निघंटु अनुवाद *
राधा नखशिख *
सुवर्ण माला *
भावप्रकाश ❀
गंगाधरजी— (१८८०)
प्रतापमार्त्तण्ड ❀
रत्नमालिका *
व्यवहारकौस्तुभ *
सतसैया *
पीताम्बरजीकविभूषण-(१९१६)
शुक्रनीति भाषानुवाद *
प्रताप प्रभाकर *
उपवन विनोद *
प्रतापभूषण ❀
सागर-बिजहरा
विट्ठल शास्त्री—
रामकृष्ण भट्ट —
शुद्धाद्वैत परिष्कार
रत्नगोपाल शास्त्री —(१९२२)
हरिभट्ट-
गंगालहरी *
श्रीरामजी दीवान- (१९३७)
ओरछा का इतिहास *
प्राचीन भारत *
बुन्देलवंशवर्णन *
राज्य ओरछा *
समालोचना बुन्देलखंड *
सांचीशिलालेख-ताम्रपत्र *
केशव शास्त्री—
गोपीकान्तजी— (१९५७)
इष्टकालसाधन
बसई-मथुरा
वेणीमाधवजी- (प्रवीण-कवि)
द्वारकाधीशविचित्रविलास *
रमेशजी—
नन्दकिशोर शास्त्री शीघ्रकवि-
प्रकीर्ण स्तोत्र प्रशस्ति

(iii) बाजपेयी : नयाकिला
मण्डन कवि (१६८०)
रसरत्नावली *
रसविलास *
जानकीजू का विवाह *
नयन पचासा *
जनक पचीसी *
पुरन्दर माया *
जयगोविन्द *
कविसर्वस्व *
वृत्त कल्पद्रुम *
रसोदय काव्यकौस्तुभ *
आर्याएँ
पुरुषोत्तमजी—
आर्यासप्तशती
देवानारायणजी—
विनायकरावजी- (१९५०)
गोविंदशतक *
ब्रजमाधुरी *
रामचरित *
शारदीय सौंदर्य *
गुरुप्रशस्ति *

२. आत्रेय

(i) द्राविडा गोस्वामी : बीकानेर
समरपुंगव दीक्षित—
यात्रा प्रबन्ध चम्पू
तिरुम्मल दीक्षित—
योग तरंगिणी
पथ्यापथ्यनिर्णय
श्रीनिकेतनजी—
यशस्तिलकचम्पू
सुन्दराचार्य(सच्चिदानन्दनाथ)-
द्वादश श्लोकी व्याख्या
ललितार्चनचन्द्रिका
दक्षिणापद्धति
शाखा तिलक सूची
श्रीनिवासजी- (१६७०)
शिवार्चनचन्द्रिका
सौभाग्यरत्नाकर
चण्डी समयानुक्रम
श्रीनिवासचंपू
त्रिपुरसुन्दरीपद्धति

सौभाग्यसुधोदय
श्रीचण्डिकायजन
जगन्निवासजी-
त्रिपुर सुन्दरी
शिवार्चनचन्द्रिका सूची
शिवानन्दजी- (१७२८)
सिंह सिद्धान्तसिंधु
सिंह सिद्धान्त प्रदीपक
सुबोध रूपावलि
श्रीविद्यासपर्याक्रमदर्पण स्तोत्र
विद्यार्चनदीपिका
ललितार्चन कौमुदी
लक्ष्मीनारायणार्चा कौमुदी
लक्ष्मीनारायण स्तुति
सुभगोदयदर्पण
आचारसिंधु
प्रायश्चित्तार्णव संकेत
आन्हिकरत्न
सुभाषित श्लोक संग्रह
व्यवहार निर्णय
वैद्यरत्न
मुहूर्त्तरत्न
कालविवेक
तिथिनिर्णय
बालबोधिनी टीका (अमरकोष)
स्त्रीप्रत्ययकोष
कारक कोष
समासकोष
शब्दभेदप्रकाश
आख्यानवाद
पदार्थतत्वनिरूपण
नयविवेक
ईश्वरस्तुति
कुलप्रदीप
श्रीचन्द्र पूजाप्रयोग
नित्यार्चन कथन
श्रीनिकेतनजी (द्वि.)—
आर्यासप्तशती
चक्रपाणिजी—
पंचायतन प्रकाश

रमणजी (राधारमणजी)-
वंशावली
कन्हैयालालजी—
कनिष्ठ पूर्णाभिषेकस्तोत्र
ईश्वरीदत्तजी- (१९११)
सिद्धान्ताङ्कुर भूमिका
श्रीसूक्तविधान
संक्षेप दुर्गापाठविधि
भगवत्षोडषोपचारपूजा
लघुश्रीचक्रपूजा
मातंगेश्वर्यार्चनचन्द्रिका
इन्द्राक्षी पूजन पद्धति
उपनयनपद्धति
विवाहपद्धति
कौलिक श्राद्धपद्धति
गुरुपूजनपद्धति
भैरवार्चनकल्पवल्लरी
बटुकदीपदान प्रयोग
गणपतिपूजनपद्धति
वक्रतुण्डगणपतिपूजापद्धति
सूर्यपूजन प्रयोग
गोपाल पूजा पद्धति
प्रातःकृत्यादि तर्पण
पादुकास्तोत्र टीका
गुरुमाला
संक्षेपगीतापद्धति
महात्रिपुरसुन्दरी दीपदान प्रयोग
नृसिंहपद्धति
सन्तान कामेश्वरी विधान
भगवत्याः अंगप्रत्यंगपूजा
बालापूजनपद्धति
श्रीचक्रात्मैक भाष्य
श्रीमत्प्रदोषपूजापद्धति
बटुक पद्धति
सन्ध्याविधि
सप्तशतीसूक्तपाठ
करुणानिधि— (१८८४)
दुर्गार्चनचन्द्रिका
ब्रजगोविंदजी-
करणीस्तोत्राष्टक
उत्पत्ति प्रकाश

जनार्दनजी–
वैद्यरत्नभाषा ०
कविरत्न ०
कालविवेक ०
हाथीका शालहोत्र ०
व्यवहारनिर्णय ०
मन्त्रचन्द्रिका
सारोद्धार
ललितार्चा कौमुदी
लक्ष्मीनारायणपूजासार
शृङ्गारशतक
वैराग्यशतक
महालक्ष्मी पूजा
कामप्रमोद
आनन्दी देवी–
स्फुट कविता ❀
देवीदत्तजी–
सत्यनारायण कथा *
बारामासी *
मोरध्वजगीता *
फाल्गुनजी बी० ए०
आशुकरणजी एम० ए०
जागेश्वरजी बी० ए०
(ii) कवीश्वर : बांदा
मण्डन कवि—
प्रकीर्ण कविता छन्द
पद्माकर कवीश्वर– (१८७२)
हिम्मतबहादुरविरुदावली *
रामरसायन ❀
ईश्वरपचीसी ❀
गंगालहरी *
जगद्विनोद *
यमुना लहरी *
प्रतापसिंह सफरनामा ❀
पद्माभरण *
भगवत्पचाशिका *
राजनीति *
कलियुग पचीसी *
आलीजाप्रकाश *
रायसा ❀
हितोपदेश भाषा *
अश्वमेध *
क्षेमनिधि—
मोहनलालजी—

गदाधर भट्ट— (१८६५)
कामंदक नीतिशास्त्र *
देशाटन विनोद *
केसर सभा विनोद *
विरुदावली *
वृत्ति चन्द्रिका *
ब्रजेन्द्र विलास *
अलङ्कार चन्द्रोदय *
छन्दो मञ्जरी *
बाजि विनोद *
रामप्रसाद भट्ट प्रभाकर–(१९५२)
अलङ्कार *
प्रतापकीर्ति चन्द्रोदय ०
भर्तृहरिशतक पद्यानुवाद ०
यज्ञोपवीत सरोज ०
षट्ऋतु दर्पण ०
हम्मीर कुलकल्पवृक्ष ०
दतियानरेश वंशावली ०
लक्ष्मीधर भट्ट 'श्रीधर'—
दशकुमारचरित्र-पद्यानुवाद ०
भर्तृहरिशतक–पद्यानुवाद ०
भारतसार ०
राजेन्द्र चिंतामणि ०
बंशीधर भट्ट—
घोटकशतक ०
अम्बुज भट्ट—
नायिका भेद ०
नखशिख वर्णन ०
स्फुट नीति छन्द ०
मिट्ठीलाल—
स्फुट पद्य ०
गौरीशङ्कर सुधाकर–(१९०६)
नीति विलास ०
विश्वविलास ०
प्रताप पचासी ०
कीर्ति पचीसी ०
रामायण कवित्त ०
राधाष्टक ०
गोविन्द कवीश्वर—
कमलाकरजी—
प्रकीर्ण कविता ग्रन्थ ०
भालचन्द्रजी—

(iii) बागरोदी : गोकुलस्थ
लालू भट्टजी (बालकृष्णजी)-
सिद्धान्त मुक्तावली व्याख्या
सिद्धान्त रहस्य विवृति
नवरत्न स्फुट लेख
भक्तिवर्द्धिनी विवृति
सेवाफल विवृति
अणुभाष्य विवरणार्थ–
प्रकाशिका टीका
सुबोधिनी योजना
निबन्ध योजना
सेवा कौमुदी
निर्णयार्णव
प्रमेय रत्नार्णव
ब्रजनाथ भट्ट—
अणुभाष्य अधिकरणार्थ
गिरिधर भट्ट 'वैष्णवराज'—
भागवत पद्यानुवाद 'सुधा'
टीका
गोकुलचन्द्र भट्ट 'कवि केसरी'–
उत्सवमालिका
गिरिधारीलालजी 'कविकिंकर'–
कृष्णचन्द्र शास्त्री—
(iv) आत्रेय : गोकुलस्थ
(v) द्राविडा : गोकुलस्थ
(vi) कठौडी : गोकुलस्थ
रणछोड़ भट्ट—
राजप्रशस्ति

३. गौतम

(i) सिमरी : रेवें
गोपेश्वरजी 'गोप' कवि—
रामचन्द्राभरण ❀
रामचन्द्रिका ❀
यदुनाथ भट्ट—
रासविलास प्रकाश ०
गिरिधर शास्त्री— (१९०२)
चुन्नीलालजी—
रामकृष्ण भट्ट— (१०१७)
पवन विजय
स्वरोदय
विट्ठल शास्त्री— (१९०३)

गोपाल शास्त्री—
(ii) चक्रवर्ती : ग्वालियर
विष्णु शर्मा—
यज्ञेश्वर—
वाचिदेव—
माधव (प्र०)—
विष्णुदेव 'कवि चक्रवर्ती'—
माधव (द्वि०)— (१९२८)
दानलीला काव्य
प्रपन्न मुरलीधरजी— (१७३६)
यज्ञपत्नीप्रसाद
श्रीकृष्णवल्लभजी— (१८५५)
काव्य भूषण
बलभद्रजी—
विदग्धराघव त्रोटक
श्लोकाध्यायिका
पुरुषोत्तमजी भट्ट पुराण–
मार्त्तण्ड—
श्रीनिवासजी—
श्रीनिवास सहस्र
भगवद्विंशति
गङ्गाष्टक
यमुनाष्टक
श्रीषोडषी
श्रीमन्माधवराज प्रशस्ति
रामचन्द्रजी—
पद्मनाभजी—
मुकुन्दजी एम० ए०—
(iii) देवर्षि : जयपुर
कवि मंडन— (१८३०)
भारत चरित्र ०
रावल चरित्र ०
राघेव चरित्र ०
जयसाह सुजस प्रकाश ०
बापू चरित्र ०
कृष्ण सुजस प्रकाश ०
राजजस चन्द्रिका ०
नवरस रत्नाकर ०
रस समुद्र ०
श्रीकृष्ण ब्रजविहार ०
सुलोचना चरित्र ०

श्रीकृष्ण भट्ट 'कविकला-
निधि'— (१७२५)
ईश्वरविलास महाकाव्य
पद्यमुक्तावलि
सुन्दरी स्तवराज
वेदान्त पंचविंशति
अलङ्कार कलानिधि ०
सांभरयुद्ध ०
जाजौ युद्ध ०
बहादुर विजय ०
शृङ्गार रस माधुरी ०
विदग्ध रस माधुरी ०
उपनिषद् टीकाएं ०
जयसिंह गुणसरिता ०
रामचन्द्रोदय ०
राम रासा ०
वृत्त चन्द्रिका ०
नखशिख वर्णन ०
दुर्गा भक्ति तरंगिणी ०
द्वारकानाथजी— (१७५०)
मधुकर कलानिधि ०
वाणी वैराग्य ०
प्रतापसिंह सभासदस्य-
वर्णन ०
राम चन्द्रिका ०
शब्द चन्द्रिका ०
पृथ्वीसिंह महाराज-का-
व्यावली ०
अलङ्कार ग्रन्थ ०
गालव चरित्र ०
ब्रजपाल भट्ट— (१८००)
नीति संग्रह ०
महाभारत पद्यानुवाद–
(खंडशः)
जगदीश भट्ट— (१७८०)
काव्य विनोद ०
किशोर सुख सागर ०
जगत रस रंजन ०
जगत भक्ति विलास ०
भक्ति अरगजा ०
पद मकरन्द ०
पद पंकज ०

ब्रह्मवैवर्त पद्यानुवाद ०
भागवत दशम पद्यानुवाद ०
षोडषग्रंथ अनुवाद ०
वनपर्व पद्यानुवाद ०
शान्ति पर्व पद्यानुवाद ०
शिशुपाल वध पद्यानुवाद ०
शतकत्रय पद्यानुवाद ०
आर्याशतक पद्यानुवाद ०
वासुदेव भट्ट— (१८५०)
राधारूपचरित्रचन्द्रिका ❀
दादूदयालचरित्रचन्द्रिका ❀
नखशिखवर्णन ❀
रमानाथ शास्त्री–
शुद्धाद्वैत दर्शन ❀
षोडषग्रन्थ भाषानुवाद ०
सेवा कौमुदीभाषानुवाद ०
गीतातात्पर्यभाषानुवाद ०
न्यासादेश भाषानुवाद ०
दुःखिनी बाला ०
शुद्धाद्वैतसिद्धान्तसार ०
श्रीवल्लभाचार्य ०
राधाकृष्णतत्व ०
ब्रह्मसंबंध ०
भगवद्भक्ति और प्रपत्तिका
स्वरूपगत भेद ०
भगवान् अक्षरब्रह्म ०
छान्दोग्य उपनिषद् भाष्य
स्तुति पारिजात
दशनादर्श
रासलीला काव्य
मथुरानाथ शास्त्री—
साहित्य वैभवम्
जयपुर वैभवम्
गोविंद वैभवम्
व्रजनाथ भट्ट–
श्रीवल्लभाचार्य और उनके
सिद्धांत

४ श्रीवत्स

i) पीतकुचि : शास्त्रीवंश
माधव 'पण्डितराज'–
रुद्रणाचार्य—
गोवर्द्धनाचार्य —

आर्यासप्तशती
बलभद्र–
मधुसूदन 'मनीषी'
'कविपण्डित'–
सप्तशती
गीताभाष्य
चतुर्भुज शास्त्री– (१९२०)
हरिवंश शास्त्री– (१९४०)
कण्ठमणि शास्त्री– (१९६०)
वेदमणि शास्त्री— (१९६०)
हरिवल्लभ शास्त्री– (१९७५)
भगवद्गीता पद्यानुवाद ०
संगीतदर्पण ०
हरिभक्ति रसोदय ०
हरिवल्लभ सुधोदय ०
कुमारमणि– (१७७०)
रसिकरसाल ०
रसिकरंजन ०
भाषा छन्दोदीपक ०
सप्तशती
वासुदेव शास्त्री–
सप्तशती
भोजराज 'हरिजन'—(१७५५)
रसिकविलास ०
उपवनविनोद ०
भोजभूषण ०
नारायण शास्त्री (प्र.)–(१८००)
भगवन्माधुर्यकल्पद्रुम
केशवराय शास्त्री— (१८३०)
हनुमानजन्म लीला
नकुल चरित्र
बिहारीलाल शास्त्री —
जयेन्द्र कल्पवृक्ष
शास्त्रसारदर्पण
(नीतिकौतूहल)
लयप्रश्न
राज्याभिषेकवर्णन
भागवत पंचाध्यायी टीका
विनयपत्रिका-विजय
सुबोधिनी टीका ०
बिहारी सतसई टीका ०
गणित चन्द्रिका ०

मुकुन्द शास्त्री— (१८६
भूभ्रमण खंडन
बुन्देलखण्डप्रकाशिका
मुन्थप्रकाश
शिक्षाकौमुदी
कुण्डेश्वरपचीसी
शिवमहिम्नसागर
नारायण शास्त्री (द्वि.)—
बालकृष्ण शास्त्री—
वैदिकसूक्तमन्त्रार्थ व्याख्या
गीतार्थविचार
ब्रह्मसूत्रार्थ विचार
भागवतार्थ विचार
श्रीकृष्णस्वरूपप्रतिपादन
श्रीनाथभावोच्चय
वल्लभाचार्यस्वरूप दीपिका
स्वतन्त्रश्लोकार्थ विवेचन
साम्प्रदायिक सिद्धान्त
विमर्श
दीक्षा मन्त्रार्थपर्यालोचन
प्रकीर्णपद्य
शब्दार्थसंग्रह
श्रीकृष्ण शास्त्री— (१९२४
नीति संग्रह
वेदान्तचन्द्रिका
उपदेश शतक
हिन्दीपद्यमय व्याकरण
वंशवृक्ष
हरिकृष्ण शास्त्री M.A.(१९२
भट्टिकाव्य ट्रांसलेशन
(अंग्रेजी)
हरमिट-गोल्डस्मिथ-
संस्कृत पद्यानुवाद
शेक्सपियरAs you like it
सं० पद्यानुवाद
स्काटले आफ दी लास्ट
मिस्टर-सं. पद्यानुवाद
उपेन्द्र शास्त्री— (१९२८)
साम्राज्य भक्तिपुष्पाञ्जलि
लक्ष्मण अय्या—
प्रबोध चन्द्रोदय नाटक
उर्दू अनुवाद

हृषीकेश शास्त्री— (१६४८)
संपादक 'भरती' ०
सौ० शारदा देवी—
कण्ठमणि शास्त्री— (१६५४)
सम्प्रदायप्रदीपालोक ०
कॉंकरोली का इतिहास ०
पुष्टिमार्गीय दिग्दर्शन ०
आन्ध्रप्रान्तीय कवि ०
संपादक 'दिव्यादर्श' ०
पुष्टिमार्गीय वाङ्मय का
वैज्ञानिक विश्लेषण
दिव्यदयादर्श
गोपाल शर्मा M. A.—
प्रकीर्ण हिन्दी कविता
पुरुषोत्तम शर्मा—
दामोदर शर्मा—
समाज की वेदी ०
पद्मिनी नाटक ०
उपेन्द्रनाथजी—
जोशेजुनू ०
केशव शास्त्री—
बिहारी शास्त्रि-वंशवृक्ष
नूतनकुमार शर्मा बी. ए.—
रघुनाथराव मास्टर—
दाऊजी–टीकमगढ़
माधव भट्टाचार्य—
माधवाब्धि सारभूत—
ज्योतचन्द्रोदय ०
भाषा चन्द्रोदय ०
दामोदरदेव— (१६८०)
हमीर हर्षोदय ०
रस सरोज ०
बलभद्रशतक ०
उपदेशाष्टक ०
बलभद्रपचीसी ०
वृन्दावनचंद्र नखशिख—

ध्यानमजूषा ०
अर्थालंकारमंजरी ०
जयदेव–भट्टाचार्य (१६४१)
नीतिशतक पद्यानुवाद ०
दुर्गासप्तशती पद्यानुवाद ०
आत्मपचीसी पद्यानुवाद ०
शुकदेव—
प्रकीर्ण कविता
रामदेव— (१६०८)
स्फुट कविता ०
मुकुन्ददेव—
स्फुट कविता ०
तेजदेव—
राजनिरंजनविधानसंग्रह ०
राजमनरंजन संग्रह ०
रघुनाथदेव—
प्रकीर्ण कविता ०
गोविन्ददेव— (१६३३)
स्फुट कविता ०
घनश्यामदेव— (१६३६)
स्फुट कविता ०
शिवदेव— (१६४७)
प्रतापपच्चीसी ०
विक्रमविलास ०
बालकृष्णदेव—
चर्पटमंजरी पद्यानुवाद ०
उपदेशपारिजात ०
ज्योतिषजाह्नवी ०
दैवज्ञदिवाकर ०
प्रेमतरंग ०
ऋतुरहस्य ०
वामदेव—
आखेट विधान ०
वनविभाग नियमावली ०
कोषविधान
(Audit Code) ०

जयकृष्णदेव B. A.–(१६५७)
निर्झरिणी काव्य ०
(ii) भद्राश्व : ऊंचागाम
भट्ट भास्कर—
भैरव दीक्षित—
रंगनाथ दीक्षित— (१५४८)
ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्यविवृति
नारायणभट्ट 'गोस्वामी'
व्रजभक्तिविलास ०
ब्रजोत्सवचान्द्रिका ०
रासपंचाध्यायी—
रसिकाह्लादिनी टीका ०
दामोदर भट्ट—
(iii) महापात्र : गोकुलस्थ
सुमतिनाथ—
यमुनाष्टपदी, संस्कृत छप्पय
(iv) ....
रामेश्वर भट्ट—
नरसिंह भट्ट सरस्वती—
मल्लिनाथ भट्ट—
नारायण भट्ट—
नरहरि भट्ट— (१२६८)
बालचित्तानुरंजिनी काव्य-
प्रकाश टीका ०
नृसिंह भट्ट—
वेदान्तसारसुबोधिनीटीका ०

५. कौण्डिन्य

(i) करञ्जी : मथुरा–वृन्दावन
गदाधर भट्ट— (१५६०)
गदाधरजी की वाणी ०
वल्लभरसिक—
स्फुट पद ०
रसिकोत्तंस—
स्फुट पद ०
गोवर्द्धन भट्ट—
मधुकेलिवल्ली
नन्दकुमार भट्ट

दामोदरजी—
नारायण भट्ट—
मधुसूदन भट्ट 'पुराणभूषण'
भक्तिविशारद
गोकुलानन्द तैलङ्ग—
सम्पादक 'दिव्यादर्श' श्रेय०
उत्तरभारतीय आन्ध्रजगत
चयन-लहरी-सीकर-
कलरव-वंशी
उमङ्ग, वेदना, ब्रजकी झलक
प्रेममन्दिर में, निकुञ्ज,
अरुणिमा, स्वर्ण रज,
मधुकण
गिरिधारीजी शास्त्री—
गौरगोपाल शर्मा—
सोहनलालजी—
नित्यानन्द भट्ट—
कृष्णचैतन्य एम० ए०
जहानाबाद–कानपुर
हरि भट्ट—
दत्त' कवि—
लक्ष्मीकिशोर शास्त्री—
रत्नगर्भ 'देर' कवि
रामचन्द्र तैलङ्ग—
(ii) वाशिष्ठ : बीकानेर
(iii) दीक्षित : टीकमगढ़
पीताम्बर दीक्षित— (१६०१)
कोटिचंडीविधान
श्रीराम भट्ट—
नीलकण्ठ भट्ट—
तर्कसंग्रह–नीलकंठी टीका
लक्ष्मीनृसिंह भट्ट—
भास्करोदय

६. मुद्गल

पटभ्रात–छभैया–मथुरा
ब्रजभूषणजी—

मगनजी उपाध्याय—
गोविन्दजी उपाध्याय—
रामकृष्णजी (मणिजी)
सुजों–जयपुर
बालमुकुन्दजी—
नित्यानन्द 'मृदुल'
इग्धा
गोरेलाल 'लालकवि'—
छत्रप्रकाश ०
विष्णुविलास ०
राजविनोद ०
छत्रप्रशस्ति ०
छत्रछाया ०
छत्र हजारा ०
छत्र दण्ड ०
छत्र कीर्ति ०
छत्रसाल शतक ०
छत्रच्छन्द ०
गंगाधर शास्त्री—
गंगाधर बोधिनी
कन्हैयालाल शास्त्री—
वल्लभदिग्विजय
चतुःषष्ठि प्रश्नोत्तर
सारस्वतादि कल्पविचार
प्रश्नकंटकचूर्णिका
चतुःसम्प्रदाय तारतम्या-
धिक्यवर्णन
सिद्धान्ताष्टक
श्लेषार्थविंशति
वज्रमुद्गर
श्रीमती परमादेवी—
पद कीर्तन
पन्नगेन्द्र शास्त्री—

७. कश्यप

(i) रेही : गोकुलस्थ
विष्णु स्वामी—

जगन्नाथ कविराज—
रसगंगाधर
प्राणाभरण
गंगालहरी
विट्ठलनाथ भट्ट—
सम्प्रदायकल्पद्रुम
हरदेव कवि—
त्रिविक्रम (टीकमजी)—
कविताकुसुमांजलि ❀
वेणीमाधव 'प्रवीण' कवि—
गोकुलेश शर्मा—
(ii) त्रिगृह : गोकुलस्थ
हरिहर दीक्षित—
गणेश दीक्षित—
गोविन्दरायजी—
कृष्णाश्रय प्रकाश-टिप्पण
गोवर्धनजी—
उत्सव निर्णय
बलदेवजी 'प्रेम' कवि—
बलभद्र भट्ट शर्मा—
ईशावास्योपनिषद् भाष्य
सिद्धान्त सिद्धापगा
विद्वन्मण्डनोपोद्घात
(iii) करंभा : गोकुलस्थ
(iv) भाम्भेय : गोकुलस्थ
(v) मठपति : गोकुलस्थ
जयगोपाल भट्ट—
तैत्तरीय उपनिषद् भाष्य
भक्तिवर्द्धिनी टीका
सेवाफल विवरण
बहिर्मुख मुखध्वंस
कृष्णकर्णामृत टीका
शुद्ध पुष्टिमार्गीय सेवा
संगीत सूत्र टीका
मुण्डकोपनिषद् भाष्य
सेवाफल व्याख्या

श्रीनाथदेव—
संस्कृत वार्तामणिमाला
चतुःश्लोकी टीका

८. लोहित

अबोटी : सागर–भोपाल
लक्ष्मणाचार्य—
श्रीनिवासाचार्य गोस्वामी 'रमा'
यदुनाथजी—

९. कौशिक

गोष्ठीशाख : गोकुलस्थ
घनश्याम भट्ट—
सुबोधिनी प्र० विभाग
सूचिका
गोपाल 'सत्कवि'—
विजयावाद

१०. हरतस

(i) पालगुत्र (ii) पेद्दीभोटला
(iii) मैदूर (iv) चिन्तलपाटी :
के० लक्ष्मीनारायण शास्त्री—
प्रकाण कविता

११. वाधूलस

पञ्चनदी : गोकुलस्थ
अल्लाड भट्ट—
औभल भट्ट—
ब्रजनाथ भट्ट—
ब्रह्मसूत्र-वृत्तिमरीचिका
मनोदूत
गोवर्द्धन(गट्टूलालजी) भा. म.
मारुत शक्ति
सत्सिद्धान्त मार्तण्ड
वेदान्त चिंतामणि
सत्स्नेह भाजन

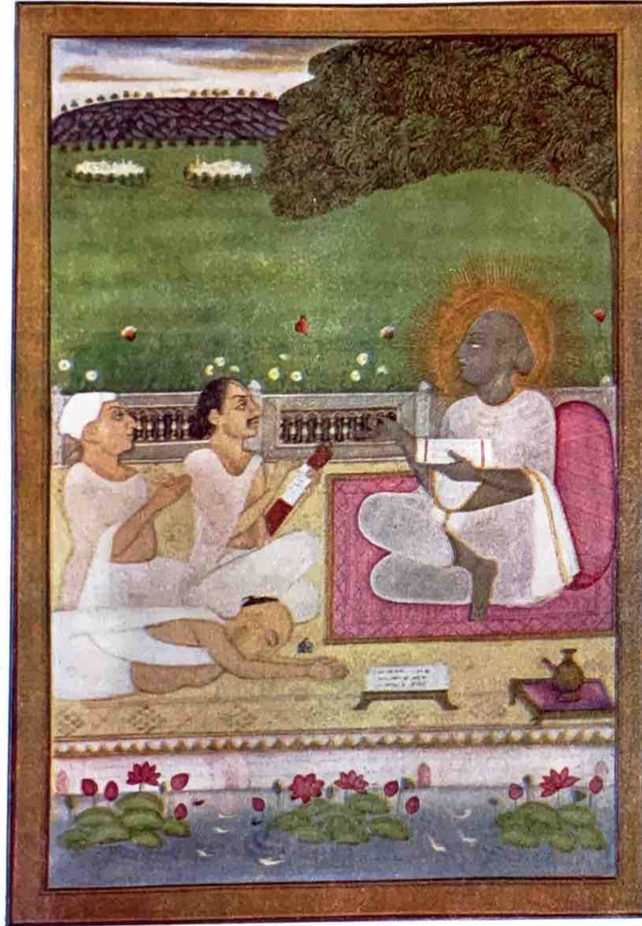
कृष्णाभिसारस्तव
कठोपनिषद् भाष्य
छान्दोग्योपनिषद् भाष्य
भगवद्गीता टीका
शुद्धाद्वैत चन्द्रोदय
अणुभाष्य टिप्पणी
रुक्मिणी चम्पू
घटखर्पर काव्य टीका
मधुसूदन—
पंचनदी वंशावली
श्रीकृष्ण "रससिंधु"— (१६४६)
रससिंधु प्रकाश ❀
स्वरूप छबीसी ❀
रससिंधु पचीसी ❀
श्यामाश्याम ❀
हास्यपंचरत्न ❀
रससिंधुविलास ❀
बसन्तपचीसी ❀
फागरसरंग ❀
षट्ऋतु वर्णन ❀
मनोदूत कल्पद्रुम ❀
राधाष्टक ❀
गंगाष्टक ❀
यमुनातरंगिणी ❀
बसन्तचालीसी ❀
दानहुलास ❀
गानमनरंजन ❀
मानमंजरी ❀
यमुना आख्यान ❀
रसनायक— (१८७२)
विरहविलास ❀

१२......

देवप्रयाग
चक्रधर जोशी—

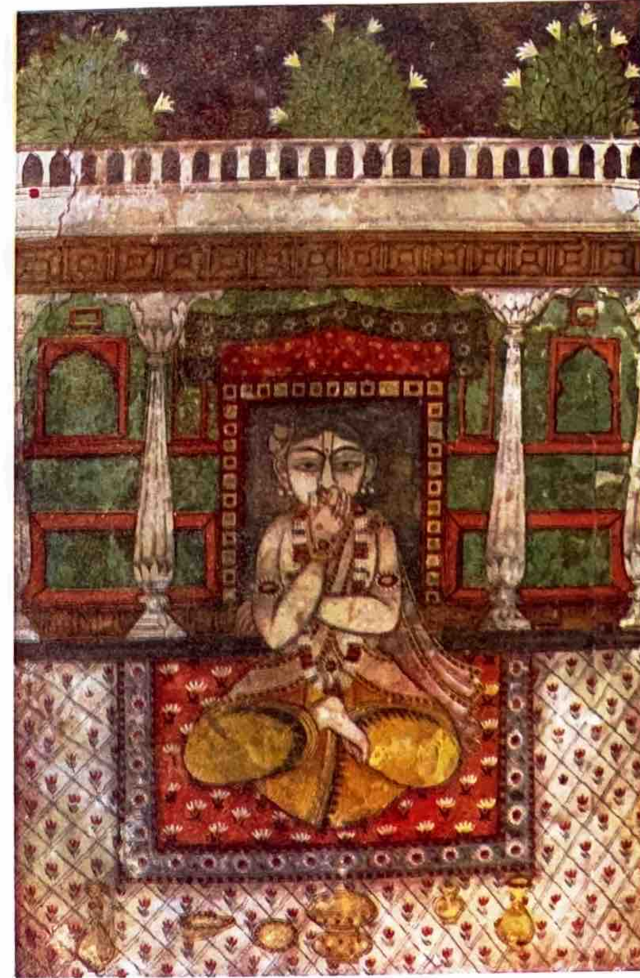
विशेष—प्रस्तुत तालिका में विशिष्ट ग्रन्थकारों के विशिष्ट वा प्राप्त ग्रंथों का ही निर्देश हो सका है। तदतिरिक्त और भी हमारे यहाँ सभी पीढ़ियों में अगणित विद्वान् और उनके रचित ग्रंथ हैं—जिनका विवरण यथा समय संपूर्ण गवेषणा के अनन्तर दिया जायगा। जिनके ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुए हैं वा स्फुट कवितादि प्राप्त हुई हैं, उनके केवल नाम इस सूची में दे दिये गये हैं। इस प्रकार यावदुपलब्ध एकत्र ग्रन्थकार संख्या ···· तथा ग्रन्थ संख्या······। जहां तक हो सका है प्राचीन एवं अर्वाचीन सभी विद्वानों की नामावली दी गई है, तथापि विस्मृति वश, किंवा अपरिचितता के कारण कोई नाम रह गए हों तो वे उनके वंशज और वे स्वयं क्षमा करें।

सम्पादक—
पो० कंठमणि शास्त्री 'देशकेन्द्र'
क० गोकुलानन्द तैलंग 'निकुंज'



महाप्रभु जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्यजी

प्राकट्य सं० १५३५ वि०] ★ [निरोधान सं० १५८७ वि०



प्रभुचरण गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी

प्राकट्य पौष कृष्णा ९ सं० १५७२ वि०] ★ [निरोधान सं० १६४२ वि०

हमारा दृष्टिविन्दु !

इतिहास हमारे विगत जीवन का—भूले हुए अतीत का एक उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। उससे हमारे आज के जीवन को भी एक प्रकाश मिलता है, एक बल और एक प्रेरणा मिलती है! हमारे इतिहास की शतशः विमल विभूतियाँ अपने आदर्श चरित्र और दिव्य प्रेरणाओं से अपने-अपने समय में हमारे राष्ट्रीय वा जातीय जीवन का निर्माण करती रही हैं।

इतिहास किसी राष्ट्र, जाति वा वंश के जीवन का भाष्य है तो वंशावलियाँ उसके लिये सूत्र-रूप। इतिहास की रक्षा और उसके साङ्गोपाङ्ग अस्तित्व के लिये वंशावलियों वा वंशवृत्तों का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे जीवन का प्रवाह अनादि काल से अविच्छिन्न रूप में चला आ रहा है। जीवन के मूलस्रोत तक पहुँचने की समस्त शृंखलाओं को हम पा नहीं सकते, तथापि अन्तिम किसी एक परम्परा वा केन्द्र-विन्दु को पकड़कर उसे अपने वर्तमान उद्भव का मूल मान लेते हैं और एक वृत्त की तरह अपने वंश की विभिन्न शाखा-उपशाखादि दलों के बिखरे रूप को उस मूल से परम्परागत ग्रन्थिबद्ध कर उसे वंशवृत्त का रूप दे देते हैं।

हमारा मूल उद्गम दक्षिण भारत का आन्ध्र देश है। सोलहवीं शताब्दी में कांकरवाड़ ग्राम-वासी पञ्चद्राविड़ान्तर्गत तैलङ्ग ब्राह्मण कुल में, जो कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तरीय शाखाध्यायी आङ्गिरस-बार्हस्पत्य-भारद्वाज त्रिप्रवरान्वित खंभंपाटिवारू अवटङ्कीय कुटुम्ब था, श्रीलक्ष्मणभट्टजी (दीक्षित) नामक एक सर्व विदित महापुरुष हुए हैं। इन्हीं के यहाँ, इनके कुटुम्ब में सौ सोमयज्ञ पूर्ण हो जाने पर स्वयं श्रीमद्भगवद्वदनानलावतार श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु का श्रीइल्लमागारु के गर्भ से प्राकट्य होकर चम्पारण्य (रायपुर सी० पी०) के सुरम्य पुनीत स्थल में वैशाख कृष्णा ११।१५३५ वि. के दिन प्रादुर्भाव हुआ। भूतल पर प्रादुर्भूत होकर आपश्री ने किस प्रकार दैवी जीवों का उद्धार किया, अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य के द्वारा उस समय सर्वत्र प्रस्तारित मायावाद का निरसन कर अपने ब्रह्मवाद, श्रीविष्णु-स्वामिमतानुवर्ति शुद्धाद्वैत-पुष्टिमार्ग वा सेवा प्रणाली आदि का स्थापन कैसे और कहाँ किया तथा अपने अशेष माहात्म्य को अपने वंश में प्रस्थापित कर अनन्तर आनुवंशिक आचार्य परम्परा द्वारा किस प्रकार विश्व का कल्याण किया: यह स्वतन्त्र इतिहास का विषय है, जिसका अनेक विद्वानों ने चरित्र-चित्रण किया है और किया जायगा। यहाँ तो हम केवल आचार्य-चरणों की वंशावली वा वंशवृत्त के सम्बन्ध में ही प्रकाश डाल रहे हैं।

श्रीमहाप्रभुजी से हमारी साम्प्रदायिक-आचार्य परम्परा, हमारी वंश-परम्परा विशिष्ट रूप से चलती है। अतएव हमारा वंश 'श्रीवल्लभ-कुल' के नाम से विख्यात है। हम गोस्वामी, गुसाईं या गोस्वामिबालक कहलाते हैं। श्रीमहाप्रभुजी ही हमारे मूल पुरुष हैं। श्रीमहाप्रभुजी के यहाँ दो पुत्र-रत्नों का जन्म हुआ, श्रीगोपीनाथजी (१५६८) और श्रीविट्ठलनाथजी (१५७२) जो 'श्रीगुसाईंजी' वा 'प्रभुचरण' नाम से सम्प्रदाय में सुविदित हैं। श्रीगोपीनाथजी के श्रीपुरुषोत्तमजी (१५८७) का जन्म हुआ, इसके आगे यह परम्परा यहीं परिसीमित हो जाती है। श्रीगुसाईंजी के दो पत्नियों—श्रीरुक्मिणी और पद्मावती से सात आत्मज और चार कन्याओं का प्रादुर्भाव हुआ, जिनके नाम ये हैं-- श्रीगिरिधरजी, श्रीगोविन्दरायजी, श्रीबालकृष्णजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीरघुनाथजी, श्रीयदुनाथजी और श्रीघनश्याम जी। श्रीगुसाईंजी ने गोकुल में स्थायी निवास करके अपने सातों पुत्रों को स्वोपार्जित सम्पत्ति के विभाजन पूर्वक प्रत्येक के माथे एक-एक निधि पधरायीं। चार कन्याएँ सहागत जातीय चार कुलों में ब्याही गईं, जिनका पृथक् वंश है, जिस पर अन्यत्र प्रकाश डाला जायगा।

इस प्रकार सात पुत्रों ने अपने पृथक्-पृथक् सात संस्थान प्रवर्त्तित किये, जो 'सात घर' वा 'गादी' के नाम से विख्यात हैं। और सम्प्रदायों की तरह हमारे यहाँ ये सातों घर "पीठ" नहीं कहलाते, अपितु भावना और इतिहास की दृष्टि से श्रीनन्दराय के घर के रूप में 'सात घर' कहलाते हैं। इन्हीं सात घरों के वंशवृत्त हम आज एक नवीन और सर्वथा मौलिक रूप में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमारी दृष्टि में आज तक के प्रस्तुत अनेक प्राचीन और नवीन लिखित, मुद्रित वा लिथो रूप में वंशवृत्त, कल्पवृत्त वा वंशावलियाँ आईं और सभी में एक ही पद्धति पायी गयी—वह यह कि, सातों लालजियों के घरों का वंश-विस्तार वहीं तक किया गया है, जहाँ तक कि उन-उन घरों की औरस-परम्पराएँ चलती हैं। इस दृष्टि से आज सातों पुत्रों में से केवल श्रीगिरधरजी और श्रीयदुनाथजी के ही दो वंश चल रहे हैं और उन्हीं की परम्पराएँ सर्वत्र व्याप्त हैं, अर्थात् शेष बालकों की वंश समाप्ति हो गयी है और इन्हीं दो घरों से प्राप्त दत्तकों से उन शेष घरों की आज तक की परम्पराएँ विद्यमान हैं। यह होते हुए भी उन शेष घरों की किसी भी वंशवृत्त में श्रीगुसाईंजी से लेकर आज तक की समस्त क्रमागत आनुवंशिक परम्पराएँ व पीढ़िया हम नहीं पा सकते। उदाहरणार्थ--तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी के छः पुत्रों के वंशों में से श्रीद्वारकेशजी (१६३०) तथा श्रीपीताम्बरजी (१६३६) के वंश व घर क्रमशः कांकरोली और सूरत में आज भी विद्यमान हैं। किन्तु सभी वंशवृत्तों में श्रीद्वारकेशजी की तिलाकायत-परम्परा श्रीब्रजभूषणजी (१८३५) और श्रीपीताम्बरजी की श्रीब्रजरायजी (१८६२) तक ही उल्लिखित मिलेगी। आज जब कि तृतीय गृह या इसी प्रकार सातों घर विद्यमान हैं, उनके उत्तराधिकारी व तिलकायत और उनके कुटुम्ब उपस्थित हैं, तब उनका परम्परागत निदर्शन क्यों नहीं होना चाहिये था?

हुआ यह है कि सभी वंशवृत्त-निर्माताओं ने जिस घर की जो परम्परा जहाँ समाप्त हो गई है, वहाँ से आगे जो भी बालक दत्तक (गोद) रूप में, किसी दूसरे घर से आकर उस घर में बैठे हैं, उसको और उसके आगे की आज तक की परम्परा को उस घर में न जोड़ कर वहीं श्रीगिरिधरजी या श्रीयदुनाथजी अथवा तदन्तर्गत घरों में, जहाँ से वे दत्तक आये हैं, चलने दिया है और इस प्रकार आज के सातों घर और तदन्तर्गत कुटुम्ब इन्हीं दो घरों के वंशवृत्तों में मिल सकते हैं। दत्तक भी जो भिन्न-भिन्न घरों में आये वा गये हैं, वे भिन्न भिन्न कुटुम्बों में वा से आये वा गये हैं। अतएव किसी एक कुटुम्ब की मूल आचार्यों तक सम्पूर्ण परम्परा बताने के लिये हमें अनेक कुटुम्बों का मंथन करना पड़ेगा–जनश्रुतियों का सहारा लेना पड़ेगा। फिर भी हम निश्चित रूप से वे नाम कहाँ से आये वा गये हैं, यह नहीं जान सकते, क्योंकि दिये हुए वंशवृत्तों में, किस परम्परा वा शाखा में कौन–कहाँ से गोद आया वा गया है, यह निर्दिष्ट नहीं किया गया है। हाँ, गोस्वामियों के घरों में–वह भी सर्वत्र नहीं–अवश्य इस प्रकार की क्रमागत परम्परा सहित उन उन घरों के वंशवृत्त, कल्पवृत्त वा वंशावलियाँ प्राप्त होती हैं; किन्तु उनमें भी गोद आने-जाने के स्थान का उल्लेख नहीं!

वंशवृत्तों की आज तक की पद्धति से किसी भी घर की श्रीगुसाईंजी से लेकर विद्यमान समय तक की पीढ़ियाँ गिनने में बड़ी असुविधा और भ्रम पड़ जाता है क्योंकि किसी भी घर का सम्पूर्ण वंशवृत्त हमारे सामने उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में आशौच, अधिकार आदि प्रसङ्गों पर बड़ा मतिभ्रम हो सकता है! यह तो एक निश्चित व्यवहार और वैधानिक नीति की बात है कि जब कोई भी बालक अपने घर से दूसरे घर में जाकर गोद बैठ जाता है, भले ही एक कुटुम्ब में हो या कुटुम्बान्तर में, उसका अपने मूलवंश, घर वा पितृकुल से कोई भी संबंध वा बन्धन--वैधानिक, शास्त्रीय, व्यावहारिक-नहीं रहता! उसे न अपने मूल घर से उत्तराधिकार प्राप्त है, न सापिण्ड्य आशौच और न किसी प्रकार का जातीय व सामाजिक व्यवहार ही। इसी प्रकार निकटतम उत्तराधिकारी ही गोद लिया जाय, यह अनिवार्य नहीं होता–गोद किसे और कहाँ से लेना, यह गोद लेने वाले की स्वतन्त्रता पर है। हाँ, किसी समाप्त-वंश के घर पर उत्तराधिकार अवश्य ही उसी कुटुम्ब के निकटतम व्यक्ति का होता है। हमारे यहाँ तो यद्यपि अपने ही कुल–वल्लभ वंशज-गोस्वामियों में से ही दत्तक लिये वा दिये जाते हैं, अतः गोत्रोच्छेद की स्थिति नहीं आती, तथापि दत्तक का स्वरूप तो रहता ही है, भले ही फिर दत्तक-विधान हो या न हो! गोद की स्थिति में उनकी पीढ़ियों के अनुसार उत्तराधिकार, आशौच और जातीय व्यवहार भी प्रायः पृथक् हो जाते हैं। प्रचलित वंशवृत्तों में जहाँ समानान्तर पीढ़ियों का पता नहीं लगता वहाँ समकालीन पुरुषों का भी परिज्ञान नहीं हो पाता, जो इतिहास समझने के लिये एक अच्छा सूत्र है। यह कठिनता तब और हो जाती है जब समान नामधारी एक ही वंश में कई पुरुषों का उल्लेख मिलता है।

इस दृष्टि से प्रत्येक घर वा तदन्तर्गत कुटुम्बों की मूल आचार्यों से लेकर आज तक की आनुवंशिक परम्परा दिखलाते हुए पृथक्-पृथक् स्वतन्त्र वंशवृत्त निर्माण करने की आवश्यकता अनिवार्यतः अनुभव की गयी और हमने अनेक वंशवृत्त-वंशावलियों का संकलन, अनुशीलन और गवेषण कर वर्त्तमान में जितने भी गोस्वामियों के घर विद्यमान हैं, उनके पृथक्-पृथक वंशवृत्त तैयार किये। इनमें जिन-जिन बातों का विशेष ध्यान रखा गया है, वे इस प्रकार हैं--

(i) किसी भी घर की शाखा वहीं से पृथक् की गयी है, जहाँ से उसके मूल-पुरुष पृथक् होते हैं। इस पद्धति से यह भी सुविधा रही है कि एक वंश एक ही पत्र पर व्यवस्थित रूप में आ गया है। उदाहरणार्थ–तृतीय पुत्र श्री बालकृष्ण जी के घर के जो आज कांकरोली और सूरत के दो घर विद्यमान हैं, उन्हें पृथक् पृथक् दो वृत्तों में मूल श्रीद्वारकेशजी और श्रीपीताम्बरजी से ही अलग करके दिखा दिया गया है।

(ii) जिन भाइयों के वंश परिसमाप्त होगये हैं, उन्हें क्रमशः सुविधानुसार किसी भी भाई के विद्यमान वंशों के साथ जोड़ दिया गया है।

(iii) जब एक घर के कई भाग करने पड़े हैं तो उनका निदर्शन उस घर की संख्या के साथ अंक (बटे) देकर उसके अन्तर्गत आने वाले उपगृहों के नामोल्लेख सहित कर दिया गया है।

(iv) वंशवृत्तों में जिन घरों, शाखाओं वा दत्तक गये व्यक्तियों का निदर्शन उस मूल-पुरुष से सम्बन्ध रखते हुए अपेक्षित नहीं है, उसे देखो (····अमुक गृह), अथवा 'गोद गये (····अमुक गृह में) लिख कर वहाँ छोड़ दिया गया है। उदाहरणार्थ—तृतीय ।१ गृह में केवल श्रीद्वारकेशजी (काँकरोली) का वंशवृत्त मिलेगा-

दूसरे छहों पुत्रों वा श्रीद्वारकेशजी के भाइयों अथवा श्रीपुरुषोत्तमजी (१७३८) सरीखे गोद गये आदि नामों की वंश-परम्परा निर्दिष्ट संख्या वाले वंशवृत्त में ही मिलेगी।

(v) गोद गये वा आये हुए व्यक्तियों को निर्दिष्ट संख्या वाले वंशवृत्त में सरलता और निश्चित रूप में पाया वा पहिचाना जा सके, इसके लिये वे व्यक्ति, जिनके यहाँ गोद गये वा जिनके यहाँ से गोद आये हैं, उनके पितृनामों का जन्म संवत सहित उल्लेख एक संकेत-चिह्न देकर विशेष टिप्पणी में प्रत्येक पत्र के एक पार्श्व में कर दिया गया है। जहाँ किसी वंशवृत्त के व्यक्ति उसी वंशवृत्त में गोद आये वा गये हैं, उनके निदर्शन के साथ केवल 'गोद आये-गये' का उल्लेख कर टिप्पणी में उसी प्रकार जन्म संवत सहित पितृनाम दे दिया गया है।

(vi) जिन व्यक्तियों के कोई विशेष उपनाम, निवासस्थान, ऐतिहासिक वा साम्प्रदायिक महत्व प्राप्त हैं, उनके साथ उनका उल्लेख भी कर दिया गया है। इस दृष्टि से उनके कार्य-कलाप, निवास, क्रमशः संस्थान-प्रतिष्ठापन आदि का भी संकेत मिल जाता है।

(vii) वंशवृत्त की पृथक्-पृथक् मूल पुरुष व भाइयों की परम्परा वा पीढियों को इस ढंग से रखा गया है कि मूल पुरुष से समान पीढी में आने वाली वंश की सभी सन्तति एक ही श्रेणी में वा पंक्ति में समानान्तर रूप में दिखती रहें, जिससे कि पीढी गिनने में सुविधा के साथ-साथ यह निदर्शित होता रहे कि एक भाई की शाखा की अमुक सन्तति दूसरे भाई की शाखाकी सन्तति किस कोटि में आती है—भ्रातृ, पितृ वा पितृव्य-कोटि में और किस पीढी और श्रेणी में! उदाहरणार्थ— तृ०।१ गृह में श्रीद्वारकेशजी (१६३०) श्रीव्रजभूषणजी (१६३६), श्रीव्रजालङ्कारजी (१६४१) आदि भाइयों से चतुर्थ पीढी में आने वाले श्रीगिरिधरजी (१७४५), श्रीव्रजभूषणजी (१७१५), श्रीपुरुषोत्तमजी (१७३८) आदि सभी क्रमशः एक ही पंक्ति, समान पीढी में दिख रहे हैं।

(viii) एक शाखा से उठ कर दूसरी शाखा में गोद जाकर जुड़ जाने की स्थिति में कभी-कभी अमुक व्यक्ति अपनी मूल पीढ़ी से ऊपर वा नीचे होगये हैं। किन्तु जब अमुक व्यक्ति गोद जाता है तो निश्चित रूप से उसे उस व्यक्ति के नीचे सन्तति-स्थान में आना पड़ेगा—फिर भले ही गोद जाने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति के पितृ-पितृव्य, भ्रातृ अथवा पुत्र-पौत्रादि कोटि में हो। उदाहरणार्थ— तृ०।१ गृह में श्रीपुरुषोत्तमजी (१८४७) जब भ्रातृ-कोटि के श्रीव्रजभूषणजी (१८३५) के यहाँ गोद जाते हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें सन्तति-स्थान में लाकर—एक पीढ़ी उतार कर वंशवृत्त में दिखाया गया है। इसी तरह श्रीविट्ठलनाथजी (१६५०) जब अपने प्रपितामह कोटि के श्रीगोपालजी (१६१०) के यहाँ गोद जाते हैं, तो वे सहसा अपने श्रीव्रजभूषणजी (१६६८) की भ्रातृ-कोटि से दो पीढ़ी ऊपर उठ कर अपनी पितामह की कोटि में आ जाते हैं। इस प्रकार का व्यतिक्रम गोद की स्थिति में अनिवार्य है।

(ix) प्रत्येक व्यक्ति के साथ उनके जन्म-संवत् यथोपलब्ध रूप में दे दिये गये हैं—कुछ के सम्बन्ध में द्वैविध्य प्राप्त होने पर भी जो ऐतिहासिक संगति से हमने उचित समझे हैं, उन्हें ही निश्चित रूप से दे दिये हैं। कुछ विद्यमान बालकों के संवत् पूछने पर भी अज्ञात होने से रह गये हैं। संवतों से उनकी ऐतिहासिक स्थिति और संगति लगाने एवं ऐतिह्य-निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी एवं वंशवृत्तों में सरलता पूर्वक प्राप्त करने वा पहिचानने में सुविधा रहेगी।

(x) जिन व्यक्तियों की वंश-परम्परा समाप्त हो गयी है वा अज्ञात है, उनके नामों के नीचे ० और विद्यमान व्यक्तियों के नीचे ❀ चिह्न देकर उनके निवास-स्थान का उल्लेख कर दिया है।

(xi) साधारणतया श्रीगुसाईंजी से लेकर अद्यावधि विद्यमान गोस्वामियों तक कोई १५ पीढ़ी के आस-पास व्यतीत हुई हैं। किन्तु अनेक वंशवृत्तों में बहुत थोड़ी पीढ़ी प्राप्त होंगी। उदाहरणार्थ—चतुर्थ एवं सप्तम गृह में आज तक कुल ८-९ ही पीढ़ी प्राप्त हैं। उसका कारण यह है कि इन घरों में तथा ऐसे अन्य कुछ घरों में भी जो गोद-परम्परा चली है, वह बीच में बहुत लम्बा व्यवधान ले-लेकर। अर्थात् जब किसी घर की कोई परम्परा निस्संतति समाप्त हो जाती है, तो बहुत समय तक उस घर पर अधिकार उस निस्संतान-गोस्वामी की बहूजी का अथवा निकट कुटुम्बी जनों का निजी रूप से रहा है और अपनी अन्तिमावस्था में—अथवा यदि उन बहूजी (सास) की भी कोई बहूजी (बहू) हुई तो उनकी अन्तिमावस्था में—अन्य बालक गोद लिये गये हैं, जिससे कि उस बीच में कोई दो पीढ़ी का अन्तर पड़ गया है। अतएव इतनी थोड़ी पीढ़ी देखकर किसी को परम्पराओं की साङ्गोपाङ्गता पर भ्रम हो सकता है, परन्तु वस्तुतः वे परम्पराएँ कम होते हुए भी पूर्ण और प्रामाणिक हैं।

(xii) इन वंशवृत्तों में यद्यपि क्रमशः ज्येष्ठ संतति की परम्परा देखते हुए सभी घरों की तिलकायत-परम्परा का निदर्शन हो जाता है; तथापि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अमुक कारणवश ज्येष्ठ पुत्र तिलकायत न होकर उनके कनिष्ठ हुए हैं अथवा ज्येष्ठ पुत्र की वंश-समाप्ति अथवा अल्प-वय में निधन के अनन्तर उनके भ्राता उस घर के तिलकायत हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में केवल ज्येष्ठ पुत्रों की परम्परा गिनने से ही उस घर के समस्त टीकैतों की गणना नहीं होगी। इस सम्बन्ध में तत्तद्गृहों से पृथक् जानकारी लेनी होगी। हमने सभी घरों की तिलकायत परम्परा मँगायी थी, किन्तु खेद है कि अधिकांश महानुभावों ने हमें यह जानकारी नहीं भेजी। अतः हम टीकैत परम्परा का पृथक् निदर्शन नहीं कर सके हैं।

(xiii) किसी-किसी घर में ऐसा हुआ है कि एक ही व्यक्ति के दूसरे किसी घर भी गोद जाकर उनका अधिकार दोनों वा कभी-कभी दो से भी अधिक घरों पर रहा है और अनन्तर उनकी संततियों में उन घरों का विभाजन हुआ है। उदाहरणार्थ—प्र०।५ गृह में श्रीजीवनलालजी, पोरबन्दर (१६ ६ के पुत्र श्रीरणछोड़लालजी (१६३८) द्वि०।२ गृह (लालबाबा) में श्रीघनश्यामजी १६२८) के यहाँ भी गोद जाकर दोनों घरों के अधिपति रहे हैं और अनन्तर उनकी दो सन्ततियों में विद्यमान पोरबन्दर और लालबाबा के घरों का पृथक्करण हुआ है। यही संयुक्त अधिकार की स्थिति चतुर्थ पञ्चम गृह में श्रीवल्लभलालजी (१६४८) (गोकुल-कामवन) के समय से आज तक रही है। ऐसी स्थिति में हमने दोनों घरों में उन व्यक्तियों को दिखलाये हैं—विभाजन के साथ परम्पराओं को पृथक् किया है।

(xiv) जिन घरों की वंश-परम्परा समाप्त हो गयी है और वे उत्तराधिकार की दृष्टि से जिस व्यक्ति के अधिकार में आये हैं, उन सभी घरों में पृथक्-पृथक् उस व्यक्ति को हमने नहीं दिखाया है; क्योंकि वे उन सभी घरों में गोद नहीं गये हैं—उत्तराधिकार प्राप्त हैं। उदाहरणार्थ—तृ०।१ गृह में यद्यपि श्रीरणछोड़जी, बुरहानपुर (१७१५) का एक स्वतन्त्र घर है, जिनकी परम्परा में श्रीगोकुलनाथजी (लल्लूजी, सूरत) (१८००) का घर भी आता है। किन्तु क्योंकि यह घर वंश-समाप्ति के अनन्तर कांकरोली के तिलकायत के ही अधिकार में आता है, अतः तत्कालीन कांकरोली के तिलकायत की परम्परा उसमें भी पृथक् नहीं दिखायी गयी है।

(xv) कभी-कभी ऐसा होता है कि एक व्यक्ति अपनी बहूजी और एक पुत्र को छोड़कर गत हो जाते हैं और अनंतर उस पुत्र के भी सन्तति न होने और गत हो जाने के कारण उनकी बहूजी रह जाती हैं, इस प्रकार उस घर में सास-बहू, दो उत्तराधिकारी रहते हैं। अब किसी विमनस्कता के कारण दोनों पृथक्-पृथक् दो व्यक्ति गोद लेते हैं। किन्तु वैधानिक और जातीय-पद्धति के अनुसार गोद लेकर किसी घर का किसी को उत्तराधिकारी वा टीकैत बनाने का अधिकार सास को ही होने से उन बहूजी (सास) के लिये हुए व्यक्ति ही उस घर के टीकैत होते हैं और बहूजी (बहू) के द्वारा लिये हुए व्यक्ति अनन्तर आने वाले—यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र की परम्परा में उन्हीं (बहू) के द्वारा लिये हुए व्यक्ति की सन्तति आती है। उदाहरणार्थ—प्र०।७ गृह कोटा में श्रीमथुरेशजी के घर के टीकैत रूप में श्रीरणछोड़लालजी (१६०८) के बहूजी द्वारा लिये हुए श्रीद्वारकेशजी (१६४४) यद्यपि टीकैत हैं, तथापि आनुवंशिक ज्येष्ठ सन्तति की परम्परा के रूप में श्री जीवनलालजी १६३७) के बहूजी द्वारा गोद लिये हुए श्री दीक्षितजी (१६७१) ही प्रथम दिखाये गये हैं।

(xvi) हमारे यहां कभी कभी ऐसी भी स्थिति आती है कि किन्हीं गोस्वामी वा बहूजी के द्वारा अमुक बालक गोद ले लिये जाते हैं। अनन्तर अमुक कारणों से दूसरे बालक को गोद ले लिया जाता है। उदाहरणार्थ—वर्तमान में श्रीगोपेश्वरलालजी (१६४६) के बहूजी ने द्वितीय/१ गृह (श्रीविट्ठलनाथजी) में श्रीगिरिधरलालजी (इन्दौर) को एक बार गोद ले लिये है, अब किसी कारण से पुनः प्र./६ गृह से श्रीकृष्णजीवनजी (बम्बई) के पुत्र श्रीश्यामसुन्दरजी को गोद ले लिया है। ऐसी विवादास्पद स्थिति में सम्प्रति हमने पूर्व दत्तक श्रीगिरधरलालजी को ही इस घर की तिलकायत परम्परा में दिखाया है—द्वितीय दत्तक को नहीं। हम अपनी ओर से—कौन तिलकायत हैं, कौन नहीं—इसका कोई निर्णय नहीं देना चाहते। जो वस्तु हमारे सामने अभी तक थी, हमने उसे अविकल दे दिया है। दत्तक लेने देने वाले दोनों पक्षों में आगे जो भी वैधानिक रीति से समाधान हो जायगा और अन्तिम निर्णीत वस्तु दोनों पक्षों की सहमति से हमें विदित होगी, हम तदनुसार उल्लेख कर देंगे। यों हम अपने दृष्टिविन्दु से इस विषय में दोनों पक्षों से तटस्थ हैं—हमें किसी भी पक्ष से न कोई आपत्ति है, न किसी के प्रति समर्थन।

(xvii) सम्प्रदाय में, जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है, श्रीगुसाँईजी के सात पुत्रों के सात घर विद्यमान हैं। इनमें भी अद्यावधि षष्ठ गृह के सम्बन्ध में विवाद है।

इन वंशवृत्तों का उद्देश्य प्रत्येक घर की आज तक की आनुवंशिक परम्परा दिखाना है–किस घर का तिलकायतत्व, उत्तराधिकार अथवा अमुक गृहत्वेन आचार्यत्व की मान्यता किसे मिलना चाहिये, इस तथ्य वा विवाद का निर्णय करना नहीं। अतएव कोई भी षष्ठ गृह मान्य किये जाँय: हमारा इस बात से प्रस्तुत वंशवृत्त के कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं रहा है।

इस प्रकार प्रस्तुत पद्धति और सर्वथा मौलिक दृष्टिविन्दु से इन वंशवृत्तों को तैयार किया गया है। अब सर्वसाधारण की जानकारी के लिये हम यहाँ सभी घरों का वर्तमान संक्षिप्त परिचय और दे रहे हैं -

प्रथम गृह—

यह श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु के द्वितीय तनुज गुसांई श्रीविट्ठलनाथजी के प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१५९७) की परम्परा है। श्रीगिरिधरजी के तीन पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१६३०) के अल्प वय में गत हो जाने पर प्रथम तिलकायत द्वितीय पुत्र श्रीदामोदरजी (१६३२) हुए। बड़े होने के कारण आपके माथे श्रीनाथजी एवं श्रीनवनीतप्रियाजी विराजे और प्रथम गृह के तिलकायत रूप में श्रीमथुरेशजी उनके अनुज श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) (१६३४) के यहाँ पधराये गये। प्रथम गृह के अन्तर्गत निम्नलिखित वंशवृत्त प्रस्तुत किये गये हैं—

(i) **प्रथम/१ गृहः नाथद्वारा (तिलकायत)—**

श्रीदामोदरजी के द्वितीय पुत्र **श्रीविट्ठलरायजी** (१६५७) के प्रथम पुत्र **श्रीगिरिधरजी** (१६८६) से प्रारम्भ होकर यह घर सम्प्रदाय का प्रमुख पीठ-स्थान तिलकायत वा टीकैत (श्रीनाथजी) का घर कहलाता है, जिसमें श्रीनाथजी एवं श्रीनवनीतप्रियाजी विराजते हैं। इसके वर्तमान अधिपति गो॰ नि. श्रीगोविन्दलालजी म. हैं। इसी घर के अन्तर्गत श्रीविट्ठलरायजी के द्वितीय पुत्र **श्रीकाकावल्लभजी** (१७०३) के वंश में श्रीगोकुलाधीशजी, श्रीलालजी, अमरेली, पोरबन्दर (गोपीनाथ जी हवेली), बड़ामन्दिर (बम्बई) आदि घर आते हैं।

(ii) **प्रथम/२ गृह: बम्बई (गोकुलाधीशजी)**—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के सात पुत्रों में से प्रथम पुत्र **श्रीगिरिधरजी** (१७२८) का वंश है। श्रीगिरिधरजी की छठी पीढ़ी में आगत द्वितीय **श्रीमथुरानाथजी** (कोटा) (१८२८) के प्रथम पुत्र **श्रीद्वारकेशजी** (घनूजी, जतीपुरा) (१८५२) से यह घर पृथक् चलता है। इसके वर्तमान अधिपति श्रीमुरलीधरजी, वेट (१९१३) के पुत्र गो॰ श्रीगोपिकावल्लभजी (मगनजी) म. हैं, जिनके माथे.......... विराजते हैं।

(iii) **प्रथम/३ गृह: बम्बई (श्रीलालजी)**—यह घर उक्त श्रीमथुरानाथजी के चतुर्थ पुत्र **श्रीव्रजरत्नजी** (मगनजी) (१८६७) से पृथक होता है। इसके वर्तमान अधिपति श्रीवागधीशजी (१९४१) के पुत्र गो॰ श्रीविट्ठलेशजी म. हैं, जिनके माथे .... विराजते हैं।

(iv) **प्रथम/४ गृह: बम्बई-वेट (अमरेली)**—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के द्वितीय पुत्र **श्रीमुरलीधरजी** (१७३१) का वंश है। इसके वर्तमान अधिपति गो॰ श्रीपुरुषोत्तमलालजी म. हैं, जिनके माथे .... विराजते हैं।

(v) **प्रथम/५ गृह: पोरबन्दर (गोपीनाथजी हवेली)—कटरा** वाला मन्दिर (गोकुल)—यह श्रीकाकावल्लभजी के तृतीय पुत्र श्रीगोपालजी (१७३३) का वंश है। श्रीगोपालजी के तृतीय पौत्र **श्रीलक्ष्मणजी** (१७८७) के प्रथम पुत्र **श्रीद्वारकानाथजी** (१८१३) से पृथक् चलता है। इसके वर्तमान अधिपति गो॰ श्रीगोविन्दरायजी (विट्ठलनाथजी म.) हैं, जिनके माथे... विराजते हैं।

उक्त श्रीलक्ष्मणजी के द्वितीय पुत्र **श्रीगोबर्धनजी** (१८१७) से पृथक् होकर कटरावाला मन्दिर (गोकुल) का घर चलता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीगोपिकावल्लभजी म॰ (बम्बई) के पुत्र गो॰ श्रीमुरलीधरजी म॰ हैं, और जिनके माथे.......... विराजते हैं।

(vi) **प्रथम। ६ गृह: बम्बई (बड़ामन्दिर)**—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के सप्तम पुत्र **श्रीगोकुलनाथजी** (१७५०) का वंश है। इसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीकृष्णजीवनजी (गिरिधरजी) म॰ हैं, जिनके माथे श्रीबालकृष्णलाल बिराजते हैं।

(vii) **प्रथम। ७ गृह: कोटा (श्रीमथुरेशजी), कृष्णगढ़**—यहाँ से श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) का वंश चलता है। श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के चार पुत्रों में से प्रथम पुत्र **श्रीवल्लभजी** (प्रभुजी) (१६६०) का–प्रथम गृह के तिलकायत (श्रीमथुरेशजी) का यह घर है। श्रीवल्लभजी (प्रभुजी) से नवीं पीढी में प्रथम **श्रीरणछोड़लालजी** (१९०८) से इस घर की दो शाखाएँ हो जाती हैं, जिनमें प्रथम श्रीरणछोड़लालजी के पुत्र **श्रीजीवनलालजी** (१९३७) का कृष्णगढ़ का घर है। इसके दत्तक रूप में वर्त्तमान अधिपति श्रीगोकुलनाथजी (१९४५) के पुत्र गो॰ श्रीदीक्षितजी म॰ हैं, जिनके माथे.......... विराजते हैं।

दूसरी शाखा श्रीरणछोड़लालजी के दत्तक पुत्र रूप में **श्रीद्वारकेशजी** (गिरिधरजी) (१९४४) का श्रीमथुरेशजी (कोटा) का घर है। इसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीरणछोड़लालजी म॰ हैं, जिनके माथे श्रीमथुरेशजी विराजते हैं! इसी घर के अन्तर्गत अहमदाबाद, चापासेनी, माण्डवी. जामनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली), कोटा (बड़ेमहाप्रभुजी) आदि घर आते हैं।

(viii) **प्रथम। ८ गृह: अहमदाबाद**—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के द्वितीय पुत्र **श्रीमथुरामल्लजी** (१६६२) का वंश है। इसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीरणछोड़लालजी म॰ हैं, जिनके माथे श्रीनटवरलाल श्यामलाल विराजते हैं।

(ix) **प्रथम। ९ गृह: चापासेनी, माण्डवी**—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के तृतीय पुत्र **श्रीगोविन्दजी** (१६७३) का वंश है। श्रीगोविन्दजी के प्रथम पुत्र **श्रीमुरलीधरजी** (१६९९) से यह घर पृथक् चलता है। श्रीमुरलीधरजी के द्वितीय पुत्र **श्रीदामोदरजी** (१७२१) की शाखा में चापासेनी का घर आता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीव्रजभूषणजी म॰ हैं और जिनके माथे.......... विराजते हैं। श्रीदामोदरजी के इस घर की, उनकी छठी पीढ़ी में, तृतीय **श्रीकृष्णजीवनजी** (कुंजालालजी) (१८८१) से पुनः दो शाखाएँ पृथक् हो जाती हैं—प्रथम शाखा में श्रीकृष्णजीवनजी के द्वितीय पुत्र **श्रीमुरलीधरजी** (१९०७) की परम्परा में उक्त चापासेनी का घर और द्वितीय शाखा में उनके पंचम पुत्र **श्रीविट्ठलेशजी** (१९१९) के पुत्र जामखंभालिया वा विलेपारला (बम्बई) के वर्त्तमान गो॰ श्रीव्रजनाथलालजी म॰ आते हैं, जिनके माथे.......... विराजते हैं।

उक्त श्रीमुरलीधरजी (१६९९) के चतुर्थ पुत्र **श्रीद्वारकानाथजी** (१७३४) से माण्डवी का घर पृथक् होकर चलता है जिसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीदामोदरलालजी म॰ हैं, और जिनके माथे.......... विराजते हैं।

(x) **प्रथम। १० गृह: जामनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली)**—यह घर उक्त श्रीगोविन्दजी के तृतीय पुत्र **श्रीबाबूरायजी** (गोपालजी) (नगर) (१७११) का वंश है। श्रीबाबूरायजी से इस घर की पृथक् शाखाएँ होजाती हैं। श्री बाबूरायजी के प्रथम पुत्र **श्रीगोवर्धनेशजी** (७२६), उनके प्रथम पुत्र **श्रीवल्लभजी** (१७५६) और उनके द्वितीय पुत्र **श्रीगिरिधरजी** (नत्थूजी) (१७६४) की परम्परा में जामनगर का घर आता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र गो॰ श्रीव्रजभूषणजी म॰ हैं और जिनके माथे.......... विराजते हैं।

उक्त श्रीवल्लभजी के तृतीय पुत्र **श्रीमाधवरायजी** (१७९६) की परम्परा में जूनागढ़ का घर आता है। इसके वर्त्तमान अधिपति श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र गो॰ श्रीपुरुषोत्तमलालजी म॰ हैं और इनके माथे.......... विराजते हैं।

उक्त श्रीबाबूरायजी के द्वितीय पुत्र **श्रीहन्नूजी** (श्रीगोकुलाधीशजी) (१७४५) की परम्परा में पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली) का घर है, जिसके वर्त्तमान अधिपति श्रीरमणलालजी (१९०४) के पुत्र गो॰ श्रीघनश्यामलालजी म॰ हैं और जिनके माथे.......... विराजते हैं।

(xi) प्रथम। ११ गृह: कोटा (**बड़े महाप्रभुजी**)—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के चतुर्थ पुत्र श्रीरामकृष्णजी (१६७५) का वंश है, जिसके वर्त्तमान अधिपति श्रीदामोदरजी (१९४६) के पुत्र गो॰ श्रीपुरुषोत्तमलालजी म॰ हैं, और जिनके माथे.......... विराजते हैं।

द्वितीय गृह—

यह श्रीगुसाईंजी के द्वितीय पुत्र श्रीगोविन्दरायजी (१५९९) का वंश है। श्रीगोविन्दरायजी के पंचम प्रपौत्र श्रीगिरिधरजी (१७४५) से इसकी पृथक् शाखाएँ हो जाती हैं।

(i) **द्वितीय। १ गृह: नाथद्वारा, इन्दौर**—

श्रीगिरिधरजी के प्रथम पुत्र **श्रीरघुनाथजी** (१७६२) से पञ्चम पीढ़ी में प्रथम **श्रीकृष्णरायजी** (१८५७) के तृतीय पुत्र **श्रीविट्ठलरायजी** (१८७६) की शाखा में इन्दौर का घर आता है, जिसके वर्त्तमान आधिपति गो॰ श्रीकृष्णरायजी म॰ हैं और जिनके माथे श्रीगोवर्धननाथजी विराजमान हैं।

उक्त श्रीकृष्णरायजी (१८५७) के चतुर्थ पुत्र **श्रीकाका गिरिधरजी** (१८८७) की परम्परा में इस वंश के तिलकायत (नाथद्वारा) का घर आता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीकृष्णरायजी म॰ के पुत्र गो॰ श्रीगिरिधरलालजी म॰ हैं और जिनके माथे श्रीविट्ठलनाथजी विराजते हैं।

(ii) **द्वितीय। २ गृह: बम्बई (लालाबाबा), नडियाद**—यह घर श्रीगिरिधरजी के चतुर्थ पुत्र **श्रीघनश्यामजी** (१७७१) का वंश है। श्रीघनश्यामजी के तृतीय पुत्र **श्रीयदुनाथजी** (१८१६) की पृथक् शाखा में बम्बई (लालाबाबा) का घर आता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति गो॰ श्रीवल्लभलालजी म॰ हैं और जिनके माथे ....विराजते हैं।

उक्त श्रीघनश्यामजी के पञ्चम पुत्र श्रीगोपालजी (१८२७) की परम्परा में नडियाद का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीरघुनाथ जी (१६५२) के पुत्र गो० श्रीव्रजभूषणजी म. हैं और जिनके माथे ······ विराजते हैं।

तृतीय गृह—

यह श्रीगुसांईजी के तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी (१६०६) का वंश है। श्रीबालकृष्णजी से ही इसकी पृथक्-पृथक् शाखाएं हो जाती हैं।

(i) **तृतीय। १ गृह: कांकरोली (द्वारकाधीश) (मथुराधीश)** यह घर श्रीबालकृष्णजी के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकेशजी (१६३०) की परम्परा में हैं। श्रीद्वारकेशजी के प्रथम प्रपौत्र श्रीगिरिधरजी (१७४५) से पुनः इसकी शाखाएँ होती हैं। श्रीगिरिधरजी के प्रथम पुत्र श्रीव्रजभूषणजी (१७६५) की परम्परा में इस वंश के तिलकायत (कांकरोली) का घर आता है, जिसका वर्तमान अधिपति लेखक स्वयं (व्रजभूषण) (प्रस्तुत वंशवृक्षों का सम्पादक) है, जिसके माथे श्रीद्वारकाधीश विराजते हैं।

उक्त श्रीगिरिधरजी के तृतीय पुत्र श्रीवल्लभजी (१७८१) की परम्परा में श्रीमथुराधीश (छोटा मन्दिर) का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीबालकृष्णलालजी (१६२४) के पुत्र गो० श्रीविट्ठलनाथजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमथुराधीश विराजते हैं।

(ii) **तृतीय। २ गृह: सूरत**—यह घर श्रीबालकृष्णजी के चतुर्थ पुत्र श्रीपीताम्बरजी (१६३६) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीव्रजरत्नलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीबालकृष्णजी विराजते हैं।

चतुर्थ गृह—

यह गोकुल का घर श्रीगुसांईजी के चतुर्थ पुत्र श्रीगोकुलनाथजी (१६०८) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीगोविंदलालजी म. (कामवन) हैं और जिनके माथे श्रीगोकुलनाथजी विराजते हैं।

पञ्चम गृह—

यह कामवन का घर श्रीगुसांईजी के पञ्चम पुत्र श्रीरघुनाथजी (१६११) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीगोविन्दलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी विराजते हैं।

षष्ठ गृह—

यह घर श्रीगुसांईजी के षष्ठ पुत्र श्रीयदुनाथजी (१६१५) का वंश है। श्रीयदुनाथजी से ही इसकी शाखाएँ होजाती हैं।

(i) षष्ठ। १ गृह: शेरगढ़ (वड़ौदा)—यह घर श्रीयदुनाथजी के प्रथम पुत्र श्रीमधुसूदनजी (१८३६) का वंश है। इस घर में सम्प्रति कोई बालक तिलकायत नहीं है—यह श्रीगिरिधरलालजी (१६२३) के बहूजी के ही आधिपत्य में सम्प्रति है जिनके माथे श्रीकल्याणरायजी विराजते हैं।

(ii) षष्ठ। २ गृह: मथुरा (श्रीमदनमोहनजी-दाऊजी) (श्रीछोटे मदनमोहनजी)—यह घर श्रीयदुनाथजी के द्वितीय पुत्र श्रीरामचन्द्रजी (१८३८) का वंश है। श्रीरामचन्द्रजी से छठी पीढ़ी में द्वितीय श्रीव्रजपालजी (१८३६) से इसकी शाखाएँ होजाती हैं। श्रीव्रजपालजी के द्वितीय पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी (१८७५) की परम्परा में मथुरा का श्रीमदनमोहनजी-दाऊजी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीबालकृष्णलालजी (१६२४) के पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

उक्त श्रीव्रजपालजी के तृतीय पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजी (१८७६) की परम्परा में मथुरा के छोटे मदनमोहनजी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीव्रजरमणजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

(iii) षष्ठ। ३ गृह: काशी – यह घर श्रीयदुनाथजी के तृतीय पुत्र श्रीजगन्नाथजी (१६४२) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीत्रिलोकीभूषणजी (मुरलीधरजी) म. हैं जिनके माथे श्रीमुकुन्दरायजी गोपाललालजी विराजते हैं।

सप्तम गृह—

कामवन का यह घर श्रीगुसांईजी के सप्तम पुत्र श्रीघनश्यामजी (१६२८) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीरमणलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

इस प्रकार हमने अधिकाधिक उपयोगी, सरल और स्पष्ट पद्धति से इन सातों घरों के वंशवृक्षों को तैयार किया है। हमने यावदुपलब्ध साधन-सामग्री से इन्हें यावच्छक्य प्रामाणिक, परिष्कृत और व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न किया है। इन वंशवृक्षों के मिलान और संशोधन के लिये हमने सभी घरों को इसकी प्रतिलिपियाँ भेजी थीं, किन्तु खेद है कि पर्य्याप्त प्रतीक्षा करने पर भी बहुत कम घरों से हमें संशोधन, परिवर्तन वा परिवर्द्धन प्राप्त हुए हैं। जिन घरों ने हमें इस सम्बन्ध में समुचित निर्देश वा प्रकाशन के लिये प्रोत्साहन और प्रेरणा सहित सहमति दी है, हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। जिन महानुभावों ने हमें पत्र का उत्तर देने का भी श्रम नहीं लिया और ऐसी उदासीनता से इस महत्वपूर्ण कार्य का मूल्याङ्कन किया है, उनके प्रति भी हम धन्यवाद ही प्रकट करते हैं! प्रस्तुत संस्करण बहुत थोड़ी संख्या में मुद्रित कराया है—इसी दृष्टि से कि एक बार जिस किसी भी रूप में वस्तु सामने आजाय, फिर क्रमशः उसमें संशोधन-परिमार्जन तो होता रहेगा। अग्रिम संशोधित संस्करण आर्ट पेपर पर सचित्र और सजधज के साथ निकालने का विचार है, जो श्रीद्वारकाधीश अपने कृपाबल से यथासमय पूर्ण करेंगे।

प्रस्तुत प्रकाशन में हम निम्नलिखित प्रमुख संस्था वा व्यक्तियों का भी स्मरण दिलाते हैं, जिनकी संग्रहीत, पूर्वलिखित वा प्रकाशित साहित्य सामग्री का हमने अपने कार्य में समुचित सहयोग वा उपयोग लिया है।

१. वल्लभीय वंशकल्पवृक्ष: राजाराम गंगादास गुर्जर राजनगर (१७७६) कृत.
[सरस्वती भण्डार विद्याविभाग कांकरोली: बन्ध हिन्दी ६०१७]
२. आचार्य वंशावली: केशवकिशोर (१६८०) कृत
३. वंशकल्पवृक्ष: (संस्कृत) निर्भयराम कृत
४. श्रीमद्वल्लभाचार्यनी वंश नी वंशावली: पेटलादी रणछोड़दास व्रजजीवनदास कृत
५. श्रीवल्लभवंशावली: जगतानन्द कृत

आशा है, हमारे गोस्वामिबन्धुओं एवं वैष्णवों को यह संग्रह उपादेय, रुचिकर और ऐतिह्य-निर्माण में सम्यक् सहायक सिद्ध होगा। हम यहाँ अग्रिम प्रकाशन की सफलता के लिये श्रीप्रभु से आन्तरिक कामना करते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। शम्.

भवदीय—

श्रीकृष्णजयन्ती, २००४ वि.
कांकरोली.

गो० श्रीव्रजभूषण शर्मा
मन्त्री:
श्रीमद्वल्लभवंशज गो. परिषद्

प्रथम/१ गृह : नाथद्वारा (तिलकायत)

१५३५ श्रीमहाप्रभुजी

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ श्रीगुसाईंजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० | १५९७ गिरिधरजी | १५९९ गोविन्द्रायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०३ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० | १६३२ दामोदरजी | १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) (देखो प्र.।७ गृ.)

१६५४ बालकृष्णजी ० | १६५७ विट्ठलरायजी

१६८६ गिरिधारीजी | १६९७ गोविन्दजी | १७०० बालकृष्णजी | १७०३ काकावल्लभजी (देखो प्र.।२गृ.)

१७११ दामोदरजी (बड़े दाऊजी) | १७१८ कल्याणरायजी ० | १७२२ मोहनजी | १७२२ द्वारकेशजी | १७२५ गोपीनाथजी ०

१७४३ विट्ठलरायजी | १७४५ ★ गिरिधरजी (गोद गये द्वि. १ गृ. में) | १७४८ मुरलीधरजी ० | १७७५ मथुरानाथजी ० | १७७६ दामोदरजी ० | १७८१ गोविन्दजी ० | १७४७ जगन्नाथजी ० | १७५८ जीवनजी ०

१७६३ गोवर्धनेशजी ० | १७६६ गोविन्दजी | १७७४ मुरलीधरजी | १७७७ बालकृष्णजी

१८२३ दामोदरजी ० | १८२५ गिरिधारीजी | १८२८ गोकुलनाथजी ० | १८०३ गोपेश्वरजी ० | १८११ गोकुलनाथजी | १८१६ श्रीलालजी ० | १८१९ जीवनजी ०

१८४१ श्रीलालजी ० | १८४४ विट्ठलरायजी ० | १८५१ चिम्मनजी ० | १८५३ दामोदरजी (दाऊजी) | १८५५ गोपीनाथजी ० | १८५६ नत्थूजी ० | १८४८ गोवर्धनेशजी ०

१८७१ गोवर्धनेशजी ० | १८८१ श्रीलालजी ० | १८७६ गोविन्दजी + (गोद आये द्वि. ।१ गृ. से)

१८९९ गिरिधारीजी

१९१६ गोवर्धनलालजी | १९५९ वल्लभजी ●

१९४६ विट्ठलनाथजी ० | १९४९ श्रीलालजी ० | १९५३ दामोदरजी

१९७५ विट्ठलनाथजी ० | १९८४ गोविन्दरायजी (नाथद्वारा)

श्रीलालजी ०

विशेष—

★ श्रीहरिरायजी (१६४७) के यहां द्वि. । १ गृह में गोद गये

+ श्रीकृष्णरायजी (१८५७) के पुत्र द्वि. । १ गृह मे गोद आये

१५३५
श्रीमहाप्रभुजी

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ श्रीगुसाँईजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ○ — १५९७ गिरिधरजी — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०३ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ○ — १६३२ दामोदरजी — १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) (देखो प्र.।७ गृ.)

१६५४ बालकृष्णजी ○ — १६५७ विट्ठलरायजी

१६८ गिरिधारीजी (देखो प्र.।१गृ.) — १६९७ गोविन्दजी (देखो प्र.।१गृ.) — १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र.।१गृ.) — १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी — १७३१ मुरलीधरजी (देखो प्र.।४गृ.) — १७३३ गोपालजी (देखो प्र.।५गृ.) — १७३५ गोवर्धनजी ○ — १७३७ गोपीनाथजी ○ — १७४० व्रजनाथजी — १७५० गोकुलनाथजी (देखो प्र.।६गृ.)

१७४७ विट्ठलेशजी — १७५० दानीरायजी ○ — १७६३ गोकुलचन्द्रजी ○

१७७४ द्वारकेशजी

१८०३ गिरिधरजी — १८२० दामोदरजी (देखो प्र.।३गृ.) — १८२१ वल्लभजी ○

१८२६ विट्ठलेशजी ○ — १८२८ मथुरानाथजी (कोटा) — १८३१ मुरलीधरजी ○

१८५२ द्वारकेशजी (घन्नूजी) (जनांपुरा) — १८५५ गिरिधरजी (कोटा) — १८५६ विट्ठलेशजी — १८५७ व्रजरत्नजी (मगनजी) (देखो प्र.।३गृ.)

१८७५ गोकुलालंकारजी (वेरावल) — १८७६ गोपिकालंकारजी (मद्दूजी) — १८८७ त्रिलोकीभूषणजी ○ — १८९६ गिरिधरजी (चड्डूजी) + (गोद गये तृ.१ गृ. में) — १८९८ गोवर्धनेशजी ○ — १८७६ गोकुलाधीशजी (बम्बई) — १८८५ गोपिकाधीशजी ○ — १८८३ गोकुलेशजी ○ — १८८७ गोपिकेशजी

१८९२ बालकृष्णजी ○ — १८९४ श्रीलालजी — १८९६ गिरिधरजी ○ — १८९७ श्रीलालजी ○ — १८९९ श्रीलालजी ○ — १८९९ श्रीलालजी ○ — १९०१ श्रीलालजी ○ — १९०३ श्रीलालजी ○ — १९५०★ लालमणिजी (कन्हैयालालजी) (गोद आये प्र.।४गृ.से) — १९२२ मथुरानाथजी ○ — १९२४ पुरुषोत्तमजी ○ — १९०१ श्रीलालजी ○ — १९२० गोवर्धनजी ÷ (गोद आये प्र.।३ गृ. से) — १९३३ व्रजरमणजी ○ — १९३५ व्रजशिरोमणजी ○

१९६६ श्रीलालजी ○ — १९६९ व्रजरत्नजी ○ — १९५२ गोपिकावल्लभजी (मगनजी) † ❀ (गोद आये प्र.।४गृ.से) (बम्बई)

१९७५ गोकुलनाथजी ❀ — १९८२ मुरलीधरजी * ❀ (गोद गये प्र.।५गृ. में)

श्रीलालजी ❀

विशेष—

★ श्रीवल्लभजी (१९१५) के पुत्र, प्र०।४ गृह से गोद आये

\+ श्रीपुरुषोत्तमजी (१८७६) के यहाँ, तृ०।१ गृह में गोद गये

÷ श्रीनृसिंहलालजी (१९०२) के पुत्र, प्र०।३ गृह से गोद आये

* श्रीमुरलीधरजी (१९१३) के पुत्र, प्र०।४ गृह से गोद आये

† श्रीगिरिधरजी (१८६८) के यहां, प्र०।५ गृह में गोद गये

प्रथम/३ गृह : बम्बई (श्रीलालजी)

१५३५ श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ श्रीगुसाईं विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ०

१५९७ गिरिधरजी — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० — १६३२ दामोदरजी — १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) (देखो प्र.१७ गृ.)

१६५४ बालकृष्णजी ० — १६५७ विट्ठलरायजी

१६८९ गिरिधारीजी (देखो प्र.१गृ.) — १६९७ गोविन्दजी (देखो प्र.१गृ.) — १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र.१गृ.) — १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी — १७३१ मुरलीधरजी (देखो प्र.४गृ.) — १७३३ गोपालजी (देखो प्र.५गृ.) — १७३५ गोवर्धनजी ० — १७३७ गोपीनाथजी ० — १७४० व्रजनाथजी (देखो प्र.२गृह) — १७५० गोकुलनाथजी (देखो प्र.६गृ.)

१७४७ विट्ठलेशजी — १७५० दानीरायजी ०

१७७४ द्वारकेशजी

१८०३ गिरिधरजी — १८२० दामोदरजी — १८२९ वल्लभजी ०

(गिरिधरजी १८०३ के पुत्र:) १८२६ विट्ठलेशजी ० — १८२८ मथुरानाथजी (कोटा) — १८३१ मुरलीधरजी ०

(दामोदरजी १८२० के पुत्र:) १८४१ विट्ठलेशजी × (गोद गये प्र.४गृ. में) — १८४८ गोकुलोत्सवजी — १८५२ पुरुषोत्तमजी ० — १८५८ व्रजरमणजी (काकाजी) (गोकुल)

(मथुरानाथजी के पुत्र:) १८५२ द्वारकेशजी (घन्नूजी) (देखो प्र.२गृ.)(जतीपुरा) — १८५५ गिरिधरजी (देखो प्र.२गृ.) (कोटा) — १८५६ विट्ठलेशजी (देखो प्र.२गृ.) — १८५७ व्रजरत्नजी (मगनजी)

(गोकुलोत्सवजी के पुत्र:) १८८३ श्रीलालजी ० — १८८६ जीवनजी ० — १८८८ श्रीलालजी ०

(व्रजरमणजी के पुत्र:) १८७९ बालकृष्णजी ० — १८८२ श्रीलालजी ० — १८८७ व्रजरायजी † (गोद गये प्र.८गृ. में)

(व्रजरत्नजी के पुत्र:) १८९६ श्रीलालजी ० — १८९९ गोवर्धनेशजी ० — १९०२ नृसिंहलालजी — १९०५ दामोदरजी ० (कुँभारटुकड़ा)

(नृसिंहलालजी के पुत्र:) १९२० गोवर्धनलालजी ★ (गोद गये प्र.२गृ.में) — १९४२ रघुनाथजी ० — १९७४ विट्ठलेशजी + ❀ (गोद आये प्र.४गृ.से)

दामोदरजी ❀

विशेष—

★ श्रीगोकुलाधीशजी (१८७६) के यहां, प्र०।२ गृह में गोद गये।

+ श्रीबागधीशजी (१९४१) के पुत्र, प्र०।४ गृह से गोद आये।

× श्रीवल्लभजी (१७८८) के यहां, प्र०।४ गृह में गोद गये।

† श्री व्रजभूषणजी (छोटाजी) (१८३८) के यहां, प्र०।८ गृह में गोद गये।

१५३५

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम/४ गृह : अमरेली (बम्बई-वेट)

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ श्रीगुसाईं विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० — १५९७ गिरिधरजी — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० — १६३२ दामोदरजी — १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) (देखो प्र.।७ गृ.)

१६५४ बालकृष्णजी ० — १६५७ विट्ठलरायजी

१६८१ गिरिधारीजी (देखो प्र.।१गृ.) — १६९७ गोविन्दजी (देखो प्र.।१गृ.) — १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र.।१गृ.) — १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी (देखो प्र.।२गृ.) — १७३१ मुरलीधरजी — १७३३ गोपालजी (देखो प्र.।५गृ.) — १७३५ गोवर्धनजी ० — १७३७ गोपीनाथजी ० — १७४० व्रजनाथजी (देखो प्र.।२गृह) — १७५० गोकुलनाथजी (देखो प्र.।६गृ.)

१७५२ पुरुषोत्तमजी — १७५६ रघुनाथजी — १७६१ दामोदरजी

१७८८ वल्लभजी (अमरेली) — १७८१ विट्ठलरायजी ० — १७९१ बालकृष्णजी ०

१८०१ मुरलीधरजी ० — १८४१ ★ विट्ठलेशजी (गोद आये प्र.।३गृ.से)

१८६० वल्लभजी ० — १८६२ व्रजजीवनजी (नथूजी) — १८७२ लालमणिजी (दाऊजी मंदिर।) (बम्बई) — १८७५ पुरुषोत्तमजी ० — १८८४ दामोदरजी ० — १८८६ श्रीलालजी ० — १८८८ मोहनजी ०

१९१३ मुरलीधरजी × (वेट) (गोद आये) — १८९१ विट्ठलेशजी

१९३० बालकृष्णजी ० — १९३२ छगनजी ० — १९३७ श्रीलालजी ० — १९४४ प्रद्युम्नजी ० (वेट) — १९४६ अनिरुद्धजी+ (गोद गये द्वि.।२तथाप्र.।१०गृ. में) — गोपिकावल्लभजी (मगनजी) (गोद गये प्र.।२गृ. में) — १९१३ मुरलीधरजी (गोद गये) (वेट) — १९१५ वल्लभजी — १९१७ पुरुषोत्तमजी (अमरेली) — १९२२ द्वारकानाथजी ० — १९२७ गिरिधरजी ०

१९४४ ÷ • द्वारकेशजी(गिरिधरजी) (गोद गये प्र.।७गृ. में) — १९५० † लालमणिजी (कन्हैयालालजी) (गोद गये प्र.।२गृ.में) — १९४१ वागधीशजी

१९५७ श्रीलालजी ० — १९६२ श्रीलालजी ० — १९७२ पुरुषोत्तमजी ‡ (बम्बई) — १९७४ विट्ठलेशजी ‡ (गोद गये प्र.।३गृ.में)

व्रजजीवनजी ‡

विशेष—

★ श्रीदामोदरजी (१८२०) के पुत्र, प्र०।३ गृह से गोद आये

× श्रीविट्ठलेशजी (१८९१) के पुत्र गोद आये

+ श्रीव्रजरत्नजी (१८९१) के यहां, द्वि०।२ तथा श्रीव्रजेशजी (१९१०) के यहां, प्र०।१० गृह में गोद गये।

‡ श्रीव्रजजीवनजी (१८६२) के यहां गोद गये।

÷ श्रीरणछोड़लालजी (१९०८) के यहां, प्र०।७ गृह में गोद गये।

† श्रीगोकुलालंकारजी (वेरावल) (१८७५) के यहां, प्र०।२ गृह में गोद आये।

• श्रीनृसिंहलालजी (१९०२) के यहां, प्र०।३ गृह में गोद गये।

प्रथम/५ गृह : पोरबन्दर (गोपीनाथजी हवेली)
: गोकुल (कटरावाला मन्दिर)

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० | १५९७ गिरिधरजी | १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० | १६३२ दामोदरजी | १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) (देखो प्र.।७ गृ.)

१६५४ बालकृष्णजी ० | १६५७ विट्ठलरायजी

१६८८ गिरिधारीजी (देखो प्र.।२गृ.) | १६९७ गोविन्दजी (देखो प्र.।३गृ.) | १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र.।४गृ.) | १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी (देखो प्र.।२गृ.) | १७३१ मुरलीधरजी (देखो प्र.।८गृ.) | १७३३ गोपालजी | १७३५ गोवर्धनजी ० | १७३७ गोपीनाथजी ० | १७४० व्रजनाथजी (देखो प्र.।२गृ.) | १७५० गोकुलनाथजी (देखो प्र.।६गृ.)

१७५६ यदुनाथजी

१७८१ गोपालजी | १७८४ बालकृष्णजी ० | १७८७ लक्ष्मणजी | १७९० विठ्ठलजी ० | १७९३ वल्लभजी ०

१८०१ यदुनाथजी ० | १८०७ मधुसूदनजी ० | १८१३ द्वारकानाथजी

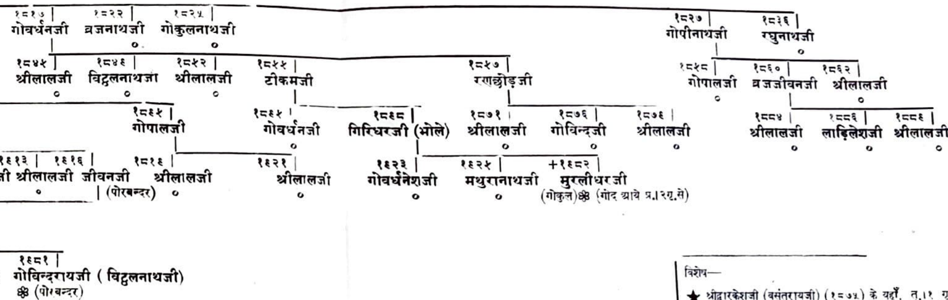
१८४२ बालकृष्णजी ० | १८४५ नत्थूजी (लक्ष्मणजी) | १८४७ मुरलीधरजी | १८५२ रामकृष्णजी

१८६८ विट्ठलनाथजी ० | १८८२ मथुरानाथजी | १८८६ घनश्यामजी | १८८८ श्रीलालजी ० | १८८१ वल्लभजी | १८८६ गोकुलनाथजी ०

१९०५ द्वारकानाथजी ० | १९०८ गोपीनाथजी ० | १९१० ★ गोपालजी (गोद गये तृ.।१गृ.में) | १९१२ बालकृष्णजी ० | १९१४ रघुनाथजी | १९१७ श्रीलालजी ० | १९०२ विट्ठलेशजी ० | १९०४ लाड़िलेशजी ० | १९०८ श्रीलालजी ० | १९१० श्रीलालजी ० | १९१३ श्रीलालजी ० | १९१६ जीवनजी (पोरबन्दर)

१९३६ मुरलीधरजी | १९५१ श्रीलालजी ० | १९३६ × रणछोड़लालजी (गोद गये द्वि.।२गृ.में भी)

१९६१ नृसिंहजी ० | १९५१ रामकृष्णजी ० | १९६२ श्रीलालजी ० | १९७० वल्लभलालजी (बम्बई) ❀ (देखो द्वि.।२गृ.) | १९८० श्रीलालजी ० | १९८१ गोविन्दरायजी (विट्ठलनाथजी) ❀ (पोरबन्दर)



विशेष—

★ श्रीद्वारकेशजी (बसंतरायजी) (१८७५) के यहाँ, तृ.।१ गृह में गोद गये.

× श्रीघनश्यामजी (१६२८) के यहां, द्वि.।२ गृह में गोद गये.

+ श्रीगोपिकावल्लभजी (मगनजी) (१६५२) के पुत्र, प्र०।२ गृह से गोद आये।

प्रथम/६ गृह : बम्बई (बड़ा मन्दिर)

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ गुसांई श्रीविट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० — १५९७ गिरिधरजी — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० — १६३२ दामोदरजी — १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) (देखो प्र.।७ गृ.)

१६५४ बालकृष्णजी ० — १६५७ विट्ठलरायजी

१६८९ गिरिधारीजी (देखो प्र.।१गृ.) — १६९७ गोविन्दजी (देखो प्र.।१गृ.) — १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र.।१गृ.) — १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी (देखो प्र.।२गृ.) — १७३१ मुरलीधरजी (देखो प्र.।४गृ.) — १७३३ गोपालजी (देखो प्र.।५गृ.) — १७३५ गोवर्धनजी ० — १७३७ गोपीनाथजी ० — १७४० व्रजनाथजी (देखो प्र.।२गृ.) — १७५० गोकुलनाथजी

१७७१ मथुरानाथजी — १७८१ विट्ठलरायजी — १७८७ जीवनजी (गोपीनाथजी) ०

१८०६ गिरिधरजी ० — १८०८ मुरलीधरजी ० — १८१० व्रजनाथजी ० — १८२० गोकुलनाथजी (वेरावल) — १८२५ गोवर्धनेशजी (बड़ा मन्दिर) — १८२८ बालकृष्णजी ० — १८३१ गिरिधरजी (गोकुलोत्सवजी)

१८५० पीताम्बरजी ० — १८६७ मदनमोहनजी ० (भट्टजी) — १८४३ विट्ठलेशजी — १८४६ श्रीलालजी ० — १८५६ जीवनजी ★ (गोद आये) — १८५६ जीवनजी + (गोद गये)

१८६४ गिरिधरजी ० — १८६८ लक्ष्मणजी ० — १९४५ × गोकुलनाथजी (गोविन्दजी) (गोद आये प्र.।६गृ.से)

१८६४ श्रीकृष्णजीवनजी (गिरिधरजी) ❀ (बम्बई) — १९६६ दामोदरजी ० — १९७० दीक्षितजी ❀(गोद गये प्र.।७गृ.में) * — १९७२ गोपीनाथजी ❀ (बम्बई) — १९८० मुकुन्दरायजी ❀(बम्बई) — १९८३ कल्याणरायजी ❀(बम्बई) — १९८६ मधुरेशजी ❀(बम्बई) — १९९० माधवरायजी ❀(बम्बई)

१९८० कृष्णचन्द्रजी ❀ — १९८२ गोवर्धनेशजी ० — १९८४ जीवनेशजी ❀ — १९८५ हरिरायजी ❀ — १९८७ व्रजाधीशजी ❀ — १९८९ द्वारकानाथजी ❀ — १९९१ श्यामसुन्दरजी ❀ — १९९३ नृत्यगोपालजी ❀ — २००२ रमेशचन्द्रजी ❀

२००३ श्रीलालजी ❀

विशेष—

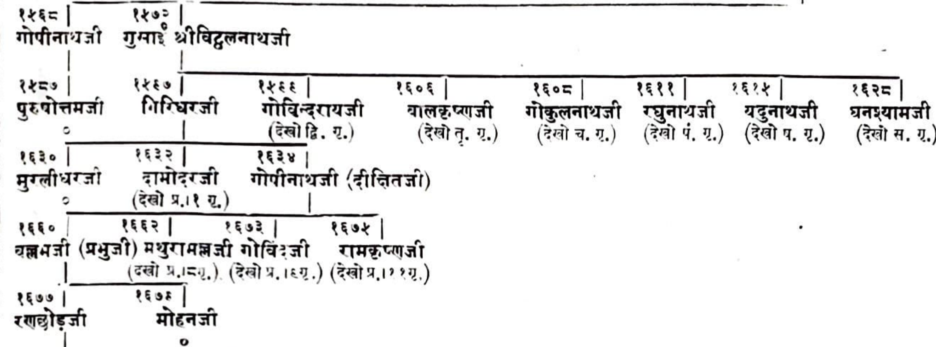
★ श्रीगिरिधरजी (१८३१) के पुत्र, गोद आये।

× श्रीदामोदरजी (१९१२) के पुत्र, प्र.।६ गृह से गोद आये।

❀ श्रीजीवनजी (१९३७) के यहां, प्र.।७ गृह में गोद गये।

+ श्रीगोवर्धनेशजी (१८२५) के यहां, गोद गये।

प्रथम/७ गृह: कोटा (मथुरेशजी)
: कृष्णगढ़



विशेष—

★ श्रीविट्ठलरायजी (१८१७) के पुत्र गोद आये।

\+ श्रीवल्लभजी (१८४१) के पुत्र गोद आये।

† श्रीगोकुलनाथजी (१६४५) के पुत्र, प्र.।६ गृह से गोद आये।

‡ श्रीवल्लभजी (१६१५) के पुत्र. प्र.।७ गृ. से गोद आये।

× श्रीगोविंदजी (१७६७) के यहां गोद गये।

श्रीबालकृष्णजी (१७२५) के यहां प्र.।८ गृह में गोद गये।

❀ श्रीप्रभुजी (१८४५) के यहां गोद गये।

प्रथम/८ गृह : अहमदाबाद

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० — १५९७ गिरिधरजी — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० — १६३२ दामोदरजी (देखो प्र.।१ गृ.) — १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी)

१६६० वल्लभजी (प्रभुजी) (देखो प्र.।७गृ.) — १६६२ मथुरामल्लजी — १६७३ गोविंदजी (देखो प्र.।६गृ.) — १६७५ रामकृष्णजी (देखो प्र.।११गृ.)

१६८० रघुनाथजी ० — १६८२ गिरिधरजी (गोवर्धनेशजी) ० — १६८५ गोपालजी ० — १६८८ पुरुषोत्तमजी (नटवरगोपालजी)

१७२५ बालकृष्णजी

१७५८ व्रजरायजी ★ (गोद आये प्र.।७गृ.से)

१८०० रघुनाथजी

१८३१ गोपीनाथजी — १८३४ श्रीलालजी ० — १८३८ व्रजभूषणजी (छोटाजी) — १८४६ पीताम्बरजी ०

१८५५ व्रजनाथजी ० — १८५७ गोपालजी ० — १८५९ उपेन्द्रजी ० — १८५१ व्रजनाथजी ० — १८८७ व्रजरायजी + (गोद आये प्र.।३गृ.से)

१९११ बालकृष्णजी — १९१३ रघुनाथजी ० — १९१५ पन्नालालजी ० — १९२६ मधुसूदनजी × (गोद आये ष.।३गृ.से)

१९३० गोपीनाथजी ० — १९४० रामचन्द्रजी ० — १९४१ रणछोड़लालजी ❀ (अहमदाबाद) — १९७३ गोपीनाथजी ०

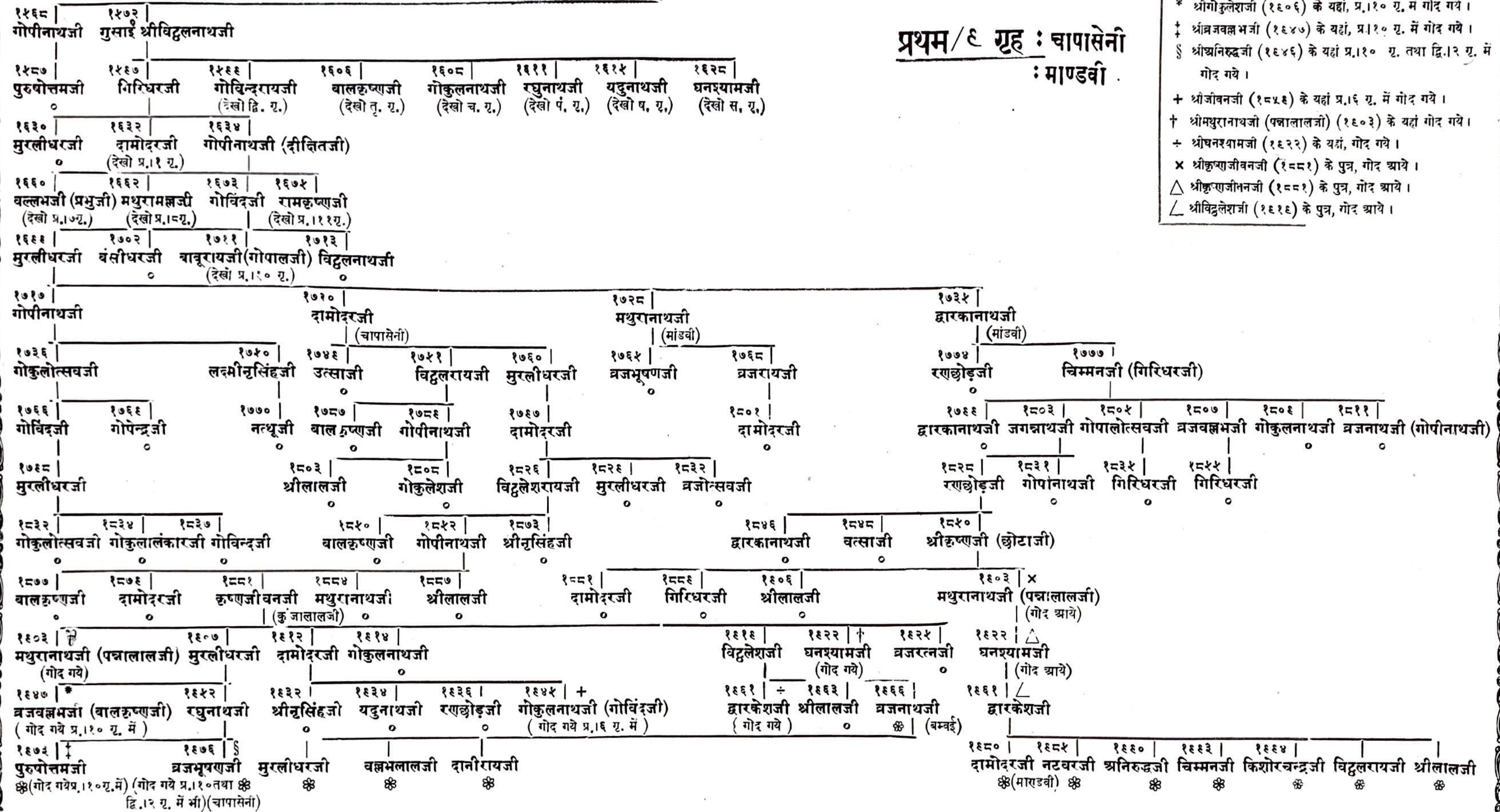
१९७७ छोटाजी ० — १९८७ व्रजरायजी ❀ (नटवरगोपालजी)

विशेष—

★ श्रीरघुनाथजी (१७२७) के पुत्र, प्र.।७ गृह से गोद आये।

\+ श्रीव्रजरमणजी-काकाजी (१८५८) के पुत्र, प्र.।३ गृह से गोद आये

× श्रीव्रजनाथजी (१९०३) के पुत्र, ष.।२ गृह से गोद आये।


१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु
प्रथम/९ गृह : चापासेनी
: माण्डवी
विशेष—
🝊 श्रीकृष्णजी (छोटाजी) (१८५०) के यहां, गोद गये।
* श्रीगोकुलेशजी (१९०६) के यहां, प्र.।१० गृ. में गोद गये।
‡ श्रीव्रजवल्लभजी (१९४७) के यहां, प्र.।१० गृ. में गोद गये।
§ श्रीअनिरुद्धजी (१९४६) के यहां प्र.।१० गृ. तथा द्वि.।२ गृ. में गोद गये।
+ श्रीजीवनजी (१८५९) के यहां प्र.।६ गृ. में गोद गये।
† श्रीमथुरानाथजी (पन्नालालजी) (१९०३) के यहां गोद गये।
÷ श्रीघनश्यामजी (१९२२) के यहां, गोद गये।
× श्रीकृष्णजीवनजी (१८८१) के पुत्र, गोद आये।
△ श्रीकृष्णजीवनजी (१८८१) के पुत्र, गोद आये।
∠ श्रीविट्ठलेशजी (१९१९) के पुत्र, गोद आये।
१५६८ गोपीनाथजी
१५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजी
१५८७ पुरुषोत्तमजी
१५९७ गिरिधरजी
१५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.)
१६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.)
१६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.)
१६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.)
१६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.)
१६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)
१६३० मुरलीधरजी
१६३२ दामोदरजी (देखो प्र.।१ गृ.)
१६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी)
१६६० वल्लभजी (प्रभुजी) (देखो प्र.।७गृ.)
१६६२ मथुरामल्लजी (देखो प्र.।८गृ.)
१६७३ गोविंदजी
१६७५ रामकृष्णजी (देखो प्र.।११गृ.)
१६९९ मुरलीधरजी
१७०२ बंसीधरजी
१७११ बावूरायजी (गोपालजी) (देखो प्र.।१० गृ.)
१७१३ विट्ठलनाथजी
१७१७ गोपीनाथजी
१७२० दामोदरजी (चापासेनी)
१७२८ मथुरानाथजी (मांडवी)
१७३५ द्वारकानाथजी (मांडवी)
१७३६ गोकुलोत्सवजी
१७५० लक्ष्मीनृसिंहजी
१७४९ उत्साजी
१७५१ विट्ठलरायजी
१७६० मुरलीधरजी
१७६५ व्रजभूषणजी
१७६८ व्रजरायजी
१७७४ रणछोड़जी
१७७७ चिम्मनजी (गिरिधरजी)
१७६६ गोविंदजी
१७६९ गोपेन्द्रजी
१७७० नत्थूजी
१७८७ बालकृष्णजी
१७८९ गोपीनाथजी
१७९७ दामोदरजी
१८०१ दामोदरजी
१७९९ द्वारकानाथजी
१८०३ जगन्नाथजी
१८०५ गोपालोत्सवजी
१८०७ व्रजवल्लभजी
१८०९ गोकुलनाथजी
१८११ व्रजनाथजी (गोपीनाथजी)
१७९८ मुरलीधरजी
१८०३ श्रीलालजी
१८०८ गोकुलेशजी
१८२६ विट्ठलेशरायजी
१८२९ मुरलीधरजी
१८३२ व्रजोत्सवजी
१८२८ रणछोड़जी
१८३१ गोपीनाथजी
१८३५ गिरिधरजी
१८५५ गिरिधरजी
१८३२ गोकुलोत्सवजी
१८३४ गोकुलालंकारजी
१८३७ गोविन्दजी
१८५० बालकृष्णजी
१८५२ गोपीनाथजी
१८७३ श्रीनृसिंहजी
१८४६ द्वारकानाथजी
१८४८ वत्साजी
१८५० श्रीकृष्णजी (छोटाजी)
१८७७ बालकृष्णजी
१८७९ दामोदरजी
१८८१ कृष्णजीवनजी (कुंजालालजी)
१८८४ मथुरानाथजी
१८८७ श्रीलालजी
१८८१ दामोदरजी
१८८९ गिरिधरजी
१९०६ श्रीलालजी
१९०३ × मथुरानाथजी (पन्नालालजी) (गोद आये)
१९०३ 🝊 मथुरानाथजी (पन्नालालजी) (गोद गये)
१९०७ मुरलीधरजी
१९१२ दामोदरजी
१९१४ गोकुलनाथजी
१९१९ विट्ठलेशजी
१९२२ † घनश्यामजी (गोद गये)
१९२५ व्रजरत्नजी
१९२२ △ घनश्यामजी (गोद आये)
१९४७ * व्रजवल्लभजी (बालकृष्णजी) (गोद गये प्र.।१० गृ. में)
१९५२ रघुनाथजी
१९३२ श्रीनृसिंहजी
१९३४ यदुनाथजी
१९३६ रणछोड़जी
१९४५ + गोकुलनाथजी (गोविंदजी) (गोद गये प्र.।६ गृ. में)
१९६१ ÷ द्वारकेशजी (गोद गये)
१९६३ श्रीलालजी
१९६६ व्रजनाथजी (बम्बई)
१९६१ ∠ द्वारकेशजी
१९७२ ‡ पुरुषोत्तमजी ❀(गोद गयेप्र.।१०गृ.में)
१९७६ § व्रजभूषणजी (गोद गये प्र.।१०तथा द्वि.।२ गृ. में भी)(चापासेनी) ❀
मुरलीधरजी ❀
वल्लभलालजी ❀
दानीरायजी ❀
१९८० दामोदरजी ❀(माण्डवी)
१९८५ नटवरजी ❀
१९९० अनिरुद्धजी ❀
१९९३ चिम्मनजी ❀
१९९४ किशोरचन्द्रजी ❀
विट्ठलरायजी ❀
श्रीलालजी ❀

प्रथम/१० गृह : जामनगर
: जूनागढ़
: पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली)

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथ जी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० | १५९७ गिरिधरजी | १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० | १६३२ दामोदरजी (देखो प्र.।१ गृ.) | १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी)

१६६० वल्लभजी (प्रभुजी) (देखो प्र.।७गृ.) | १६६२ मथुरामल्लजी (देखो प्र.।८गृ.) | १६७३ गोविंदजी | १६७५ रामकृष्णजी (देखो प्र.।११गृ.)

१६९९ मुरलीधरजी (देखो प्र.।६ गृ.) | १७०२ बंसीधरजी ० | १७११ बाबूरायजी (गोपालजी) (नगर) | १७१३ विट्ठलनाथजी ०

१७२९ गोवर्धनेशजी

१७५६ वल्लभजी | १७४५ हन्नूजी (गोकुलाधीशजी)

(वल्लभजी:) १७६० अनिरुद्धजी | १७६३ बंसीधरजी

१७९२ गोवर्धनेशजी ० | १७९४ गिरिधरजी (नत्थूजी) | १७९६ माधवरायजी | १७८९ गोकुलचन्दजी (जूनागढ़) ० | १७९१ रणछोड़जी ० | १७९४ कल्याणरायजी ० | १७८७ बालकृष्णजी

(हन्नूजी:) १७७० रामकृष्णजी | १७७४ लक्ष्मणजी ० | १७७८ रणछोड़जी (धींगड़मलजी) (पोरबन्दर) | १७८४ टीकमजी ०

१७८९ राजीवलोचनजी | १७९१ श्रीलालजी ० | १८५६ Z व्रजवल्लभजी (मगनजी) (गोद आये)

१८१३ ★ गोवर्धनेशजी (गोद आये) | १८२० पुरुषोत्तमजी ० | १८२० विट्ठलेशजी | ∠ १८१३ गोवर्धनेशजी (गोदआये)(गोद गये) | X १८१८ गोकुलेशजी ० | १८२० P विट्ठलेशजी (गोद गये) | १८३१ बंसीधरजी ०

१८१७ जगन्नाथजी ० | १८१९ यशोदानन्दनजी ० | १८२१ व्रजरत्नजी | १८२९ द्वारकानाथजी ० | १८७७ श्यामलजी ० | १८७९ व्रजमोहनजी ० | १८८२ व्रजरमणजी ० | १८८५ & गोविंदजी (बच्छाजी) (गोद गये) | १८८९ द्वारकानाथजी | १८९२ मथुरानाथजी ०

१८४० बंसीधरजी | १८४२ मधुसूदनजी ० | १८४५ मथुरानाथजी ० | १८५२ बाबूरायजी | १८५६ § व्रजवल्लभजी (मगनजी) (गोद गये) | १८५९ जगन्नाथजी ० | १८६२ व्रजपालजी ० | १८६५ व्रजरमणजी ० | १८६७ श्रीलालजी ०

१८५० पुरुषोत्तमजी ० | १९०२ N गोकुलनाथजी ० (गोद आये ष. गृ. से)

१९०८ विट्ठलेशजी | १९१० W व्रजेशजी (गोद गये) | १९१३ बालकृष्णजी ०

१८७३ × व्रजनाथजी (गोद आये)

१८७३ ‡ व्रजनाथजी (गोद गये) | १८७५ कल्याणरायजी ० | १८८५ ÷ गोविन्दजी (बच्छाजी) (गोद आये)

१९१० △ व्रजेशजी (गोद आये)

१९०२ श्रीलालजी ० | १९०६ गोकुलेशजी

१९३२ V घनश्यामजी [पोरबन्दर]❁ (गोद आये ष.।२ गृ. से)

१९४६ + अनिरुद्धजी [गोद आये प्र.।४ गृ. से]

१९३२ श्रीलालजी ० | १९४७ 🕉 व्रजवल्लभजी (बालकृष्णजी) (गोद आये प्र.।६ गृ. से)

१९४९ † दामोदरलालजी (गोद गये स.।२गृ.में) | १९५६ द्वारकेशलालजी ❁

१९७६ * व्रजभूषणजी (जामनगर)❁[गोद आये प्र.।६गृ. से तथा गोद गये द्वि.।२गृ. में भी]

१९७३ T पुरुषोत्तमजी ❁ (गोद आये प्र.।६ गृ. से) (जूनागढ़)

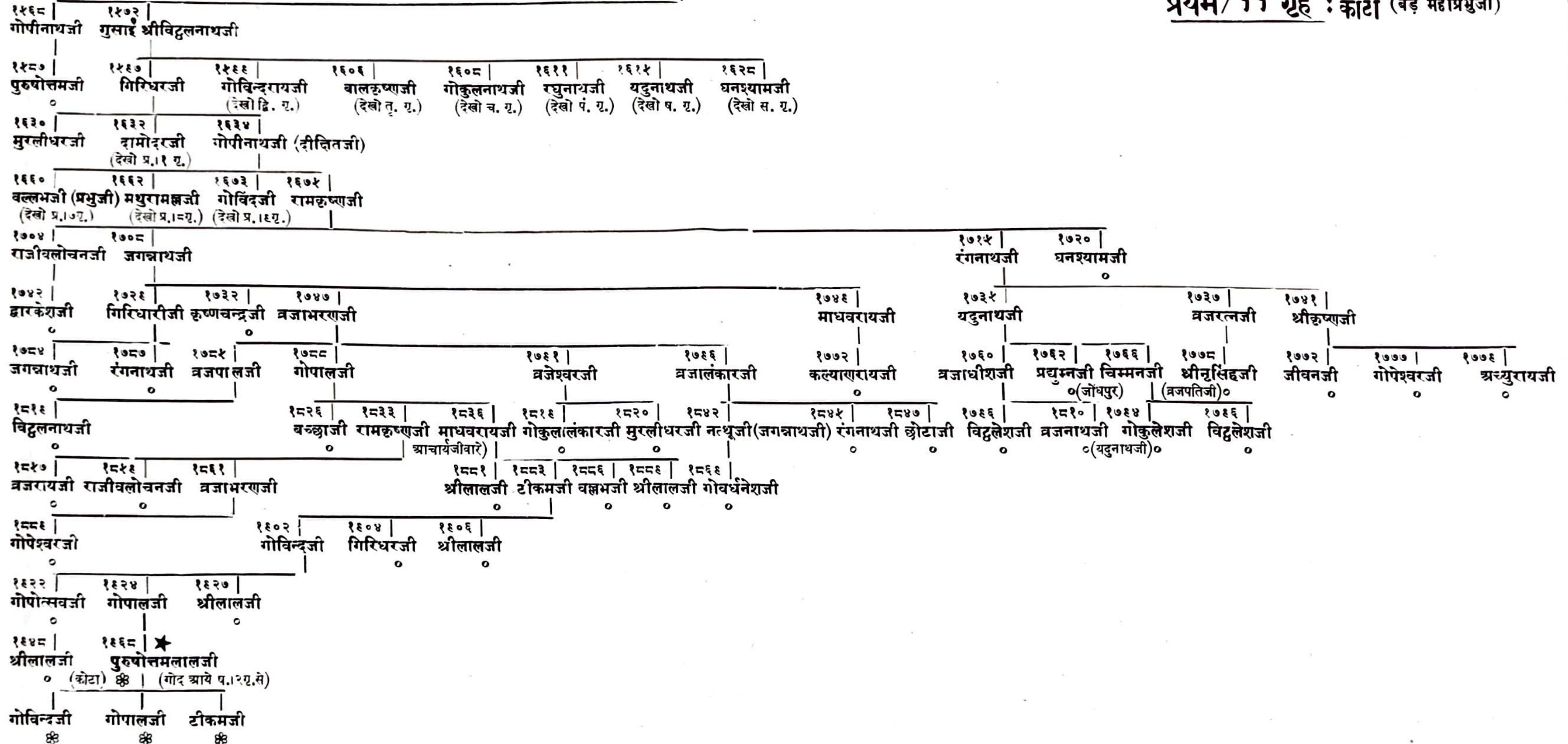
लालमणिजी ❁ | देवकीनन्दनजी ❁

विशेष—

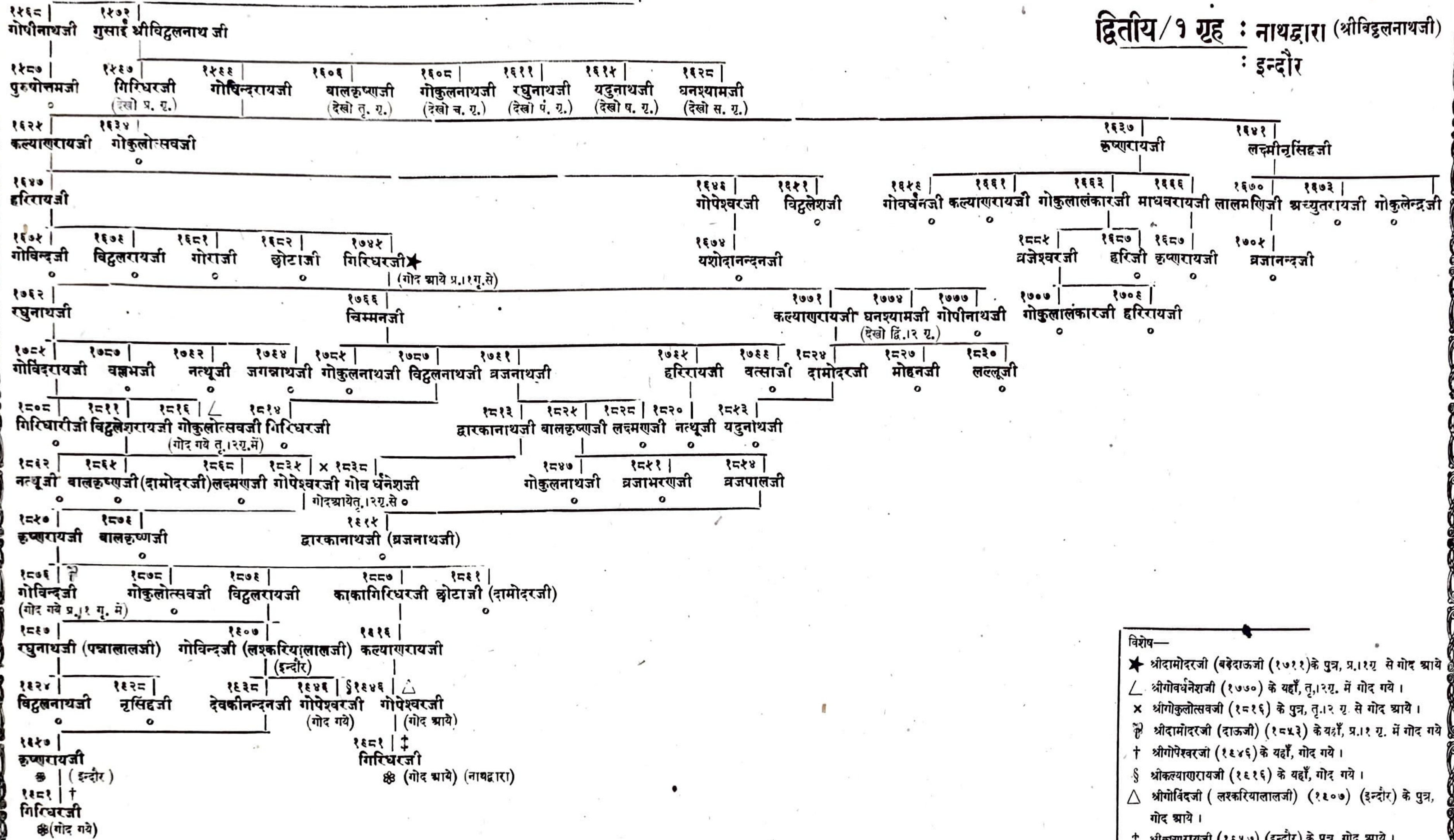
★ श्रीबालकृष्णजी (१७८७) के पुत्र, गोद आये।
× श्रीबाबूरायजी (१८५२) के पुत्र, गोद आये।
△ श्रीद्वारकानाथजी (१८८९) के पुत्र, गोद आये।
+ श्रीमुरलीधरजी (१९१३) के पुत्र, प्र.।४ गृ. से गोद आये।
* श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र, प्र.।६ गृ. से गोद आये तथा श्रीअनिरुद्धजी (१९४६) के यहां, द्वि.।२ गृ. में गोद भी गये।
∠ श्रीबालकृष्णजी (१७८७) के पुत्र, गोद आये।
§ श्रीरणछोड़जी (१७७८) के यहां, गोद गये।
‡ श्रीबंसीधरजी (१८४०) के यहां, गोद गये।
÷ श्रीव्रजवल्लभजी (मगनजी) के पुत्र, गोद आये।
🕉 श्रीमुरलीधरजी (१९०७) के पुत्र, प्र.।६ गृ. से गोद आये।
T श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र, प्र.।६ गृ. से गोद आये।
X श्रीगिरिधरजी (नत्थूजी) (१७९४) के यहां, गोद आये।
P श्रीमाधवरायजी (१७९६) के यहां, गोद गये।
N श्रीवल्लभजी (१८६१) के पुत्र, पं. गृ. से गोद आये।
Z श्रीविट्ठलेशजी (१८२०) के पुत्र, गोद आये।
& श्रीबाबूरायजी (१८५२) के यहां, गोद गये।
W श्रीव्रजनाथजी (१८७३) के यहां, गोद गये।
V श्रीरमणलालजी (१९०४) के पुत्र, ष.।२ गृ. से गोद आये।
† श्रीव्रजपालजी (१९२३) के यहां, ष.।२ गृ. में गोद गये।

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम/११ गृह : कोटा (बड़े महाप्रभुजी)



विशेष—
★ श्रीदामोदरजी (१६४६) के पुत्र, प.।२ गृह से गोद आये।



१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु
द्वितिय/१ गृह : नाथद्वारा (श्रीविट्ठलनाथजी)
: इन्दौर
१५६८ गोपीनाथजी
१५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथ जी
१५८७ पुरुषोत्तमजी
१५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.)
१५९९ गोविन्दरायजी
१६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.)
१६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.)
१६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.)
१६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.)
१६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)
१६२५ कल्याणरायजी
१६३४ गोकुलोत्सवजी
१६३७ कृष्णरायजी
१६४१ लक्ष्मीनृसिंहजी
१६४७ हरिरायजी
१६४६ गोपेश्वरजी
१६५१ विट्ठलेशजी
१६५९ गोवर्धनजी
१६६१ कल्याणरायजी
१६६३ गोकुलालंकारजी
१६६६ माधवरायजी
१६७० लालमणिजी
१६७३ अच्युतरायजी
गोकुलेन्द्रजी
१६७५ गोविन्दजी
१६७९ विट्ठलरायजी
१६८१ गोराजी
१६८२ छोटाजी
१७४५ गिरिधरजी★ (गोद आये प्र.।१गृ.से)
१६७४ यशोदानन्दनजी
१६८५ व्रजेश्वरजी
१६८७ हरिजी
१६८७ कृष्णरायजी
१७०५ व्रजानन्दजी
१७६२ रघुनाथजी
१७६६ चिम्मनजी
१७७१ कल्याणरायजी
१७७४ घनश्यामजी (देखो द्वि.।२ गृ.)
१७७७ गोपीनाथजी
१७०७ गोकुलालंकारजी
१७०९ हरिरायजी
१७८५ गोविंदरायजी
१७८७ वल्लभजी
१७९२ नत्थूजी
१७९४ जगन्नाथजी
१७८५ गोकुलनाथजी
१७८७ विट्ठलनाथजी
१७९१ व्रजनाथजी
१७९५ हरिरायजी
१७९९ वत्साजी
१८२४ दामोदरजी
१८२७ मोहनजी
१८३० लल्लूजी
१८०८ गिरिधारीजी
१८११ विट्ठलेशरायजी
१८१६ ∠ गोकुलोत्सवजी (गोद गये तृ.।२गृ.में)
१८१४ गिरिधरजी
१८१३ द्वारकानाथजी
१८२५ बालकृष्णजी
१८२८ लक्ष्मणजी
१८२० नत्थूजी
१८५३ यदुनाथजी
१८६२ नत्थूजी
१८६५ बालकृष्णजी (दामोदरजी)
१८६८ लक्ष्मणजी
१८३५ गोपेश्वरजी
× १८३८ गोवर्धनेशजी (गोदआयेतृ.।२गृ.से)
१८४७ गोकुलनाथजी
१८५१ व्रजाभरणजी
१८५४ व्रजपालजी
१८५० कृष्णरायजी
१८७१ बालकृष्णजी
१९१५ द्वारकानाथजी (व्रजनाथजी)
१८७६ गोविन्दजी (गोद गये प्र.।१ गृ. में)
१८७८ गोकुलोत्सवजी
१८७१ विट्ठलरायजी
१८८७ काकागिरिधरजी
१८९१ छोटाजी (दामोदरजी)
१८९७ रघुनाथजी (पन्नालालजी)
१९०७ गोविन्दजी (लश्करियालालजी) (इन्दौर)
१९१६ कल्याणरायजी
१९२४ विट्ठलनाथजी
१९२८ नृसिंहजी
१९३८ देवकीनन्दनजी
१९४६ गोपेश्वरजी (गोद गये)
§१९४६ △ गोपेश्वरजी (गोद आये)
१९५७ कृष्णरायजी (इन्दौर)
१९८१ † गिरिधरजी (गोद गये)
१९८१ ‡ गिरिधरजी (गोद आये) (नाथद्वारा)
विशेष—
★ श्रीदामोदरजी (बड़ेदाऊजी (१७११)के पुत्र, प्र.।१गृ से गोद आये
∠ श्रीगोवर्धनेशजी (१७७०) के यहाँ, तृ,।२गृ. में गोद गये।
× श्रीगोकुलोत्सवजी (१८१६) के पुत्र, तृ.।२ गृ. से गोद आये।
श्रीदामोदरजी (दाऊजी) (१८५३) के यहाँ, प्र.।१ गृ. में गोद गये
† श्रीगोपेश्वरजी (१९४६) के यहाँ, गोद गये।
§ श्रीकल्याणरायजी (१९१६) के यहाँ, गोद गये।
△ श्रीगोविंदजी (लश्करियालालजी) (१९०७) (इन्दौर) के पुत्र, गोद आये।
‡ श्रीकृष्णरायजी (१९५७) (इन्दौर) के पुत्र, गोद आये।

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

द्वितीय/२ गृह : बम्बई (लालबावा)
: नडियाद

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ गुसांई श्रीविट्ठलनाथ जी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० | १५६७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) | १५९९ गोविन्दरायजी | १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६२५ कल्याणरायजी | १६२४ गोकुलोत्सवजी ० | १६३७ कृष्णरायजी (देखो द्वि.।१गृ.) | १६४१ लक्ष्मीनृसिंहजी (देखो द्वि.।१गृ.)

१६४७ हरिरायजी | १६४९ गोपेश्वरजी (देखो द्वि.।१गृ.) | १६५१ विट्ठलेशजी ०

१६७५ गोविन्दजी ० | १६७९ विट्ठलरायजी ० | १६८१ गोराजी ० | १६८२ छोटाजी ० | १७४५ ★ गिरिधरजी (गोद आये प्र.।१गृ.से)

१७६२ रघुनाथजी (देखो द्वि.।१ गृ.) | १७६६ चिम्मनजी (देखो द्वि.।१गृ.) | १७७१ कल्याणरायजी (देखो द्वि.।१गृ.) | १७७४ घनश्यामजी | १७७७ गोपीनाथजी ०

१८०४ मथुरानाथजी ० | १८०६ मुरलीधरजी ० | १८१६ यदुनाथजी | १८२४ पुरुषोत्तमजी | १८२७ गोपालजी

यदुनाथजी के पुत्र: १८४१ घनश्यामजी | १८४७ कल्याणरायजी ० | १८४६ वल्लभजी ० | १८५३ श्रीलालजी ० | १८५५ दानीरायजी (लालबावा मंदिर)

पुरुषोत्तमजी के पुत्र: १८५५ रघुनाथजी ०(बड़ौदा) | १८६१ नत्थूजी ० | १८६३ दामोदरजी ० | १८७१ मथुरानाथजी ०

गोपालजी के पुत्र: १८६२ मथुरानाथजी (नडियाद) | १८६४ लक्ष्मणजी ०

१८६१ ∠ वल्लभ जी (गोद गये पं.गृ.में) | १८६६ × लक्ष्मणजी (गोद गये च.गृ.में) | १८८१ गोकुलनाथजी ० | १८९६ ⸸ चिम्मनजी (गोद गये) | १८९६ † चिम्मनजी (गोद आये)

मथुरानाथजी (नडियाद) के पुत्र: १८८१ श्रीलालजी ० | १८८४ गिरिधरजी ० | १८९१ व्रजरत्नजी | १८९६ मधुमोहनजी ० | १८९९ दामोदरजी ०

१९२८ घनश्यामजी

१९३६ ‡ रणछोड़लालजी (गोद आये प्र.।५गृ.से)

१९६१ रामकृष्णजी ० | १९६२ श्रीलालजी ० | १९७० वल्लभलालजी ❀(बम्बई) | १९८० श्रीलालजी ० | १९८१ गोविन्दरायजी (विट्ठलनाथजी) ❀ (देखो प्र.।५गृ. में)

१९४६ § अनिरुद्धजी (गोद आये प्र.।४गृ.से)

१९७६ △ व्रजभूषणजी ❀(गोद आये प्र.।६ गृ. से) (नडियाद)

विशेष—

★ श्रीदामोदरजी (बड़ेदाऊजी)(१७११)के पुत्र,प्र.।१गृ. से गोद आये

∠ श्रीदेवकीनन्दनजी (जयपुर) (१७९९) के यहाँ, पं. गृ. में गोद गये

× श्रीव्रजपतिजी (१९९३) के यहाँ, च. गृ. में गोद गये।

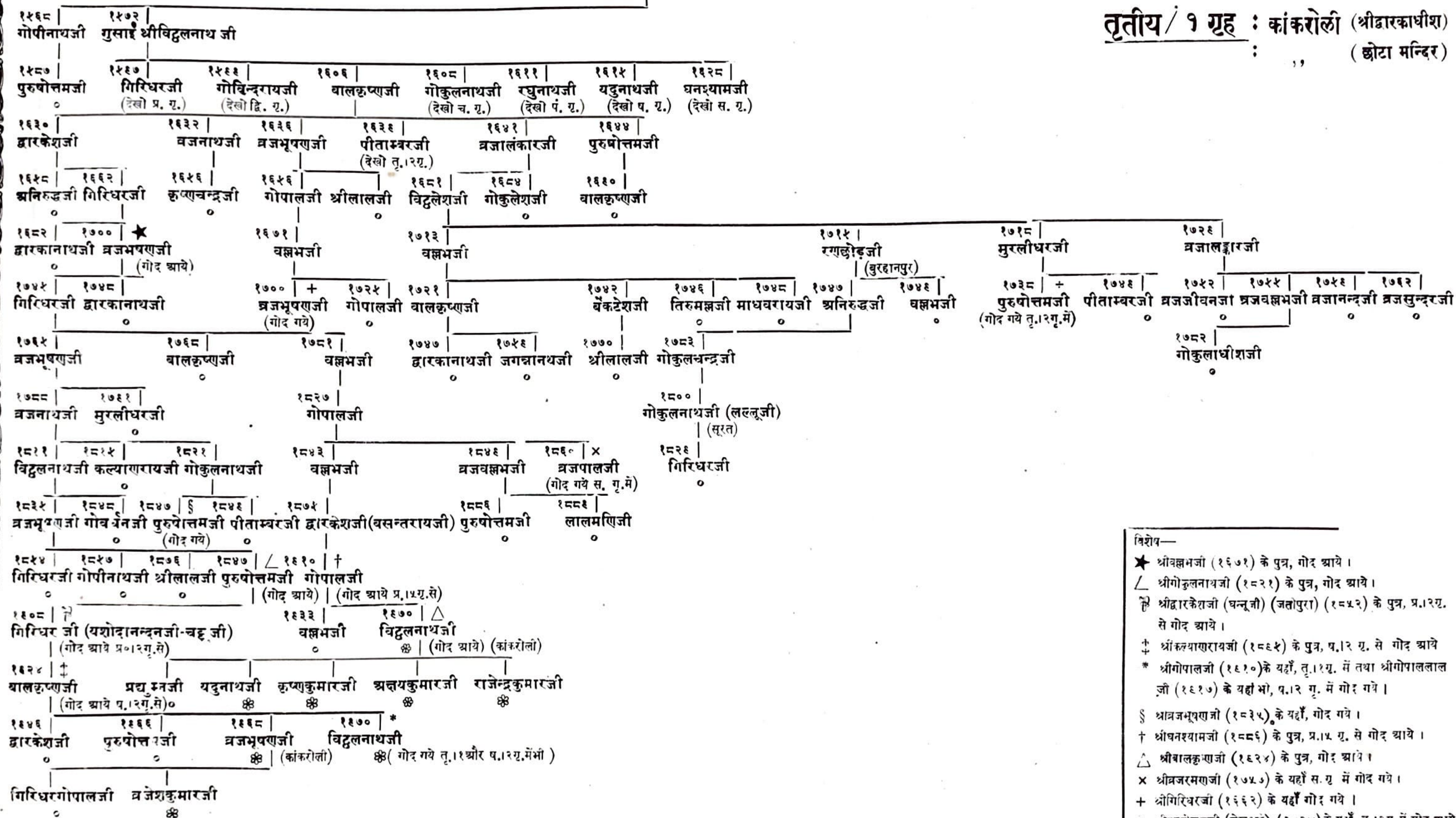
⸸ श्रीदानीरायजी (१८५५) के यहाँ, गोद गये।

† श्रीघनश्यामजी (१८४१) के पुत्र, गोद आये।

‡ श्रीजीवनजी(१९१६) पोरबन्दर के पुत्र, प्र,।५गृ. से गोद आये।

§ श्रीमुरलीधरजी (बेट) के पुत्र, प्र.।४गृ. से गोद आये।

△ श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र, प्र.।६ गृ. से गोद आये।



१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु
तृतीय/१ गृह : कांकरोली (श्रीद्वारकाधीश)
: ,, (छोटा मन्दिर)
१५६८ गोपीनाथजी
१५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथ जी
१५८७ पुरुषोत्तमजी
१५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.)
१५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.)
१६०६ बालकृष्णजी
१६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.)
१६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.)
१६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.)
१६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)
१६३० द्वारकेशजी
१६३२ व्रजनाथजी
१६३६ व्रजभूषणजी
१६३३ पीताम्बरजी (देखो तृ.।२गृ.)
१६४१ व्रजालंकारजी
१६४४ पुरुषोत्तमजी
१६५८ अनिरुद्धजी
१६६२ गिरिधरजी
१६५६ कृष्णचन्द्रजी
१६५६ गोपालजी
श्रीलालजी
१६८१ विट्ठलेशजी
१६८४ गोकुलेशजी
१६९० बालकृष्णजी
१६८२ द्वारकानाथजी
१७०० ★ व्रजभूषणजी (गोद आये)
१६७१ वल्लभजी
१७१३ वल्लभजी
१७१५ रणछोड़जी (बुरहानपुर)
१७१८ मुरलीधरजी
१७२६ व्रजालङ्कारजी
१७४५ गिरिधरजी
१७४८ द्वारकानाथजी
१७०० + व्रजभूषणजी (गोद गये)
१७२५ गोपालजी
१७२१ बालकृष्णजी
१७४२ वेंकटेशजी
१७४६ तिरुमल्लजी
१७४८ माधवरायजी
१७४७ अनिरुद्धजी
१७४१ वल्लभजी
१७३८ ÷ पुरुषोत्तमजी (गोद गये तृ.।२गृ.में)
१७४६ पीताम्बरजी
१७५२ व्रजजीवनजी
१७५५ व्रजवल्लभजी
१७५१ व्रजानन्दजी
१७६२ व्रजसुन्दरजी
१७६५ व्रजभूषणजी
१७६८ बालकृष्णजी
१७८१ वल्लभजी
१७४७ द्वारकानाथजी
१७५६ जगन्नाथजी
१७७० श्रीलालजी
१७८३ गोकुलचन्द्रजी
१७८२ गोकुलाधीशजी
१७८८ व्रजनाथजी
१७९१ मुरलीधरजी
१८२७ गोपालजी
१८०० गोकुलनाथजी (ललूजी) (सूरत)
१८११ विट्ठलनाथजी
१८१५ कल्याणरायजी
१८२१ गोकुलनाथजी
१८४३ वल्लभजी
१८४६ व्रजवल्लभजी
१८६९ × व्रजपालजी (गोद गये स. गृ.में)
१८२६ गिरिधरजी
१८३५ व्रजभूषणजी
१८४८ गोवर्धनजी
१८४७ § पुरुषोत्तमजी (गोद गये)
१८४९ पीताम्बरजी
१८७५ द्वारकेशजी(बसन्तरायजी)
१८८६ पुरुषोत्तमजी
१८८९ लालमणिजी
१८५४ गिरिधरजी
१८७७ गोपीनाथजी
१८७६ श्रीलालजी
१८७७ पुरुषोत्तमजी (गोद आये)
∠ १९१० † गोपालजी (गोद आये प्र.।५गृ.से)
१९०८ [?] गिरिधर जी (यशोदानन्दनजी-बद्दूजी) (गोद आये प्र०।२गृ.से)
१९३३ वल्लभजी
१९७० △ विट्ठलनाथजी ❀ (गोद आये) (कांकरोली)
१९२४ ‡ बालकृष्णजी (गोद आये ष.।२गृ.से)
प्रद्युम्नजी
यदुनाथजी ❀
कृष्णकुमारजी ❀
अक्षयकुमारजी ❀
राजेन्द्रकुमारजी ❀
१९४६ द्वारकेशजी
१९६६ पुरुषोत्तमजी
१९६८ व्रजभूषणजी ❀ (कांकरोली)
१९७० * विट्ठलनाथजी ❀(गोद गये तृ.।१और ष.।२गृ.मेंभी)
गिरिधरगोपालजी
व्रजेशकुमारजी ❀
विशेष—
★ श्रीवल्लभजी (१६७१) के पुत्र, गोद आये।
∠ श्रीगोकुलनाथजी (१८२१) के पुत्र, गोद आये।
[?] श्रीद्वारकेशजी (घन्नूजी) (जतीपुरा) (१८५२) के पुत्र, प्र.।२गृ. से गोद आये।
‡ श्रीकल्याणरायजी (१८६५) के पुत्र, ष.।२ गृ. से गोद आये
* श्रीगोपालजी (१९१०)के यहाँ, तृ.।१गृ. में तथा श्रीगोपाललालजी (१९१७) के यहां भी, ष.।२ गृ. में गोद गये।
§ श्रीव्रजभूषणजी (१८३५) के यहाँ, गोद गये।
† श्रीघनश्यामजी (१८८६) के पुत्र, प्र.।५ गृ. से गोद आये।
△ श्रीबालकृष्णजी (१९२४) के पुत्र, गोद आये।
× श्रीव्रजरमणजी (१७५०) के यहाँ स. गृ. में गोद गये।
+ श्रीगिरिधरजी (१६६२) के यहाँ गोद गये।
÷ श्रीपुरुषोत्तमजी (लेखवारे) (१७२४) के यहाँ, तृ.।२गृ. में गोद आये

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

तृतीय/२ गृह : सूरत

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथ जी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० — १५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० द्वारकेशजी (देखो तृ.।१गृ.) — १६३२ ब्रजनाथजी (देखो तृ.।१गृ.) — १६३६ ब्रजभूषणजी (देखो तृ.।१गृ.) — १६३९ पीताम्बरजी — १६४१ ब्रजालंकारजी (देखो तृ.।१गृ.) — १६४४ पुरुषोत्तमजी (देखो तृ.।१गृ.)

१६६१ श्यामलजी — १६६३ यदुपतिजी

१६८२ ब्रजरायजी (सूरत) — १६८७ ब्रजपालजी — १७०० पीताम्बरजी — १७०४ श्रीलालजी ०

१७२४ ★ पुरुषोत्तमजी (लेखवारे) (गोद आये) — १७०७ ब्रजरायजी ० — १७२४ 卐 पुरुषोत्तमजी (लेखवारे) (गोद गये)

१७४९ यदुपतिजी ० — △ पुरुषोत्तमजी (गोद आये तृ.।१गृ.से)

१७६० दामोदरजी ० — १७७० गोवर्धनेशजी

१८१६ + गोकुलोत्सवजी (गोद आये द्वि०।१गृ.से)

१८३५ × गोपेश्वरजी (गोद गये द्वि.।१गृ.में) — १८३७ लक्ष्मीनृसिंहजी — १८४१ ब्रजरत्नजी — १८५२ ब्रजाभरणजी ० — १८५५ ब्रजमोहनजी ० — १८५८ पुरुषोत्तमजी ०

१८५८ लक्ष्मणजी ० — १८६१ कल्याणरायजी — १८६५ श्रीनृसिंहजी(छगनजी) ० — १८७२ पुरुषोत्तमजी ० — १८७५ गोवर्धनेशजी ० — १८८३ यदुनाथजी — १८८६ दामोदरजी(दानीरायजी) ० — १८८८ रसिकरायजी ० — १८९२ ब्रजरत्नजी(छगनजी) ० — १८९९ बेंकटेशजी(मगनजी) — १८९८ लक्ष्मणजी ० — १९०२ श्रीलालजी ०

१८९५ श्रीनृसिंहजी ० — १९०१ पुरुषोत्तमजी ० — १९१२ घनश्यामजी ० — १९५० गोकुलोत्सवजी ० — १९५२ ब्रजरत्नजी ❀ (सूरत)

१९७० गोविन्दरायजी ❀ — १९७२ मधुसूदनजी ❀

१९९१ बालकृष्णजी ❀ — १९९५ कल्याणरायजी ❀ — १९९४ मथुरेशजी ❀ — रघुनाथजी ❀ — चन्द्रगोपालजी ❀

विशेष—

★ श्रीपीताम्बरजी (१७००) के पुत्र, गोद आये।

△ श्रीमुरलीधरजी (१७१८) के पुत्र, तृ.।१ गृ. से गोद आये।

+ श्रीगोविन्दरायजी (१७८५) के पुत्र, द्वि.।१ गृ. से गोद आये।

× श्रीविट्ठलेशरायजी (१८११) के यहाँ, द्वि.।१गृ. में गोद गये।

卐 श्रीब्रजरायजी (१८६२) (सूरत) के यहाँ, गोद गये।

चतुर्थ गृह : गोकुल

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथ जी

(गोपीनाथजी) १५८७ पुरुषोत्तमजी ०

(गुसाईं श्रीविट्ठलनाथ जी) — १५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

(गोकुलनाथजी) — १६४२ गोपालजी ० — १६४५ विट्ठलेशजी — १६५० व्रजरत्नजी ०

(विट्ठलेशजी) — १६६५ गोवर्धनेशजी

(गोवर्धनेशजी) — १६९३ व्रजपतिजी — १६९७ व्रजाधीशजी ० — १६९९ गोपिकाधीशजी ० — १७०१ व्रजवल्लभजी ०

(व्रजपतिजी) — १८६६ ★ लक्ष्मणजी (गोद आये द्वि.।२गृ. से)

(लक्ष्मणजी) — १८८४ नत्थू जी ० — १९७५ △ कन्हैयालालजी (गोद आये ष।२गृ. से)

(कन्हैयालालजी) — १९४८ ✤ वल्लभलालजी (गोद आये पं. गृ. से)

(वल्लभलालजी) — १९८७ गोविन्दरायजी ❀ (गोकुल, कामवन) — १९९० गोकुलनाथजी ❀ — १९९३ जयदेवलालजी ❀

विशेष—

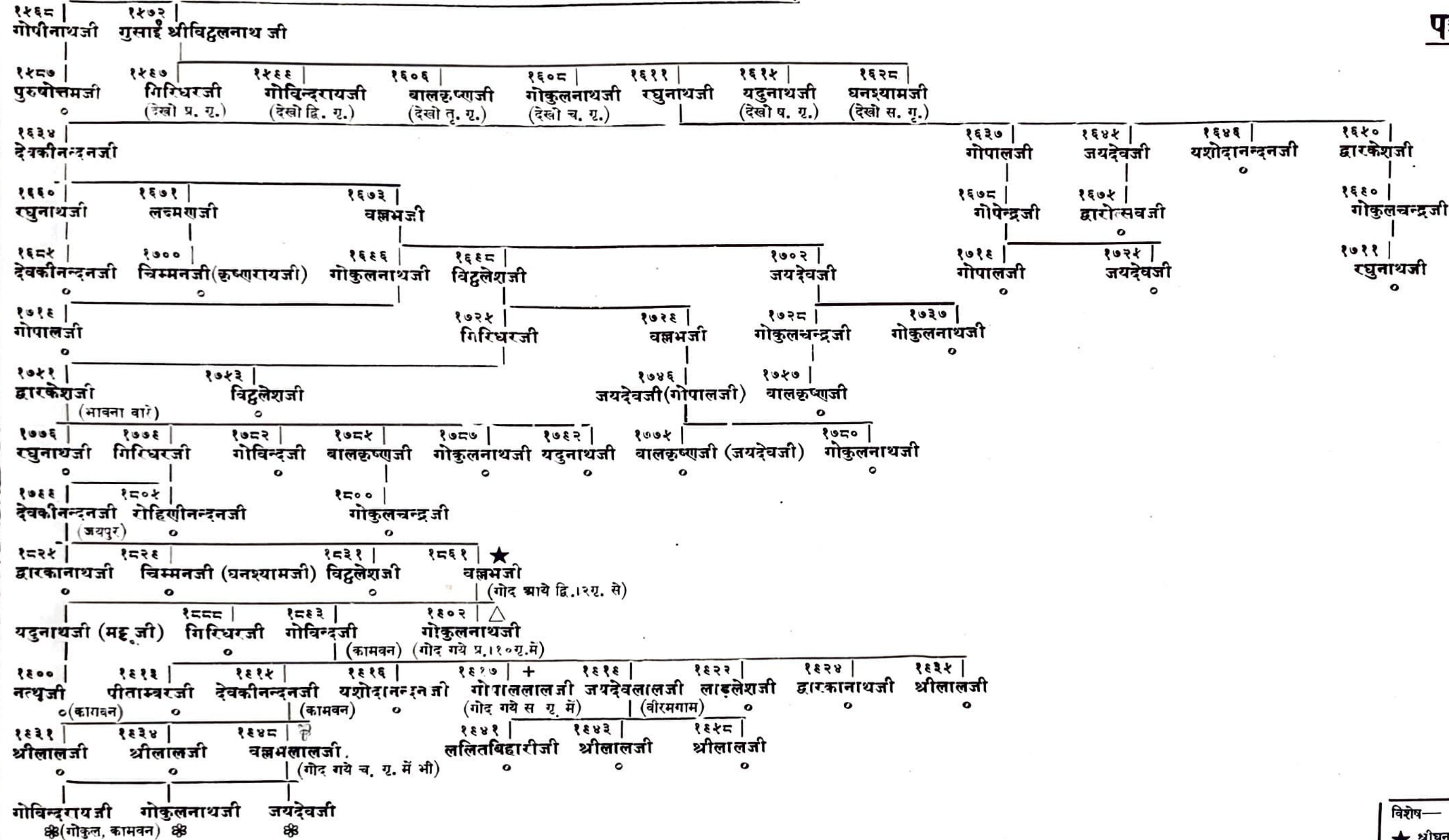
★। श्रीघनश्यामजी (१८४१) के पुत्र, द्वि.।२ गृ. से गोद आये।

[श्रीव्रजपतिजी (१६९३) के श्रीभामिनी बहूजी ने अपनी भतीजी श्रीफूलकुँवर बहूजी को गादी सौंपी, जो सप्तम गृह में श्रीरमणजी (१७०४) के पुत्र श्रीव्रजोत्सवजी (१७२६) के दूसरे बहूजी थे। इनके पुत्र श्रीव्रजरमणजी (१७५७) पं. गृ. (जयपुर) में श्रीगिरिधरजी (१७७६) के पुत्र श्रीदेवकीनन्दनजी (१७९९) के साथ रहे और श्रीमदनमोहनजी श्रीगोकुलनाथजी और श्री चन्द्रमाजी भी श्रीव्रजरमणजी के सन्तति न होने से श्रीदेवकीनन्दन जी ही तीनों स्वरूपों की सेवा करते थे । इनके तीन बहूजी थे। उनके प्रथम श्रीयमुना बहूजी ने द्वि.। २ गृ. से श्रीघनश्यामजी (१८४१) के पुत्र श्रीवल्लभजी (१८६१) को गोद लेकर पंचम गृह में तिलकायत किये, द्वितीय श्रीलक्ष्मी बहूजी ने द्वि.।२गृ. से उन्हीं श्रीघनश्यामजी (१८४१) के द्वितीय पुत्र श्रीलक्ष्मणजी (१८६६) को गोद लेकर चतुर्थ गृह में तिलकायत किये और श्रीरुक्मिणी बहूजी ने तृ.।१ गृ. से श्रीगोपालजी (१८२७) के पुत्र श्रीव्रजपालजी (१८६०) को गोद लेकर सप्तम गृह में तिलकायत किये।]

△ श्रीरमणलालजी (१९०४) के पुत्र, ष.।२ गृ. से गोद आये।

✤ श्रीदेवकीनन्दनजी (१९१५) के पुत्र, पं. गृ. से गोद आये।

पञ्चम गृह : कामवन (श्रीचन्द्रमाजी)



विशेष—

★ श्रीघनश्यामजी (१८४१) के पुत्र, द्वि.।२ गृह से गोद आये।

श्रीकन्हैयालालजी (१९२५) के यहाँ, च. गृह में भी गोद गये।

+ श्रीव्रजपालजी (१८५६) के यहाँ, स. गृह में गोद गये।

△ श्रीव्रजरत्नजी (१८२१) के यहाँ, प्र.।१० गृह में गोद गये।

षष्ठ/१ गृह : शेरगढ़ (बड़ौदा)

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ गुसांई श्रीविट्ठलनाथ जी

(गोपीनाथजी के) १५८७ पुरुषोत्तमजी ०

(गुसांई श्रीविट्ठलनाथ जी के) १५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

(यदुनाथजी के) १६३४ मधुसूदनजी (शेरगढ़) — १६३८ रामचन्द्रजी (देखो ष.।२गृ.) — १६४२ जगन्नाथजी (देखो ष.।३गृ.) — १६४४ बालकृष्णजी ० — १६४७ गोपीनाथजी

(मधुसूदनजी के) १६६० प्रद्युम्नजी — १६६४ मुरलीधरजी ०(जोड़ला) — १६६४ मथुरानाथजी ० — १६६७ विट्ठलनाथजी × (गोद गये ष.।२गृ. में) — १६८० त्रिम्मनजी △ (गोद गये ष.।३गृ. में)

(गोपीनाथजी के) १६९६ गोपालमणिजी ०

(प्रद्युम्नजी के) १७१७ विट्ठलनाथजी — १७१८ द्वारकानाथजी ०

(विट्ठलनाथजी के) १७६२ प्रद्युम्नजी — १७७४ मधुसूदनजी

(प्रद्युम्नजी के) १७८३ यदुनाथजी — १७८५ विट्ठलनाथजी + (गोद गये ष.।२गृ.मे) — १७९३ मुरलीधरजी — १८०० दामोदरजी (भरुच) — १८०२ गोपालजी

(मधुसूदनजी के) १८०० द्वारकानाथजी

(यदुनाथजी के) १८१७ गोकुलनाथजी

(मुरलीधरजी के) बालकृष्णजी ० — १८२५ विट्ठलनाथजी ० — १८३४ गोवर्धनजी ० — १८३६ मधुसूदनजी ० — १८३९ गोविन्दजी ०

(दामोदरजी के) १८२८ यदुनाथजी ०

(गोपालजी के) १८३९ यदुपतिजी ०

(द्वारकानाथजी के) १८४० वल्लभजी ०

(गोकुलनाथजी के) १८३६ प्रद्युम्नजी — १८५१ यदुनाथजी ०

(प्रद्युम्नजी के) १८६१ यदुनाथजी

(यदुनाथजी के) १८९६ गोकुलनाथजी ० — १८९८ श्रीलालजी ० — १९०० वल्लभजी

(वल्लभजी के) १९२३ गिरिधरजी ★ (गोद आये ष.।१गृ. से)

(गिरिधरजी के) १९४५ श्रीलालजी ० — १९६१ वल्लभलालजी ०(बड़ौदा)

विशेष—

★ श्रीव्रजनाथजी (१९०३) के पुत्र, ष.।१ गृह से गोद आये।
+ श्रीगोकुलमणिजी (१७०५) के यहाँ, ष.।२ गृह में गोद गये।
× श्रीरामचन्द्रजी (१६३८) (मथुरा) के यहाँ,ष.।२गृ. में गोद गये।
△ श्रीजगन्नाथजी (१६४२) (काशी) के यहाँ, ष.।३गृ. में गोद गये।

षष्ठ/२ गृह : मथुरा (मदनमोहनजी दाऊजी)
: ,, (छोटे मदनमोहनजी दाऊजी)

१५३५
श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० | १५६७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) | १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३४ मधुसूदनजी (देखो ष.।१गृ.) | १६३८ रामचन्द्रजी (मथुरा) | १६४२ जगन्नाथजी (देखो ष.।३गृ.) | १६४४ बालकृष्णजी ० | १६४७ गोपीनाथजी (देखो ष.।१ गृह)

१६६७ ★ विट्ठलनाथजी (गोद आये ष.।१गृ. से)

१७०५ गोकुलमणिजी

\+ विट्ठलनाथजी (गोद आये ष.।१ गृ. से)

१८०५ पुरुषोत्तमजी (ख्यालवारे) | १८०७ कल्याणरायजी ० | १८०८ गोपीनाथजी ० | १८१० × गोपालजी (गोद गये ष.।३गृ.में) | १८२१ गिरिधरजी ०

१८३७ कल्याणरायजी ० | १८३९ व्रजपालजी | १८४५ गोकुलनाथजी ० | १८४७ मथुरानाथजी ०

१८७१ मथुरानाथजी ० | १८७५ विट्ठलनाथजी | १८७६ पुरुषोत्तमजी

१८९५ कल्याणरायजी | १८९५ गोविन्दजी (जोड़ला) ० | १८९७ मुरलीधरजी ० | १८९७ श्रीलालजी (जोड़ला) ० | १८९९ गोवर्धनजी ० | १९०१ गोविन्दजी ० | १९०३ व्रजनाथजी | १९०३ गोकुलनाथजी (जोड़ला) ० | १९०८ श्रीलालजी ० | १९०२ श्रीलालजी ० | १९०४ रमणलालजी

१९१७ गोपाललालजी | १९२० गोविन्दजी ० | १९२२ △ जीवनलालजी (गोद गये ष।३गृ. में) | १९२४ § बालकृष्णजी (गोद गये तृ.।१ गृ. में) | १९२० बैंकटेशजी ० | १९२३ † गिरिधरलालजी (गोद गये ष.।१गृ. में) | १९२५ * मधुसूदनजी (गोद गये प्र.।८गृ. में) | १९२७ श्रीलालजी ० | १९२३ व्रजपालजी | १९२५ & कन्हैयालालजी (गोद गये च. गृ. में) | १९२८ श्रीलालजी ० | १९३२ ⁂ घनश्यामलालजी ❀(गोद गये प्र.।१० गृ. में)

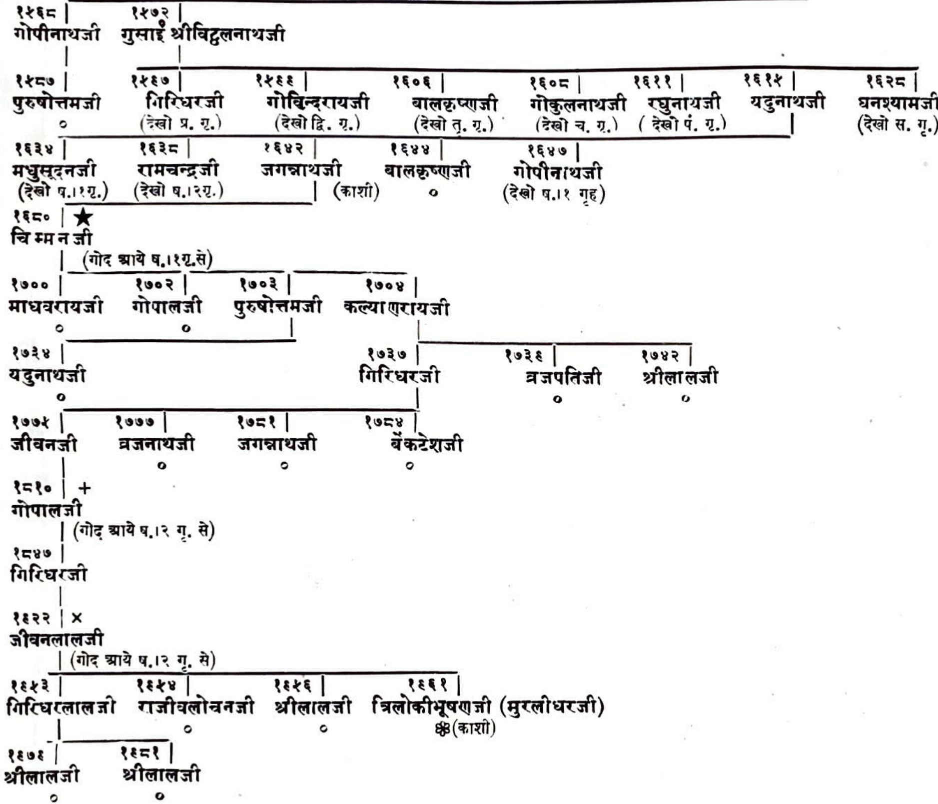
१९७० ∠ विट्ठलनाथजी ❀ (गोद आये तृ.।१ गृ. से) (मथुरा) | १९४६ ‡ दामोदरलालजी (गोद आये प्र.।१० गृ. से)

प्रद्युम्नजी ० | यदुनाथजी ❀ | वेंकटेशजी ० | कृष्णकुमारजी ❀ | अक्षयकुमारजी ❀ | राजेन्द्रकुमारजी ❀ | ‡ पुरुषोत्तमलालजी ❀(गोद गये प्र.।११ गृ. में) | व्रजरमणजी ❀ (मथुरा)

विशेष—

- ★ श्रीमधुसूदनजी (१६३४) (शेरगढ़) के पुत्र, ष.।१ गृह से गोद आये
- \+ श्रीप्रद्युम्नजी (१७६२) के पुत्र, ष.।१ गृह से गोद आये।
- × श्रीजीवनजी (१७७५) के यहाँ, ष.।३ गृह में गोद गये।
- ∠ श्रीबालकृष्णजी (१६२४) के पुत्र, तृ.।१ गृ. से गोद आये।
- △ श्रीगिरिधरजी (१८४७) के यहाँ, ष.।३ गृह में गोद गये।
- § श्रीगिरिधरजी (१८६६) के यहाँ, तृ.।१ गृ. में गोद गये।
- † श्रीवल्लभजी (१९००) के यहाँ, ष.।१ गृह में गोद गये।
- * श्रीव्रजरायजी (१८९७) के यहां, प्र.।८ गृह में गोद गये।
- ‡ श्रीघनश्यामलालजी (१९३२) के पुत्र, प्र.।१० गृह से गोद आये।
- ‡ श्रीगोपालजी (१९२४) के यहां, प्र.।११ गृह में गोद गये।
- & श्रीलक्ष्मणजी (१८६६) के यहां, च. गृह में गोद गये।
- ⁂ श्रीविट्ठलेशजी (१९०८) के यहां, प्र.।१० गृह में गोद गये।

षष्ठ/३ गृह: काशी



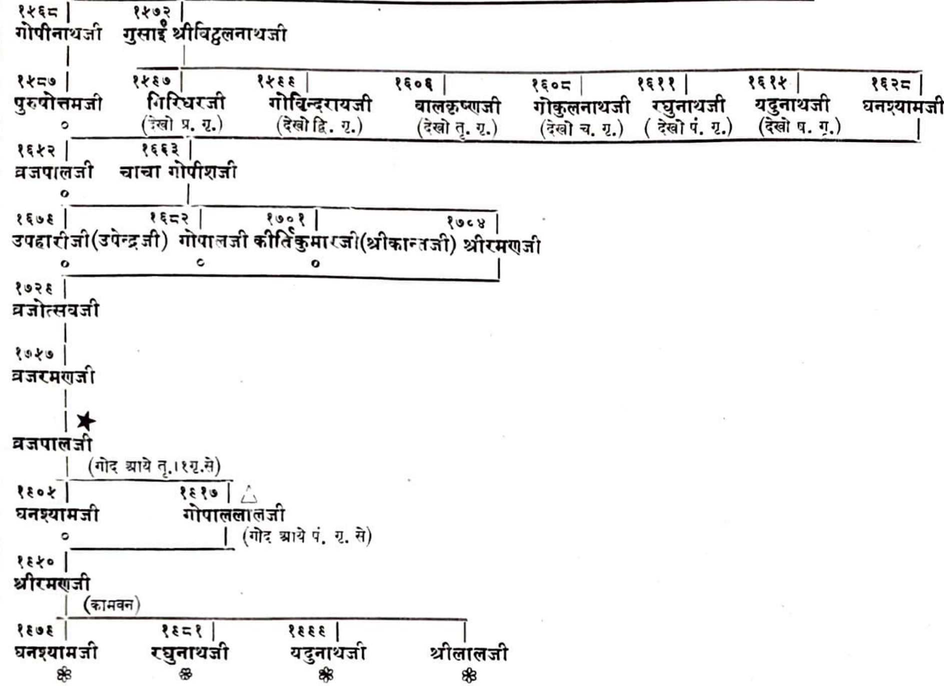
विशेष—

★ श्रीमधुसूदनजी (१६३४) के पुत्र, ष.।१ गृह से गोद आये।

+ श्रीविट्ठलनाथजी (१७६५) के पुत्र, ष.।२ गृह से गोद आये।

× श्रीकल्याणरायजी (१८६५) के पुत्र, ष.।२ गृह से गोद आये।

सप्तम गृह : कामवन (श्रीमदनमोहनजी)



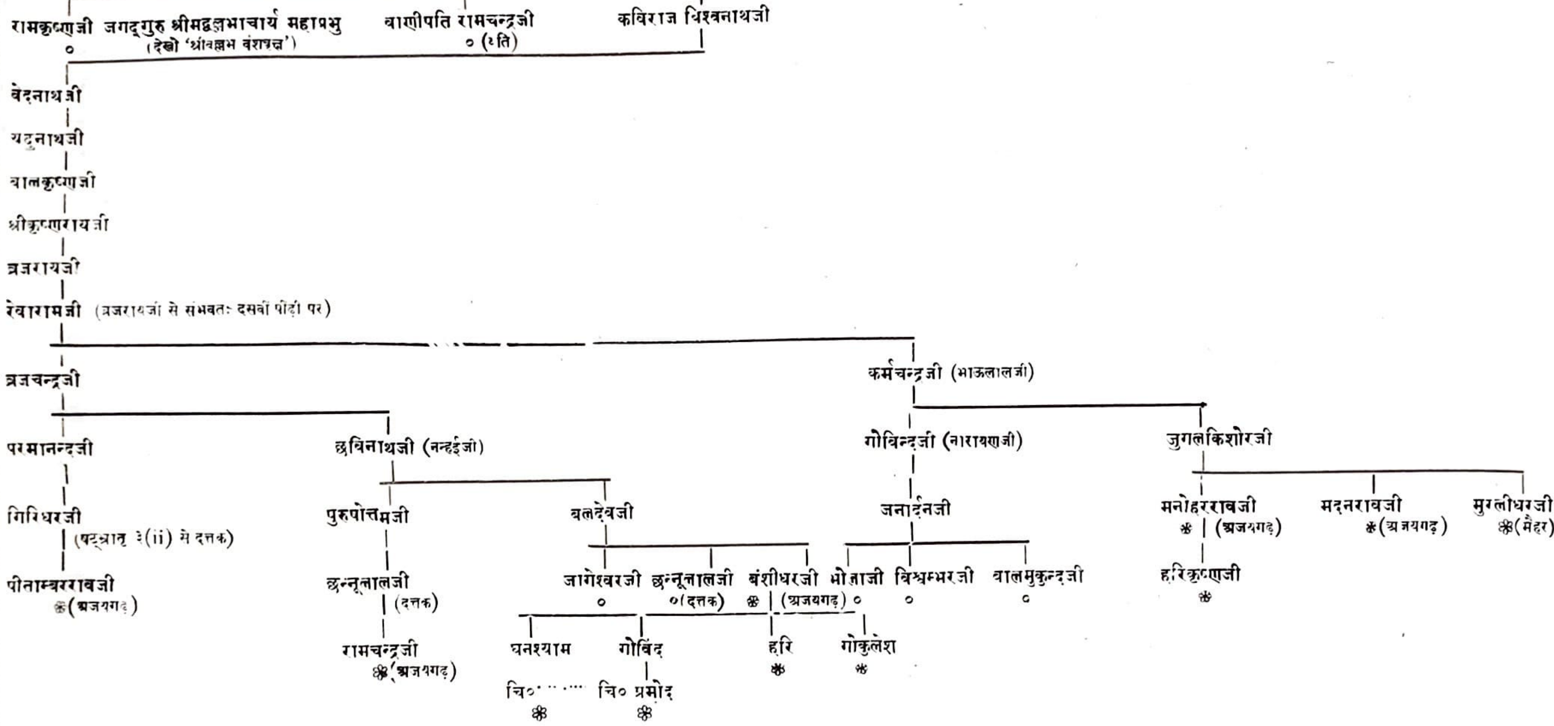
विशेष—

★ श्रीगोपालजी (१८२७) के पुत्र, तृ.।१ गृह से गोद आये।

△ श्रीगोविन्दजी (१८६३) के पुत्र, पं. गृह से गोद आये।

प्रकाशक : क. गोकुलानन्द तैलङ्ग सा. भू.]

[मुद्रक : प्रभुदयाल मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा।



आङ्गिरस-बार्हस्पत्य-भारद्वाज—त्रिप्रवरान्वित

×ऋग्वेदान्तर्गत

शाकल-आश्वलायन-शाखाध्यायी

भारद्वाज-नेत

[क/१]

अजयगढ़-मैहर आदि

× मूलतः श्रीलक्ष्मणभट्टजी की समस्त परम्पराएँ कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत तैत्तरीय शाखाध्यायिनी हैं, किन्तु परवर्ती पीढ़ियाँ अपनी शाखा के उपाध्याय नहीं मिलने से आश्वलायन ऋग्वेदी होगयीं।

卐

- **मुरलीधरजी** (कवीश्वर)
  - गिरिधरजी
    - गङ्गाधरजी
      - महीधरजी
        - कोदण्डधरजी (छन्नूजी) ❀ (गौरहार)
        - श्रीधरजी (श्रीकृष्णजी) ❀ (गौरहार)
      - रमाधरजी (पीताम्बरजी) ❀ (टीकमगढ़)
      - चम्पालालजी ○ (चित्रकूट)
    - कलाधरजी ○
    - भूधरजी ○

卐

भारद्वाज-नेत

[क/२]

बांदा, गौहार, टीकमगढ़, चित्रकूट आदि

★

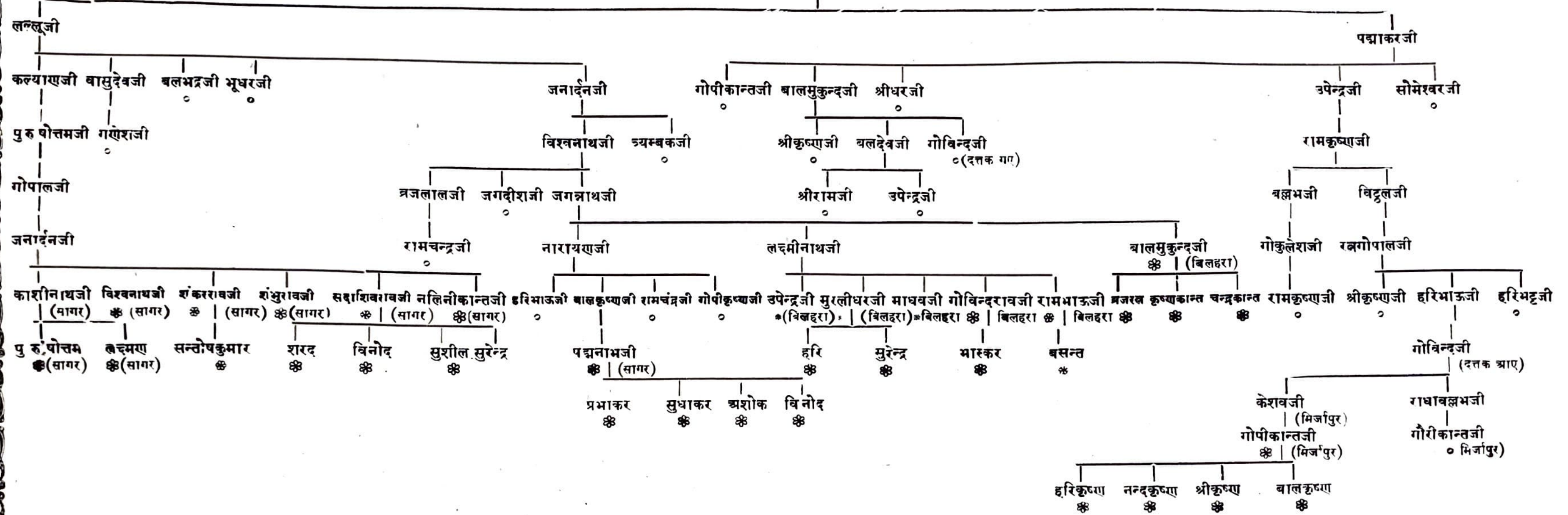
- ?
  - दिनकरजी
    - शिहारीलालजी
      - भूमिश्रवाजी
      - मोहनजी ○
    - बलभद्रजी
      - गोविंदजी ○
  - नाथूरामजी
    - ब्रजलालजी
      - शंकरजी
        - वंशीधरजी ○ (जबलपुर)
        - गिरिधारीलालजी (जबलपुर)
          - बालकृष्णजी ❀ (सागर)
            - दुर्गाशंकर ❀
            - रमाशंकर ❀
      - गोपालजी
        - कन्हैयालालजी ○
    - चक्रपाणिजी
      - गोकुलजी ○
      - हरिकृष्णजी ○ (चकरधा)
      - हलधरजी
        - दामोदरजी ❀ (कोटा)
        - हरिगोविंदजी ❀ (कोटा)
    - माखनजी
      - बालगोविंदजी
        - रघुनन्दन ○
      - सर्वसुखजी
        - तिन्नूजी ○
        - मन्नूजी
          - गिरिधारीजी (कांकरोली)
            - कन्हैयालालजी ❀ (नाथद्वारा)
            - द्वारकानाथजी ❀ (नाथद्वारा)
        - छन्नूजी ○
  - मंचलजी
    - गोवर्धनजी
      - मदनजी ○
    - ब्रजगोविंदजी
      - खुन्नीजी ○

★

भारद्वाज-नेत

[क/३]

सागर, कोटा, नाथद्वारा आदि (हिंडोरियास्थ)



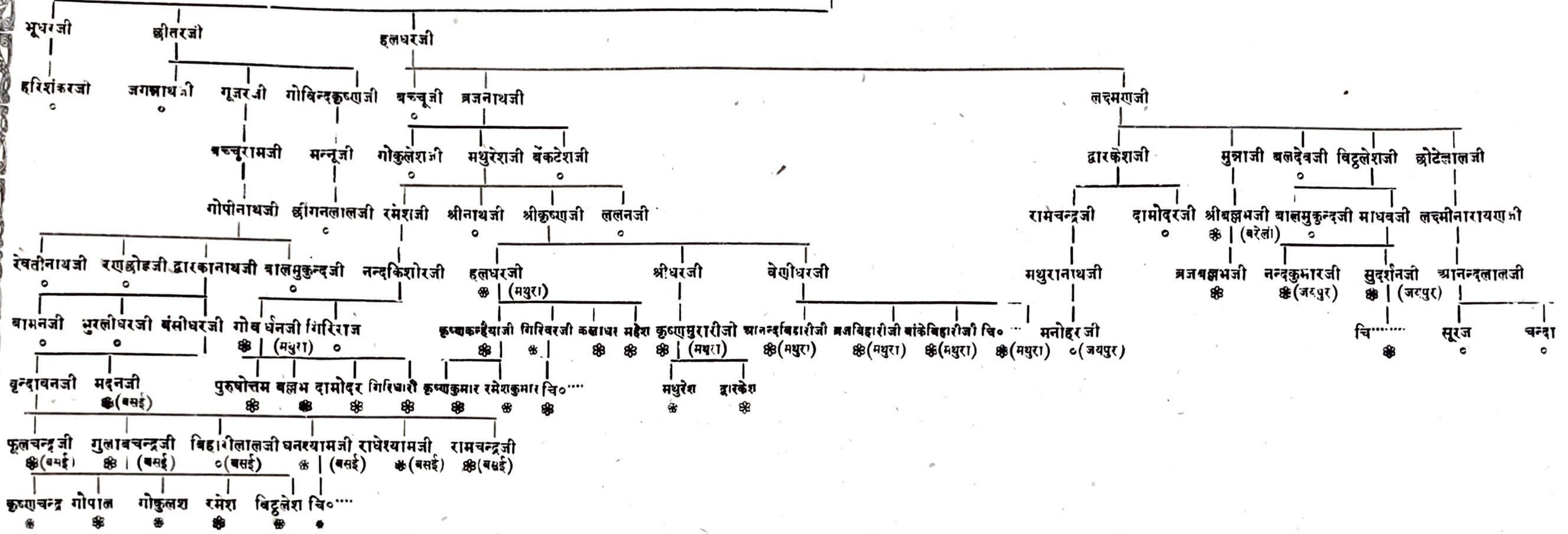
शौंग भारद्वाज-नेत

[क/४]

सागर, बिलहरा, मिर्जापुर आदि

विद्यागुरु दीक्षितलालजी

वेणीमाधवजी

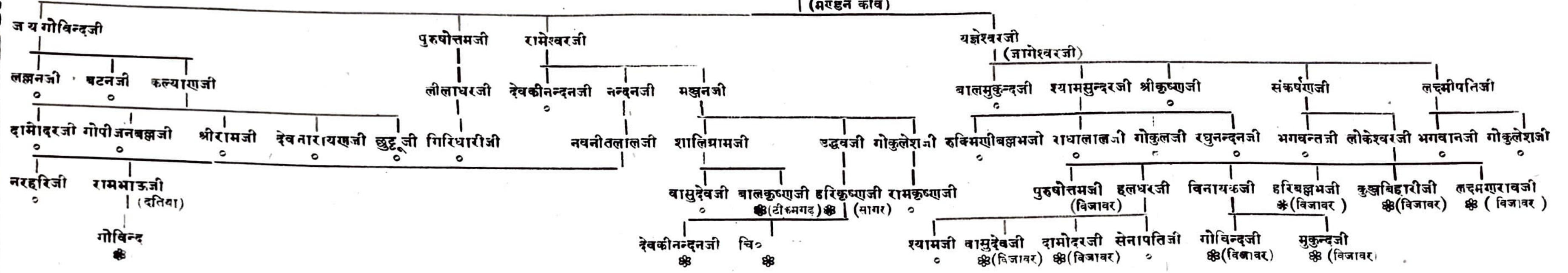


आङ्गिरस-बार्हस्पत्य भारद्वाज-त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब शाखाध्यायी

भारद्वाज-नेत

[क/५]

बसई, मथुरा, जयपुर, बरेली आदि



आङ्गिरस-बार्हस्पत्य-भारद्वाज-त्रिप्रवरान्वित
ऋग्वेदान्तर्गत
शाकल-आश्वलायन-शाखाध्यायी

भारद्वाज-बाजपेयी

[ख]

नयाकिला, दतिया, टीकमगढ़, सागर, बिजावर आदि

आत्रेय-आर्चनानस-शावास्य–त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब शाखाध्यायी

आत्रेय-द्राविड़ा गोस्वामी

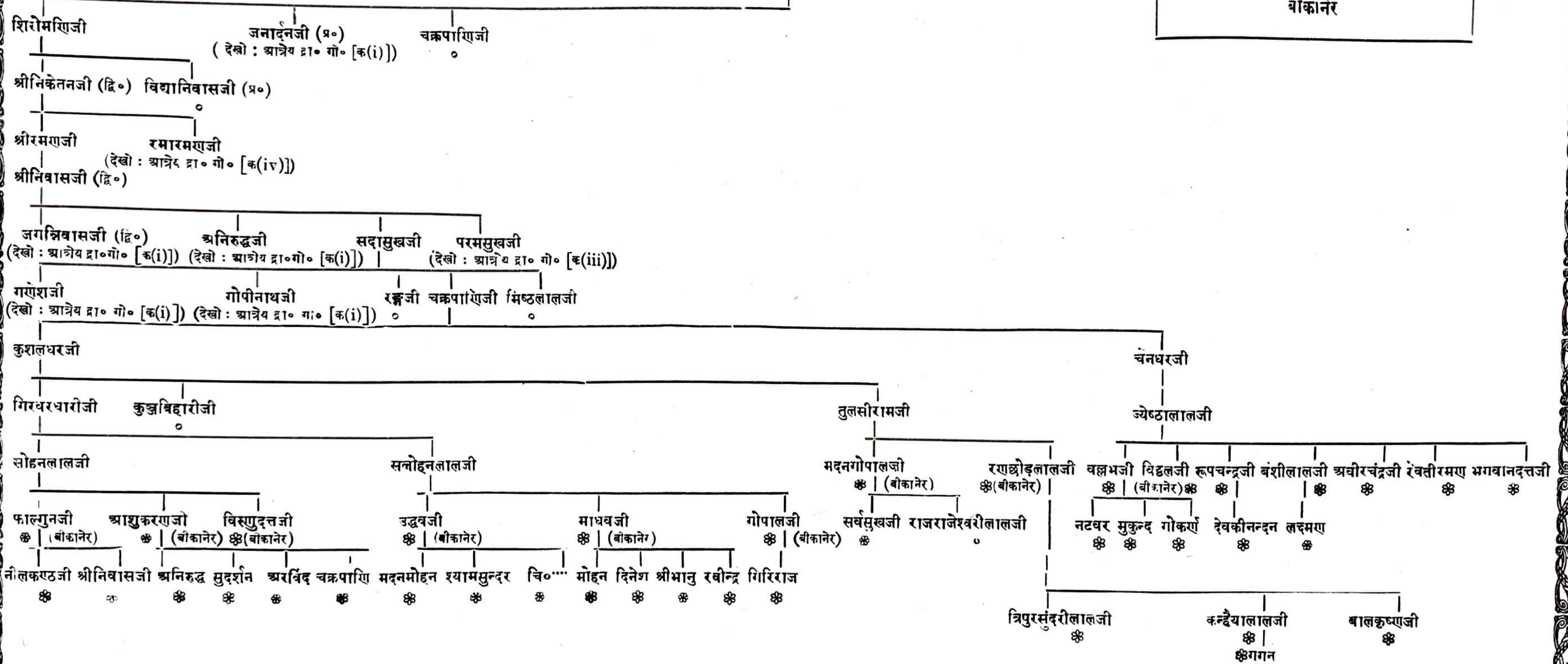
[क(i)]
बीकानेर

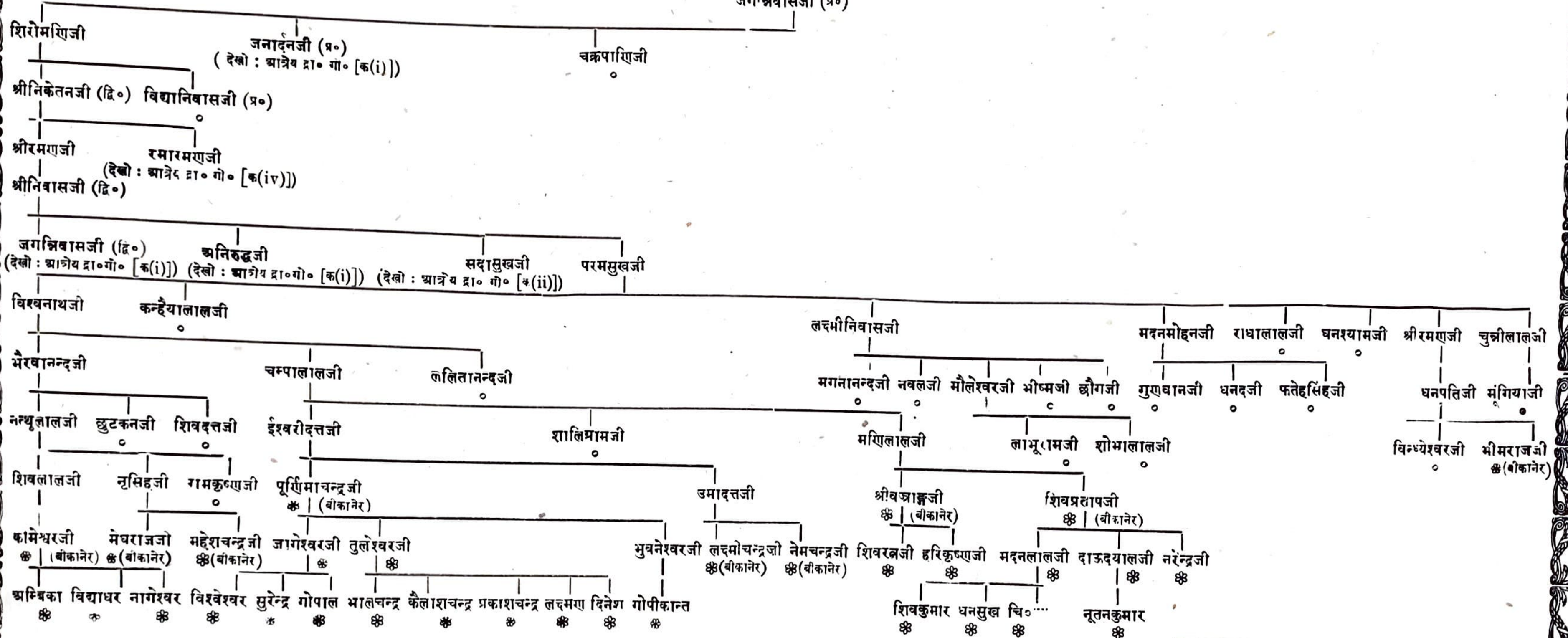
- श्रीवेंकटेशजी
  - श्रीसमरपुंगव दीक्षित
    - श्रीतिरुम्मलजी दीक्षित
      - श्रीनिकेतनजी (प्र०)
        - श्रीनिवासजी गोस्वामी (प्र०) (दक्षिण से आये)
          - जगन्निवासजी (प्र०)
            - शिरोमणिजी
              - श्रीनिकेतनजी (द्वि०)
                - राधारमणजी
                  - श्रीनिवासजी (द्वि०)
                    - जगन्निवासजी (द्वि०)
                      - हीरानन्दजी ०
                      - गोविन्दजी
                        - मल्लारीजी
                          - विनायकजी
                            - तनसुखजी ❀ (बीकानेर)
                          - जीवनजी
                            - जानकीनाथजी ०
                      - व्रजगोविन्दजी
                        - अम्बादत्तजी
                          - लड़ैतीलालजी ०
                          - धनजी ०
                        - करुणानन्दजी ०
                        - रामकृष्णजी ०
                      - महालालजी
                        - दुर्गादत्तजी
                          - मुरलीधरजी
                            - लक्ष्मीपतिजी ०
                            - सुखविलासजी ❀ (बीकानेर)
                        - देवीदत्तजी ०
                      - हरिगोविन्दजी ०
                    - अनिरुद्धजी
                      - नवनीतलालजी
                        - श्रीकृष्णजी ०
                        - छोटेलालजी ०
                        - प्यारेलालजी ०
                        - गिरिधरलालजी ०
                    - सदासुखजी
                      - गणेशजी
                        - अक्षयधरजी
                          - सम्पत्तिधरजी
                            - शिवबक्सजी ❀ (बीकानेर)
                              - गोपालजी ❀
                              - गौरीशंकरजी ❀
                        - श्रीधरजी ०
                        - हर्षमल्लजी ०
                        - नवदुर्गादत्तजी ०
                    - परमसुखजी (देखो : आत्रेय द्रा० गो० [क (iii)])
                      - गोपीनाथजी
                        - कलाधरजी ०
                        - जलधरजी
                          - मन्नालालजी ०
                          - नारायणजी
                            - जुहारमलजी ०
                            - श्रीकृष्णलालजी ❀ बीकानेर
                              - बलदेवजी ❀
                          - तारेश्वरजी ०
                        - हलधरजी
                          - अर्जुनजी
                            - रामकृष्णजी ०
                          - इन्द्रमणिजी
                            - ललितकिशोरजी ❀ (बीकानेर)
                              - आनन्दीलालजी ❀
                              - व्रजरमणजी ❀
                              - राधारमणजी ❀
                          - चन्द्रमणिजी ❀ (बीकानेर)
                        - आनन्दघनजी ०
                      - रङ्गजी ० (देखो: आत्रेय द्रा० गो० [क(ii)])
                      - चक्रपाणिजी
                      - मिष्ठलालजी ०
                - रमारमणजी (देखो : आत्रेय द्रा० गो० [क(iv)])
              - विद्यानिवासजी (प्र०)
            - जनार्दनजी (प्र०)
              - लक्ष्मीनिवासजी ०
            - चक्रपाणिजी ०

आत्रेय-द्राविड़ा गोस्वामी

[क(ii)]

बीकानेर





आत्रेय-द्राविड़ा गोस्वामी

[क(iii)]

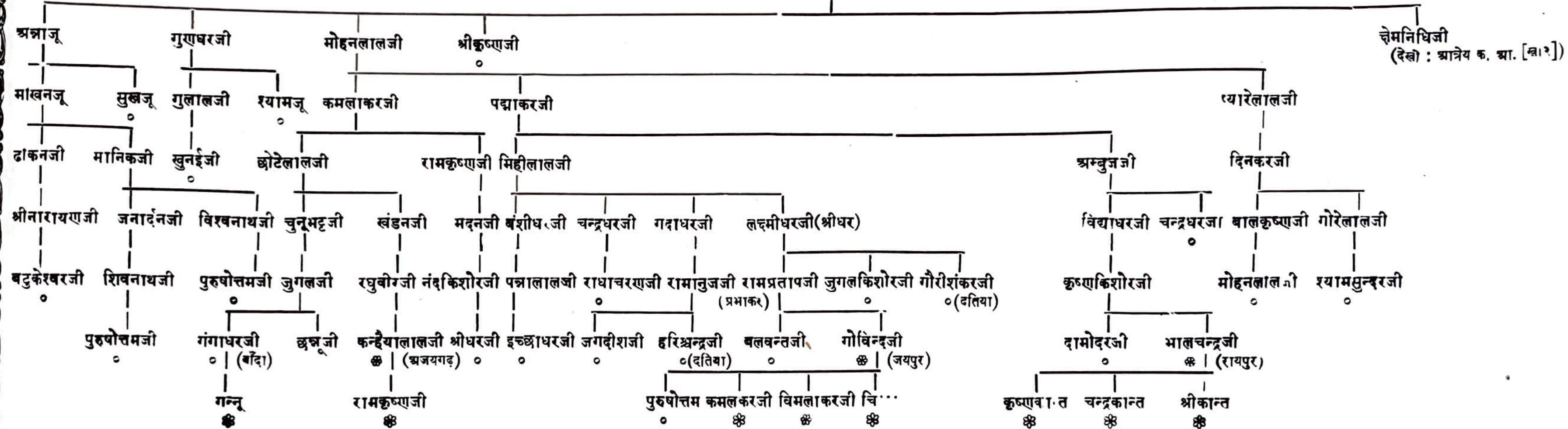
बीकानेर

- वेंकटेशजी
  - श्रीसमरपुंगव दीक्षित
    - श्रीतिरुम्मलजी दीक्षित
      - श्रीनिकेतनजी (प्र०)
        - श्रीनिवासजी गोस्वामी (प्र०) [दक्षिण से आये]
          - जगन्निवासजी (प्र०)
            - शिरोमणिजी
              - श्रीनिकेतनजी (द्वि०)
                - श्रीरमणजी (देखो : आत्रेय द्रा. गो. [क(i)])
                - रमारमणजी
                  - विद्यानिवासजी (गुलालजी)
                    - लक्ष्मीनिवासजी
                      - गंगादत्तजी
                        - मन्नालालजी
                          - भैरवदत्तजी ❀
                          - पुरुषोत्तमजी ❀
                        - जीवनलालजी ○
                      - पीताम्बरजी ○
                      - जनार्दनजी ○
                      - शुकदेवजी ○
                    - शिवलालजी
                      - सुखलालजी
                        - रामनरायणजी ○
                        - श्रीगोविन्दजी ❀
                        - श्रीकृष्णजी ○
                    - रूपलालजी
                      - शिवनारायणजी
                        - लक्ष्मीनारायणजी
                          - कल्याणदत्तजी ❀
                          - घनश्यामजी ❀
                          - गणेशजी ❀
                          - वामदेवजी ❀
                        - प्रह्लादजी ❀
                        - कन्हैयालालजी ❀
                          - रेवतीरमणजी ❀
                          - कैलाशनाथजी ❀
                          - रघुनन्दनजी ❀
                          - मोतीबाबूजी ❀
                          - ब्रजरमणजी ❀
                        - दुर्गानारायणजी ❀
                      - गोवर्धनजी ○
                    - नन्दकिशोरजी
                      - रामचन्द्रजी
                        - गोपीकृष्णजी
                          - हरिकृष्णजी ❀
                            - चि० कृष्णदेव ❀
                          - रामस्वरूपजी ❀
                          - रामरतनजी ❀
                        - जयजयकृष्णजी
                          - श्यामसुन्दर ❀
                        - नारायणजी
                          - भगवद्दयाल ❀
                          - रामदयाल ❀
                          - प्रभुदयाल ❀
                      - राधाकृष्णजी ○
                      - रामकृष्णजी ○
              - विद्यानिवासजी (प्र०) ○

आत्रेय-द्राविड़ गोस्वामी

[क(iv)]

बीकानेर, महापुरा



आत्रेय, आर्चनानस, शावास्य-त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

आत्रेय-कवीश्वर आत्रेय

[ख/१]

बाँदा, अजयगढ़, दतिया, जयपुर, रायपुर आदि

- मधुकर भट्टजी
  - गंगारामजी
    - मोहनलालजी
      - श्रीगोविन्दजी
        - जनार्दनजी
          - अन्नाजू (देखो आत्रेद क. आ.[ख।१])
          - गुणधरजी (देखो आत्रेय क. आ.[ख।१])
          - मोहनलालजी (देखो आत्रेय क. आ [ख।१])
          - श्रीकृष्णजी ०
          - क्षेमनिधिजी
            - बलदेवजी ०
            - शिवरामजी
              - भैयारामजी (गंगाप्रसाद)
                - जगन्नाथजी ०
                - माखनजी
                  - सुन्दरलालजी
                    - मोहनलालजी
                      - गोपीनाथजी ❋ (जैतपुर)
                        - राजकुमारजी ❋
                - बिहारीजी
                  - मुकुन्दजी
                    - पद्माकरजी ०
                  - वल्लभजी
                    - गोवर्धनजी
                      - गणेशजी
                        - मानिकजी ❋ (अजयगढ़)
              - मन्नूलालजी
                - गोपालजी
                  - रमणजी
                    - नत्थूजी ०
                    - गोविन्दजी ०
                  - व्रजवल्लभजी
                    - जयकृष्णजी ०
                    - बालकृष्णजी
                      - श्रीकृष्णजी ०
                    - लक्ष्मीनाथजी ०
                    - बालमुकुन्दजी ०
                    - नन्दनन्दनजी ०
              - नारायणजी
                - हरिजी ०
                - गोवर्धनजी
                  - रामनाथजी
                    - भगवानजी ०
                  - जुगलकिशोरजी
                    - बलरामजी ०
                    - भोलानाथजी ०
                  - छोटेलालजी
                    - गणेशरावजी ❋ जबलपुर
                      - जगदीश ०
                    - हरिहरजी जबलपुर
                      - सुखजी ❋
                    - गोविन्दजी ❋ जबलपुर
                    - लूलीजी ० जबलपुर
                    - नारायणजी ❋ जबलपुर
                    - बालमुकुन्दजी ❋ जबलपुर
                    - रामचन्द्रजी ❋ जबलपुर
                      - पीताम्बर ❋
                    - राजेन्द्रजी ❋ जबलपुर
                      - देवेन्द्र ❋
                - रामेश्वरजी ०
                - गोविन्दजी ०
                - श्यामलेजी
                  - लक्ष्मीपतिजी ०

आत्रेय-कवीश्वर आत्रेय

[ख/२]

जैतपुर, जबलपुर आदि

परशुराम भट्ट

- यज्ञनाराणभट्टजी
  - विश्वनाथजी
    - श्रीकृष्णजी
      - गोपीकान्तजी
        - मधुसूदनजी
          - त्रिविक्रमजी
            - बालकृष्णजी (लालूभट्टजी)
              - रघुनाथजी
                - व्रजनाथजी
                  - बालमुकुन्दजी
                    - रणछोड़जी ०(भट्टजी)
                    - गोरीकान्तजी
                      - मोहनजी
                        - बलरामजी ०
                        - विट्ठलजी
                          - गोकुलचन्द्रजी
                            - मुरलीधरजी ❀(जयपुर)
                          - व्रजभूषणजी ❀ जयपुर)
                            - श्रीकृष्णजी ❀(बम्बई)
                              - वेणुगोपाल ❀
                        - माधवजी
                          - रणछोड़जी
                            - गिरिधारीलालजी ❀ (अलवर)
                              - गोकुलेशजी ❀
                              - गोपेश्वर ०(दत्तक गये)
                              - गदाधर ❀
                              - गोपीवल्लभ ❀
                            - गंगाधरजी (व्रजनगर)
                            - गोवर्धनजी ❀(अलवर)
                            - गोपालकृष्णजी (दत्तक गये) ❀(अलवर)
                          - रामकृष्णजी ०
                        - श्रीनाथजी ०
                        - माधवजी ०(दत्तक)
                      - द्वारकानाथजी ०(श्यामसुन्दरजी) ०
    - गोविन्दजी
      - वामनजी ०
      - मगनजी ०
  - शिवनाथजी
    - रामकृष्णजी
      - श्रीकान्तजी
        - मुरारीजी
          - नीलाम्बरजी
            - पुरुषोत्तमजी
              - गिरिधरभट्टजी (वैष्णवराज)
                - मोहनजी
                  - मुरलीधरजी
                    - श्रीकृष्णजी
                      - गणेशजी
                      - दामोदरजी
                      - नन्दकुमारजी ०
                    - रामचन्द्रजी ०
                  - वंशीधरजी
                    - गोकुलनाथजी
                      - बलभद्रजी ०
                      - संकर्षणजी ०
                  - वेंकटेशजी
                    - मथुरानाथजी
                      - जीवनलालजी
                        - गोपालकृष्णजी (दत्तक आये) ❀ (व्रजनगर गोकुल)
                          - गोपीरसिक ❀
                - छोटेलालजी
                  - जगन्नाथजी
                    - केशवरायजी
                      - जगन्नाथजी
                        - श्रीकृष्णजी ०
                - मन्नूलालजी
                  - गोपालजी ०
                  - रघुनाथजी ०
                  - माणिकजी
                    - बल्लभजी ०
                      - यदुनाथजी
                        - श्रीकृष्णजी
                          - गोपेश्वरजी (दत्तक आये) ०
                    - कृष्णवल्लभजी
                      - व्रजनाथजी ०(दत्तक गये भांकियामें) ०
                    - बालमुकुन्दजी ०
                      - मोहनजी
                  - घनश्यामजी
                    - गोविन्दजी
                      - गोपालजी (दत्तक) ०
                        - कृष्णचन्द्रजी ❀ (नाथद्वारा)
                          - चि० ... ❀
                          - चि० ... ❀
                    - व्रजजीवनजी ०
                    - बालकृष्णजी
                      - गोपालजी
                        - उद्धवजी ❀(नाथद्वारा)
                      - मधुसूदनजी
                        - बलदेवजी ❀ (नाथद्वारा)
                          - चि० ... ❀
                  - हरदेवजी ०
                  - बलदेवजी ०
- मन्नूभट्ट (उपाध्याय)
  - चि० ...
  - चि० ...
  - चि० ...
  - चि० ...
- पुरुषोत्तमजी
  - केशवरायजी
    - बालमुकुन्दजी
      - अच्युतरायजी
        - मदनगोपालजी
          - केशवरायजी (कृष्णरायजी)
            - बलरामजी (नत्थूजी)
              - कृष्णरायजी ०
              - गोकुलकृष्णजी ०
              - बालकृष्णजी ०
              - रामकृष्णजी ०
            - व्रजनाथजी
              - बंशीधरजी ०
              - मदनगोपालजी ०
              - लक्ष्मणजी (निकुञ्जबिहारीजी)
                - उद्धवजी ❀ (पोरबंदर-कोटा)
            - कृष्णचन्द्रजी ०

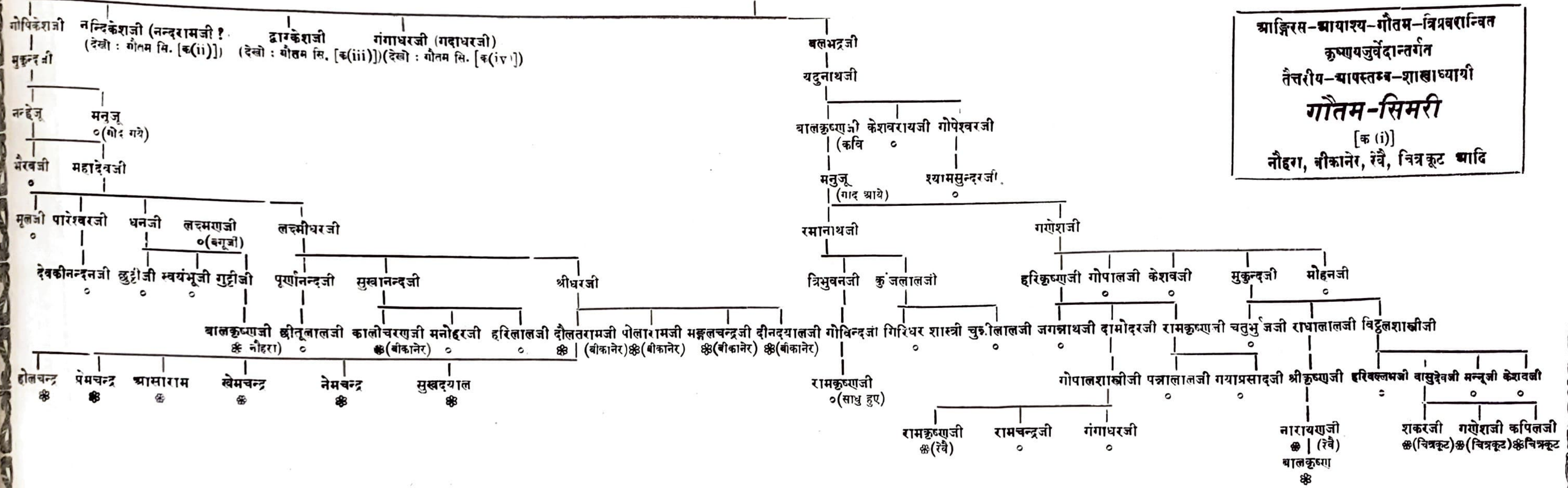
आत्रेय-द्राविड़ा
[घ]
कोटा, नाथद्वारा आदि

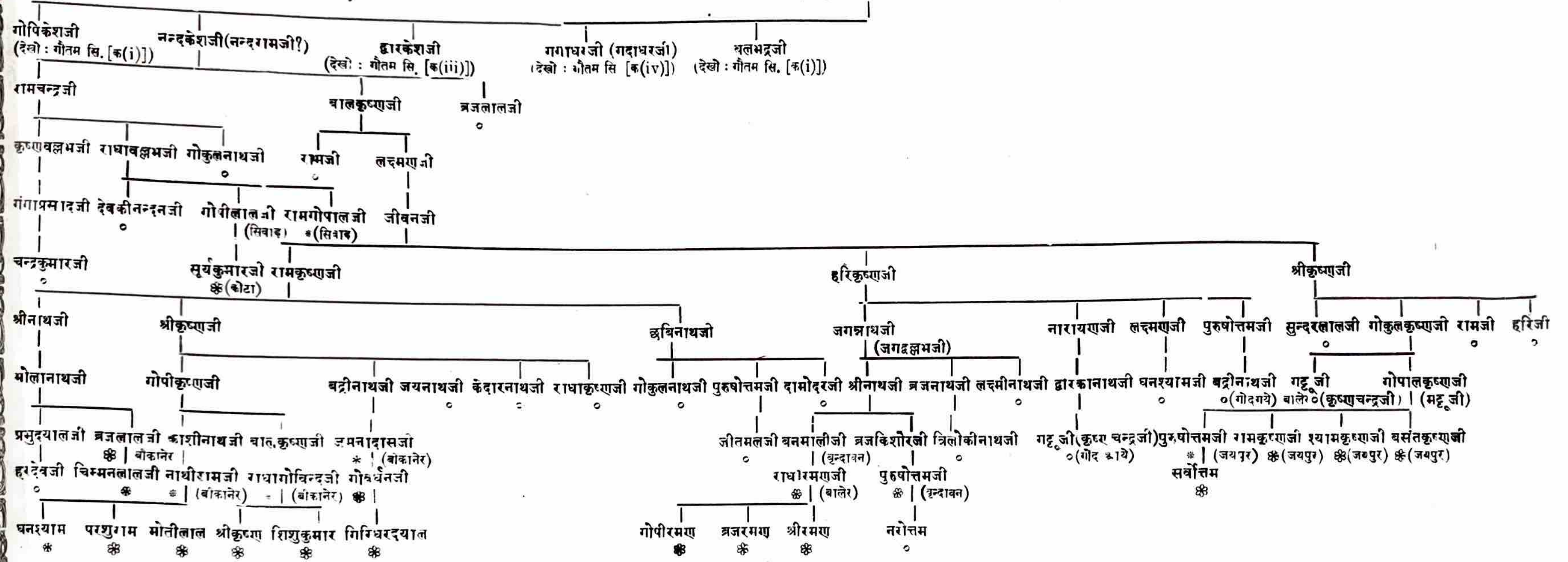
आत्रेय-आत्रेय (गोकुलस्थ)
[ध]
जतीपुरा, कोटा आदि (अनुपलब्ध)

आत्रेय-द्राविड़ा (गोकुलस्थ)
[ङ]
कोटा, नाथद्वारा आदि (अनुपलब्ध)

आत्रेय आर्चनानस शावास्य—त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय आपस्तम्ब शाखाध्यायी
आत्रेय-बागरोदी
[ग]
जयपुर, बम्बई, अलवर, व्रजनगर, नाथद्वारा आदि

रामकृष्णजी (तेजरामजी ?)





गौतम-सिमरी

[क(ii)]

सिवाड़, बीकानेर(भिलाइया)बालेर, वृन्दावन जयपुर

गौतम-सिमरी
[क (iii)]
नरी, ऊँचाग्राम बीकानेर आदि

रामकृष्णजी (तेजरामजी ?)

गोपिकेशजी (देखो : गौतम सि. [क/१]) नन्दिकेशजी (नन्दरामजी ?) (देखो : गौतम सि. [क/२]) द्वारकेशजी गंगाधरजी (गदाधरजी) (देखो : गौतम सि. [क/४]) बलभद्रजी (देखो : गौतम सि. [क/१])

दिवाकरजी वेंकटेशजी ०

गिरिधारीजी मोहनजी लक्ष्मणजी ० रूपलालजी

पद्मनाभजी दामोदरजी ० वासुदेवजी ० गोबिन्दजी ० मथुरानाथजी खड्डूजी

बिहारीलालजी ० मुरलीधरजी नन्दकुमारजी पुरुषोत्तमजी ० (चंचलभट्ट) बचड्डूजी भवानीप्रसादजी लक्ष्मीप्रसादजी

बालमुकुन्दजी कृष्णवल्लभजी प्रहलादजी ० हरदेवजी ० घनश्यामजी बलरामजी ० बंसीधरजी ० भाऊलालजी चन्दालालजी ० सुखदेवजी ❀ (बीकानेर) वासुदेवजी ❀ नन्दलालजी

टीकमजी ० रामकृष्णजी ❀ (नरी) कन्हैयालालजी ० जीवनलालजी ❀ (नरी) रणछोड़जी ❀ (ऊँचागाँव) गोवर्धनजी ❀ (नरी) केवलचन्द्रजी ❀ अनन्तलालजी (बीकानेर) ❀ (बीकानेर) किशोरीवल्लभजी ❀ मूलचन्द ❀ भुवनेश्वर ❀ गोपीवल्लभ ❀ युगलकिशोरजी ❀ (बीकानेर) रामकिशोरजी भगीरथजी (बीकानेर)

मदनमोहनजी ❀ (प्रेमन॰ोबर) मदनगोपालजी ❀ दामोदरजी ० व्रजगोपालजी ❀ श्यामसुन्दर ❀ लक्ष्मण ❀ आसाराम ❀ चन्द्रकान्तमणि ❀ प्रकाशमणि ❀ रजनीवल्लभ ❀ कमलप्रसादजी ❀ सुजानमलजी ❀ (बीकानेर) श्रीगोपालजी ❀ बीकानेर व्रजगोपालजी ❀ (बीकानेर) वटकप्रसाद ❀ बीकानेर रामेश्वर ❀

नन्दकिशोर ❀ मक्खनलाल ❀ देवकीनन्दन ❀ बुलाकीलालजी ❀ प्रह्लादजी ❀ जगन्नाथजी ❀ मार्कण्डेयजी ❀ इन्दु ❀ विष्णु ❀ अश्विनीकुमार ❀ सोमेश्वर ❀

गौतम-सिमरी
[क(iv)]
नरी, बीकानेर(अटेर), वृन्दावन(गोकुल) आदि

रामकृष्णजी (तेजरामजी ?)

गोपिकेशजी (देखो : गौतम सि. [क/१]) नन्दिकेशजी (नन्दरामजी ?) (देखो : गौतम सि. [क/२]) गंगाधरजी (गदाधरजी) बलभद्रजी (देखो : गौतम सि. [क/१])

छोटेरायजी नत्थूजी ०

नन्हेजी मथोलेजी मन्नूजी ०(मथुरानाथजी ?)० गोपीनाथजी बालमुकुन्दजी

छोटेलालजी मदनजी गोवर्धनजी ० दत्तक लोहित अबोटी में ० गोपालजी गिरिधरजी ❀ (वृन्दावन) छन्नूजी ०

सुन्दरलालजी गंगाप्रसादजी रामलालजी ०

भागा ० शिवनारायण ० जयनारायण ० गोपालजी

उद्धवजी ० माधवजी ० दामोदरजी ❀ (अटेर) (बीकानेर)

राधावल्लभ

त्रिष्णुशर्मा

- त्रिष्णुशर्मा
  - यज्ञेश्वरजी
    - वाचिदेवजी
      - लक्ष्मणजी ०
      - माधवजी
        - विष्णुदेवजी
          - रामजी ०
          - विश्वपतिजी ०
          - माधवजी
            - गोपीनाथजी
              - मुरलीधरजी
                - यशोदानन्दनजी ०
                - रघुनन्दनजी
                  - गोपीनाथजी
                    - प्रपन्नमुरलीधरजी
                      - श्रीधरजी
                        - श्रीकृष्णवल्लभजी
                          - भोलूजी (बलभद्रजी) ०
                            - व्रजगोपालजी
                              - श्रीनिवासजी ० (लश्कर)
                                - पद्मनाभजी ❀
                                - गिरिधरजी ❀
                                - मुरलीधरजी ❀
                              - रामचन्द्रजी
                                - कृष्णचन्द्रजी (दत्तक) ❀ (लश्कर)
                                  - रमेशचन्द्र ❀
                                  - ❀
                                  - ❀
                              - दामोदरजी ❀ (लश्कर)
                                - कृष्णचन्द्रजी (दत्तक) ❀
                                - मुकुन्दजी ❀
                                  - पुरुषोत्तम ❀
                                  - चारुकृष्ण ❀
                                  - पद्मेश ❀
                                - श्रीनाथजी ❀
                                  - अरविन्द ❀
                                - नटवरजी ०
                                  - ❀
                                - श्यामजी ❀
                      - पद्मनाभजी
                        - श्रीनाथजी ०
                        - रमानाथजी ०
                        - बसन्तरामजी
                          - पुरुषोत्तमजी
                      - वंशीधरजी
                        - जनार्दनजी
                          - लल्लूजी
                            - गोवर्धनलालजी
                              - पूर्णगोपालजी ❀ (टीकमगढ़)
                                - नूतनकुमार ❀
                                - चि० ❀ ......
                            - खुनखुनजी ०
                - देवकीनन्दनजी ०
                - यदुनन्दनजी ०
              - वंशीधरजी ०
            - गोपिकाकान्तजी ०
              - गोपालकृष्णजी ०

गौतम चक्रवर्ती

[ग]

लश्कर, टीकमगढ़ आदि

पुरुषोत्तम गोस्वामी

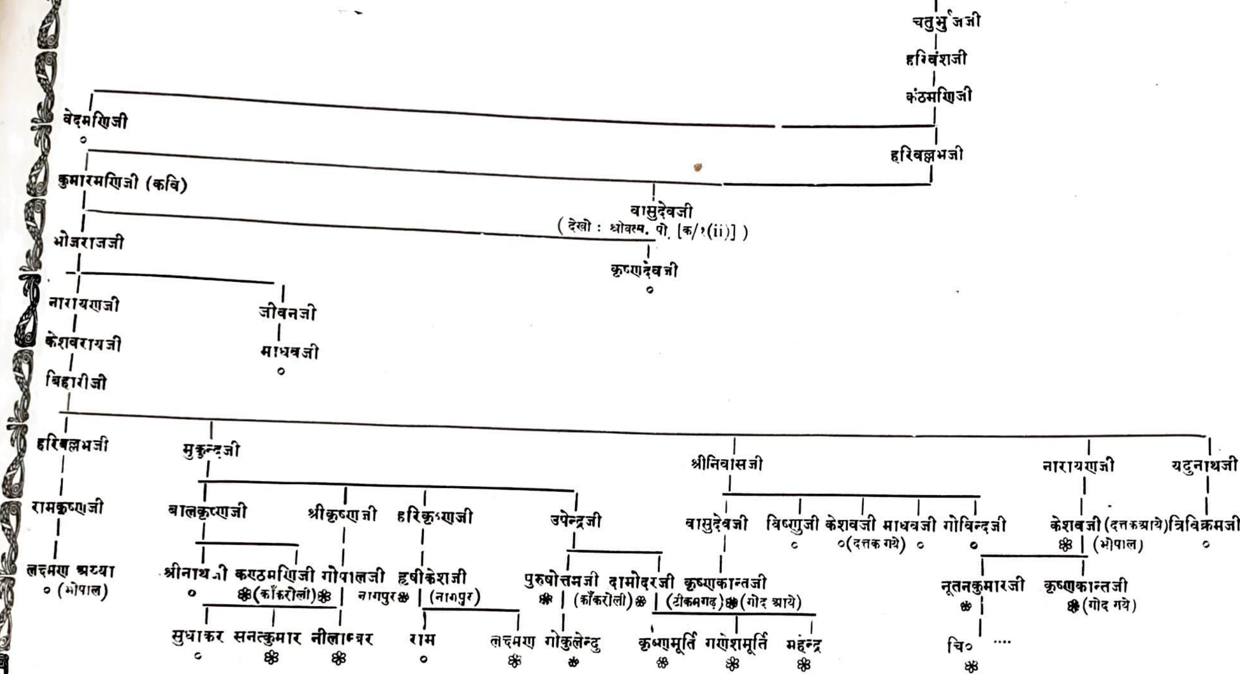
- लक्ष्मण भट्ट
  - श्रीकृष्ण (कविकलानिधि)
    - द्वारकानाथ (भारती)
      - व्रजपालजी (चुन्नीलालजी)
        - कविवरमण्डन
          - लक्ष्मणजी
            - सुन्दरलालजी (दत्तक आये)
              - मथुरानाथजी जयपुर (दत्तक आये)
                - कलानाथ ❀
                - कमलानाथ ❀
        - छोटेलालजी
          - बालमुकुन्दजी
            - रामकृष्णजी ०
            - श्यामलालजी
              - मदनमोहनजी (जयपुर) ❀
                - राधेश्याम ❀
        - वासुदेवजी (कवि)
          - रघुनाथजी ०(दत्तक गये)
          - लक्ष्मीनाथजी
            - द्वारकानाथजी
              - रमानाथजी ❀ (नाथद्वारा)
                - व्रजनाथजी ❀
                  - नवीनकृष्ण ❀
                  - जगदीश ❀
                  - केशव ❀
                  - महेश ❀
                  - सुरेश ❀
              - मथुरानाथजी ०(दत्तक गये)
            - बद्रीनाथजी ०
            - केदारनाथजी
              - श्रीनाथजी ❀ (जयपुर)
                - गोपीनाथ ❀
                - गाकुलनाथ ❀
                - सीतानाथ ❀
                - राजेन्द्र ❀
          - कल्याणरायजी ०(दत्तक आये)
        - गोविंदलालजी
          - केशवजी ०(दत्तक गये)
          - घासीलालजी ०
    - जगदीश (कवि) ० (दत्तक गये)
  - जगन्नाथजी (पुरुषोत्तम)
    - चिम्मनलालजी
      - जगदीश (कवि) (दत्तक आये)
        - मोतीलालजी
          - केशवजी (दत्तक आये)
            - जीवनलालजी ०
            - सुन्दरलालजी ० (दत्तक गये)
        - लड़ैतीलालजी
          - श्यामलालजी
            - रघुनाथजी (दत्तक आये)
              - कल्याणरायजी (दत्तक आये)
                - विनोदीलालजी
                  - मनमोहनजी (जयपुर) ❀
                    - शशिमोहन ❀
                    - महेन्द्र ❀
                    - आनन्द ❀
                  - व्रजमोहनजी ❀ (बीकानेर)
                    - सत्यनारायण ❀

गौतम-देवर्षि

[ग]

जयपुर, नाथद्वारा आदि

पण्डितराज माधवजी । रुद्रणाचार्य । बलभद्रजी । कवि पण्डित मधुसूदनजी

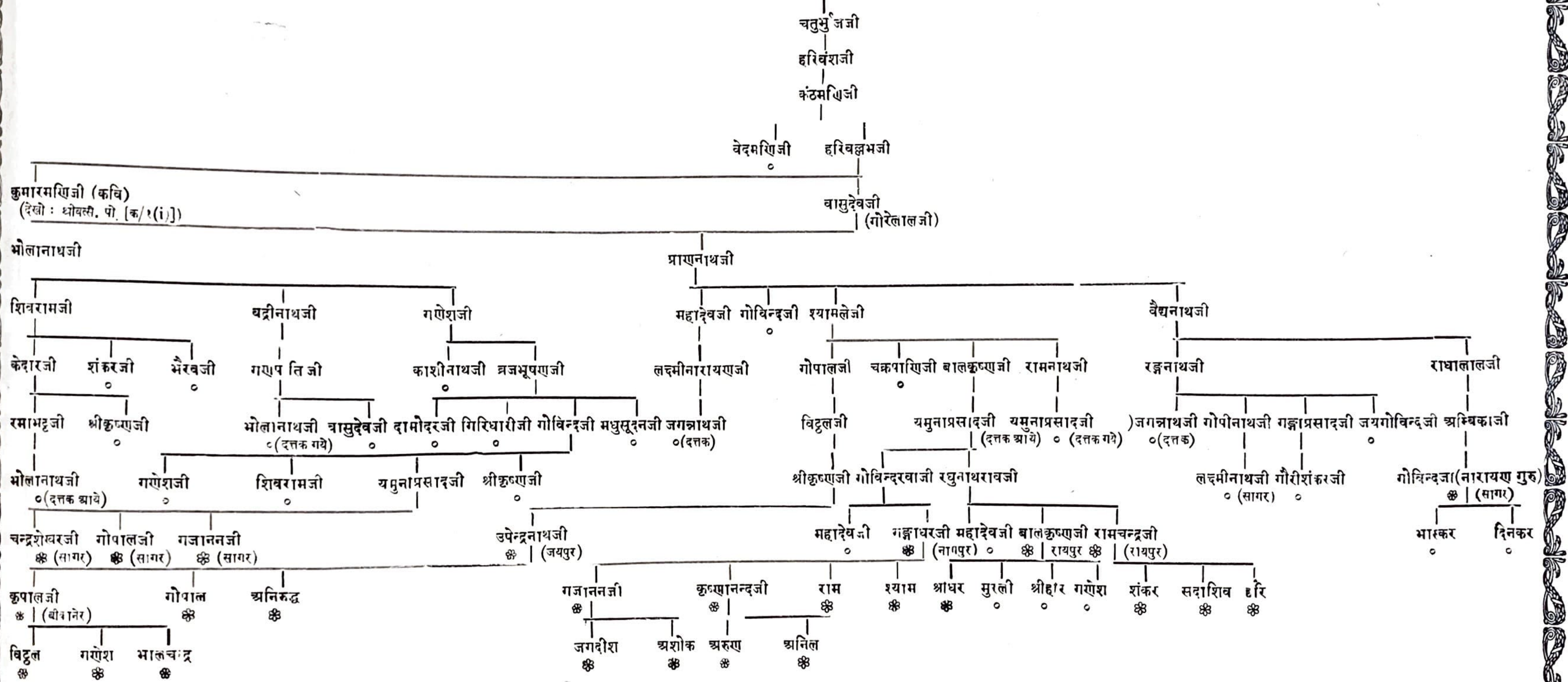


भार्गव, च्यवन, आप्नवान्, और्व, जामदग्न्य-
पञ्चप्रवरान्वित ऋग्वेदान्तर्गत
शाकल-आश्वलायन-शाखाध्यायी

श्रीवत्स-पोतकूर्चि

[क/१(i)]

काँकरोली, नागपुर, भोपाल आदि



श्रीवत्स-पोतकूर्चि

[क/१(ii)]

सागर, जयपुर, नागपुर, रायपुर आदि

ब्रह्मदेव

जयदेव

कृष्णदेव

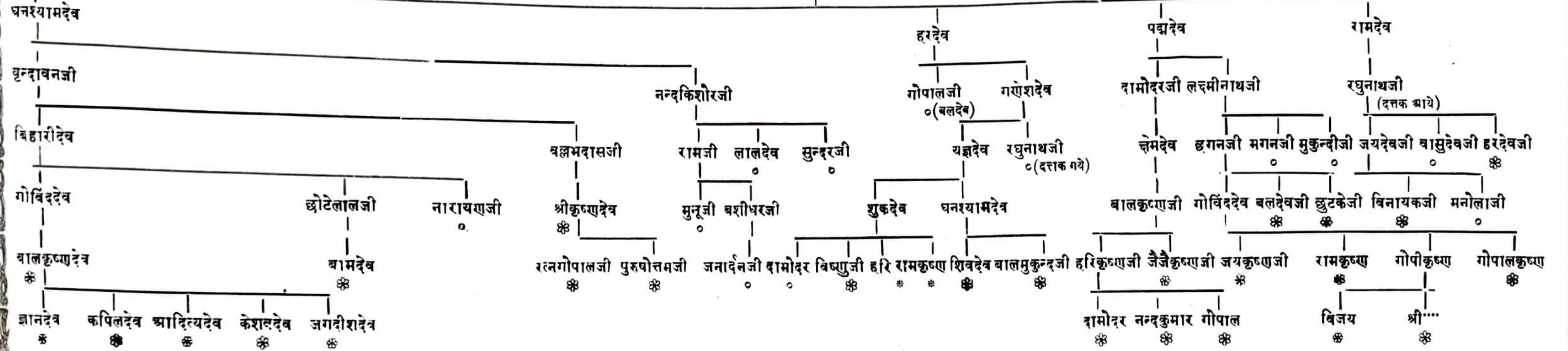
ज्ञानदेव

शुकदेव

गोविन्ददेव

वासुदेव

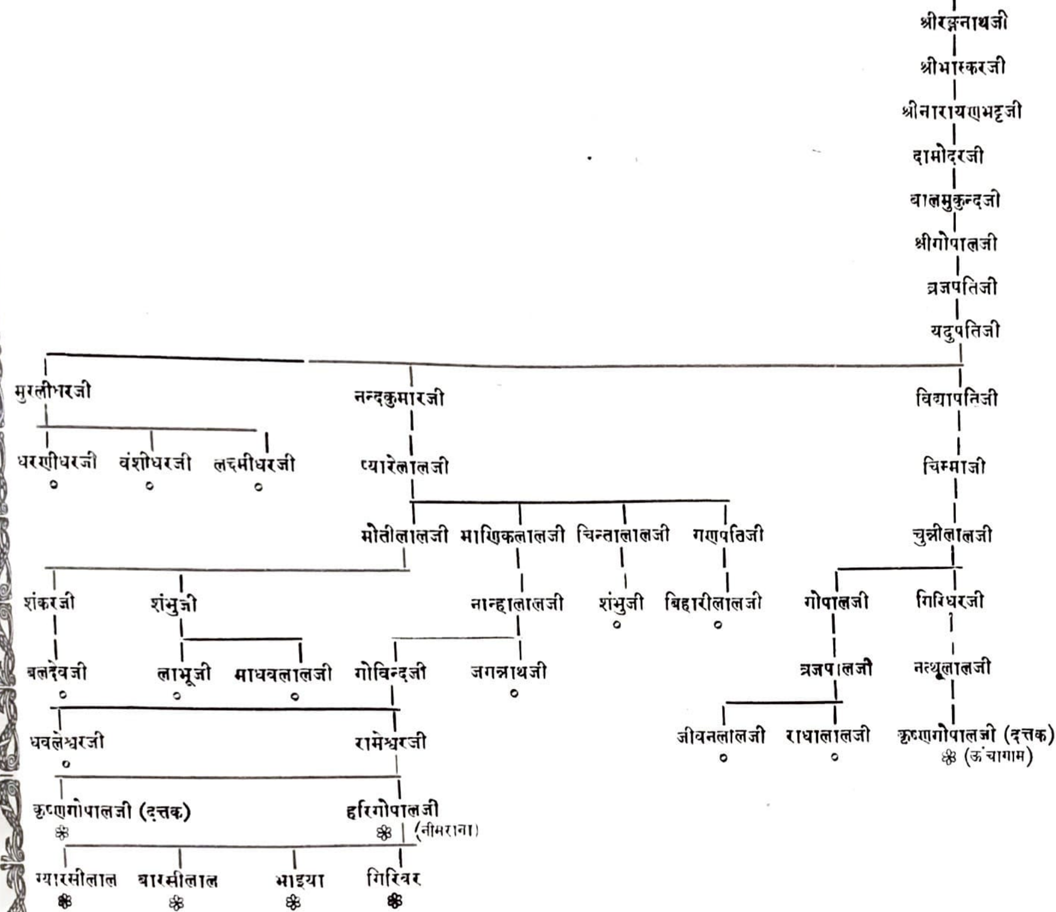
शवदेव



श्रीवत्स-पोतकूर्चि

[का२]

टीकमगढ़



श्रीवत्स-भवरसा (माध्व गोस्वामी बाजिया)

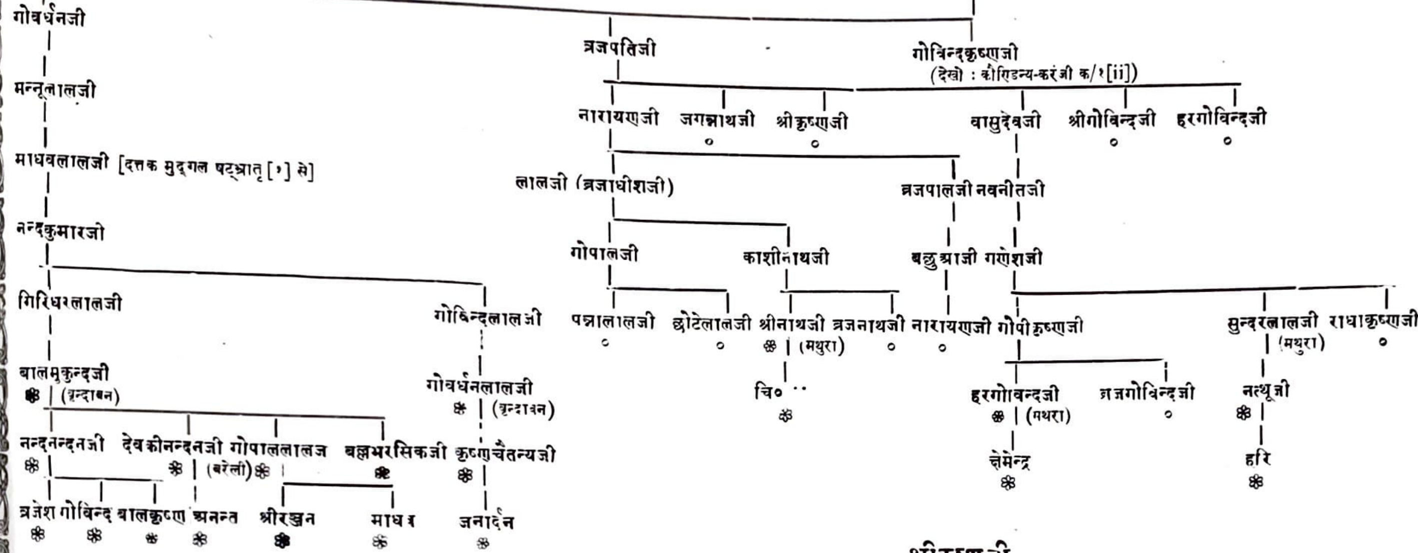
(भद्राश्व)

[ख]

ऊँचाग्राम

श्रीकृष्णजी

लालजी (१८००)



वाशिष्ठ-मैत्रावरुण-कौण्डिन्य-त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

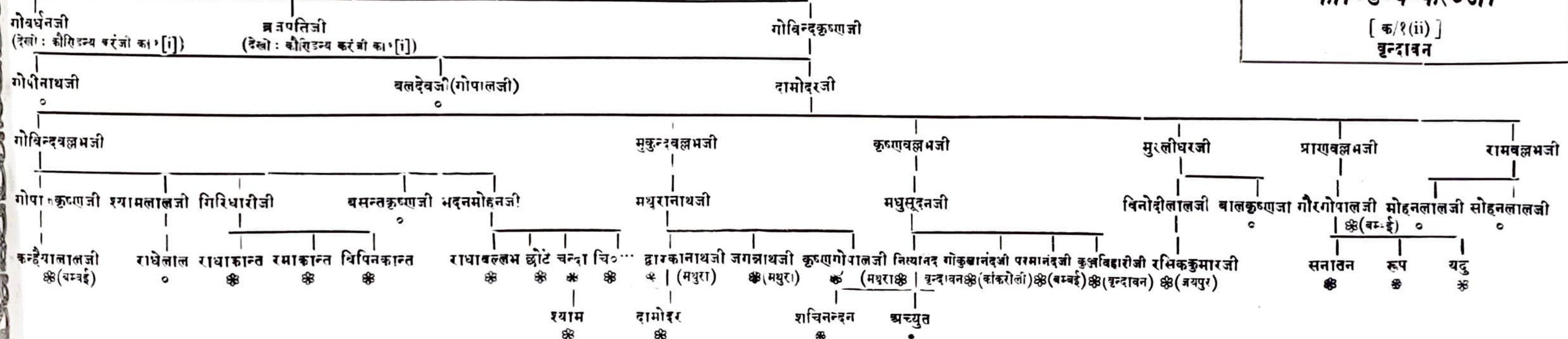
कौण्डिन्य-करञ्जी

[क/१(i)]

वृन्दावन (षट्भ्रातृ), मथुरा आदि

श्रीकृष्णजी

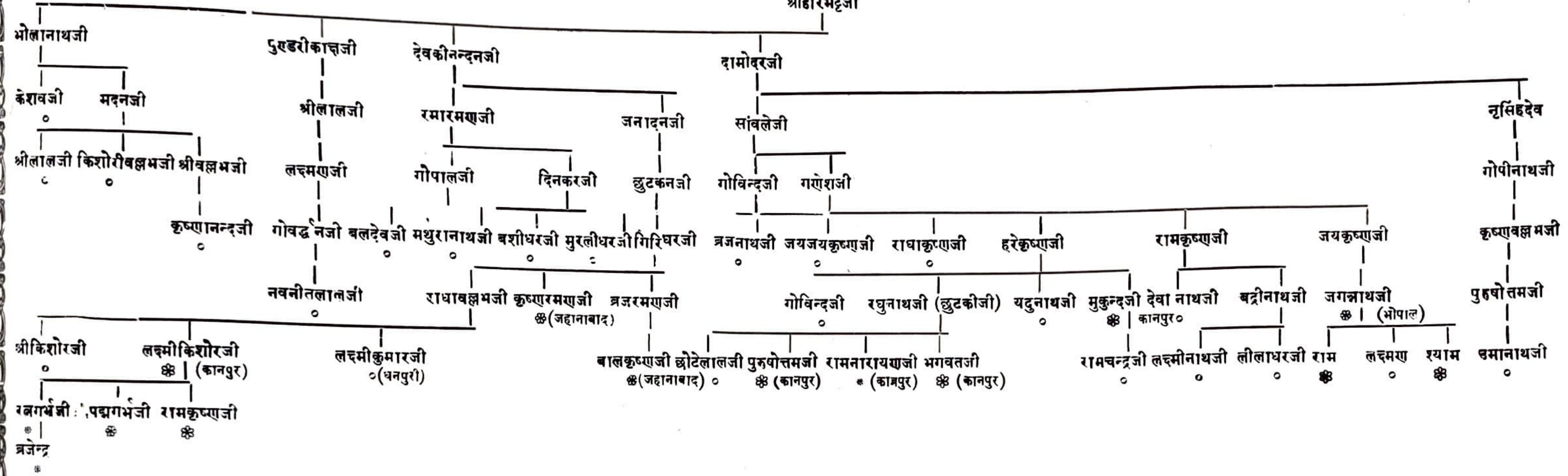
लालजी (१८००)



कौण्डिन्य-करञ्जी

[क/१(ii)]

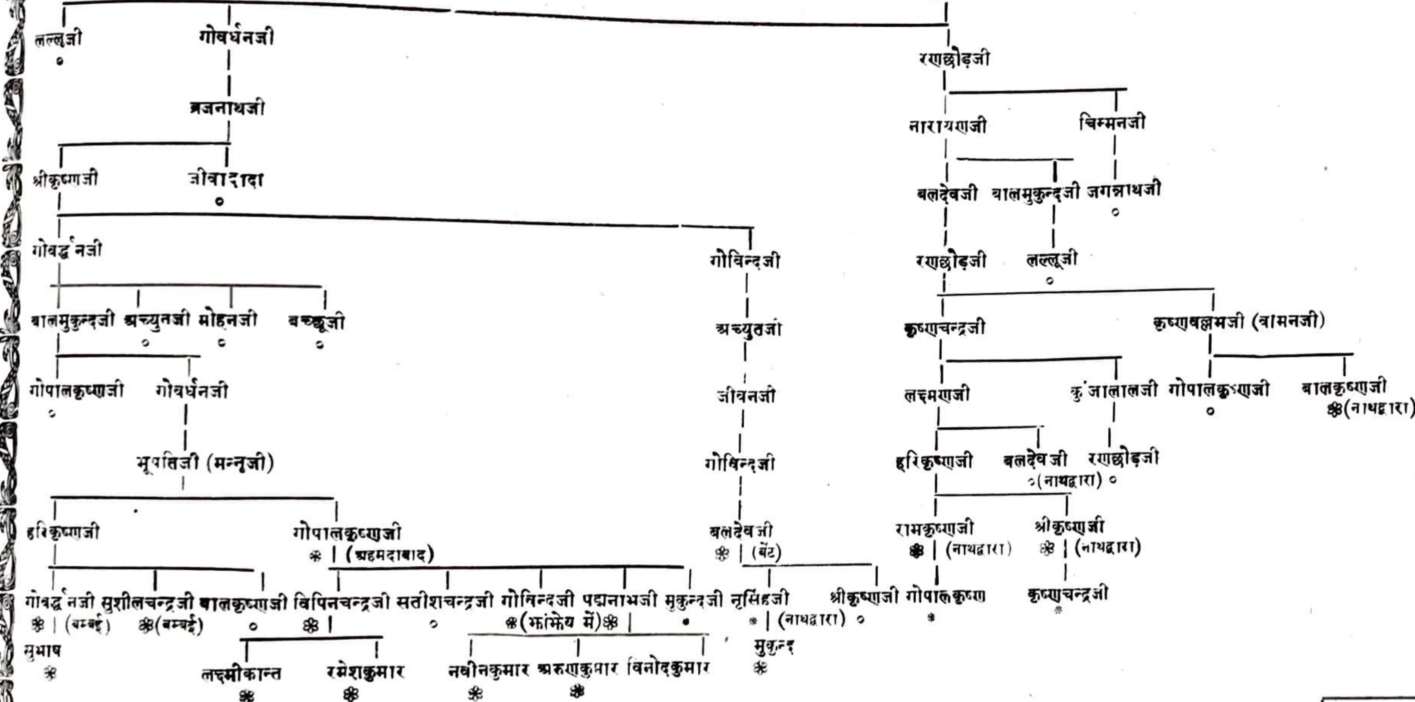
वृन्दावन



कौण्डिन्य-करञ्जी

[क/२]

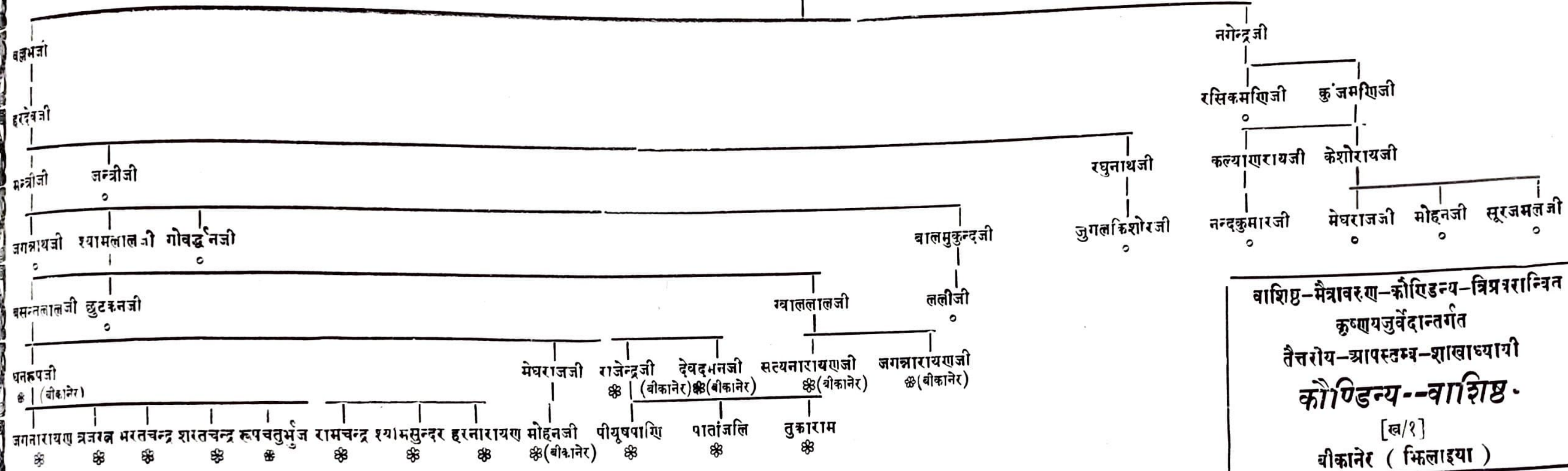
कोडा जहानाबाद, कानपुर आदि



कौण्डिन्य करंजी

[क/३]

बम्बई, अहमदाबाद, बेंट, नाथद्वारा आदि



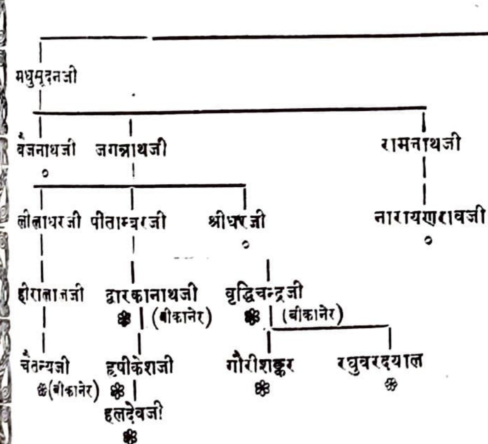
वाशिष्ठ-मैत्रावरुण-कौण्डिन्य-त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

कौण्डिन्य--वाशिष्ठ-

[ख/१]

बीकानेर (झिलाइया)

श्रीकृष्णजी



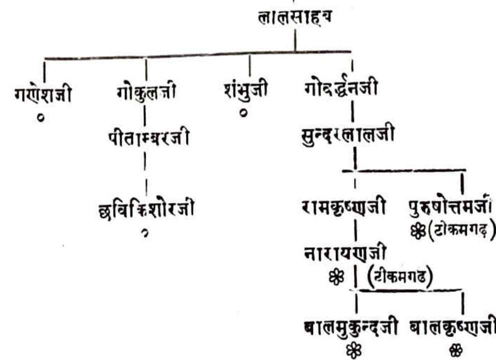
भास्करजी
दीनानाथजी
बब्बूजी

कौण्डिन्य-वाशिष्ठ

[ख/२]

बीकानेर (बांदास्थ)

गिरिधरजी



वाशिष्ठ-मैत्रावरुण-कौण्डिन्य—त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब—शाखाध्यायी

कौण्डिन्य--दीक्षित

[ग]

टीकमगढ़

आङ्गिरस आसाश्य मौद्गल्य–त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय–आपस्तम्ब–शाखाध्यायी

मुद्गल-षट्भ्रातृ (छभैया)

[१]

बृन्दावन (करंजी), कांकरोली, मथुरा आदि

श्रीकृष्णजी

गोकुलजी चन्द्रजी बलरामजी

पुरुषोत्तमजी व्रजनाथजी गिरिधरजी

○

दिवाकरजी

गोवर्धनजी शुकदेवजी

द्वारकानाथजी जयदेवजी व्रजनाथजी

गोपीनाथजी जीवनजी

द्वारकानाथजी

जीवनजी

कामदेवजी वेंकटेशजी मोहनजी माधवजी

○ ○ ○(दत्तक करंजी [का॰१] में)

व्रजवासीजी बल्लीजी

○

देवकीनन्दनजी लुटकनजी

○

काननजी गुणाकरजी

गोकुलजी

गोवर्धनजी

व्रजभूषणजी मगनजी

पन्नालालजी नारायणजी गंगाधरजी

○ ○

छिद्दीलालजी विद्याधरजी

○

गुल्लीलालजी पुरखालालजी

○(कांकरोली) ○

जमनाप्रसादजी

गोविन्दजी

❀ | (मथुरा)

राधाकृष्णजी बालकृष्णजी हरिकृष्णजी

❀ | (मथुरा) ❀(मथुरा) ○

गिरिधरजी

लक्ष्मीनारायणजी

❀(कांकरोली)

द्वारकानाथजी

❀(बम्बई)

रामकृष्णजी बल्लभजी गोपीनाथजी श्रीकान्तजी राजेन्द्रजी वासुदेव

❀ | कांकरोली○ ❀ ❀ ❀ ❀

राधामोहनजी

○

कृष्णचन्द्र व्रजभूषण शशिविन्दु

❀ ❀ ○

कृष्णजीवन विनोद

❀ ❀

श्रीकृष्णजी

मुद्गल-षट्भ्रातृ (छभैया)

[२]

लखनौ, खुर्जा, लश्कर, कामबन आदि

गंगाधरजी गोपालजी

लालभट्टजी बालमुकुन्दजी

अन्नाजी

व्रजगोविन्दजी काशीनाथजी मथुरानाथजी

○

श्रीकृष्णजी

बापूजी श्रीरंगजी

चतुर्भुजजी लक्ष्मीनाथजी देवकीनन्दनजी

○

रेवतीनन्दनजी

लालूरामजी

○

रणछोड़जी बालकृष्णजी श्रीनाथजी

○ ○

बालकृष्णजी

❀ | (खुरजा)

मुरलीधरजी

वंशीधरजी

गोविन्दजी

पुरुषोत्तम नित्यानन्द

❀ ❀

गोवर्धनजी घनश्यामजी गोपालजी बालमुकुन्दजी

❀ | (जयपुर) (कामबन)

व्रजपालजी

बलभद्रजी

❀(लखनौ)

जुगलजी

❀(जयपुर)

बलभद्रजी वासुदेवजी गोकुलचन्द्रजी मदनलालजी विष्णुकुमार चन्द्रकुमार नम्रकुमार कृष्णकुमार नूतन

❀(बरेली) ❀(कांकरौली) ❀ (लश्कर) ❀(लश्कर) ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

फूलचन्द्रजी नत्थूजी

❀ | (जयपुर)

राम लक्ष्मण

❀ ❀

गोपीचन्द्रजी ....

❀(जयपुर) ❀ ❀

मुद्गल-षट्भ्रातृ (छमैया)
[३(i)]
दग्धा आदि

काशीनाथजी

(गोविन्दजी) गिट्टाजी लम्बुकजी ०(लम्बोदरजी) जोगियाजी ०(योगेश्वर) तिघराजी ० गिरिधरनजी ० भरनजी (भट्टाचजी) ०

नागनाथजी
पद्मनाभजी
प्राणनाथजी
विद्यानाथजी
चित्रनाथजी

काशीनाथजी ० नागनाथजी जयनाथजी ०

शम्भुनाथजी ० जयशंकरजी

श्यामनाथजी ० शंभुनाथजी

विश्वनाथजी

रमानाथजी ऋषिनाथजी ० भैरवनाथजी गंगानाथजी ०

दीनानाथजी
गोरेलाल (लालकवि)

लोकनाथजी बैजनाथजी (देखो : मुद्गल ष. ३ ii) रमानाथजी (देखो : मुद्गल ष. ३(ii)) विश्वनाथजी

गणेशजी शिवनाथजी श्रीनाथजी काशीनाथजी

प्राणनाथजी गंगाधर शास्त्री मन्नूजी ऋषिनाथजी मदनमोहनजी ०

दामोदरजी ० शालिग्रामजी ० गौरीशंकरजी ० व्रजलालजी हरगोविन्दजी ० कन्हैयालालजी ० शास्त्री पन्नगेन्द्रजी शास्त्री भैरवनाथजी ० जगन्नाथजी ० छविनाथजी दयानाथजी मनुजी ० दीनानाथजी ०

जगन्नाथजी कृष्णनाथजी ० पन्नालालजी ० व्रजनाथजी ० (काशी)

रामनाथजी ❀ (दग्धा)

नेत्रनाथ ❀ घनश्याम ❀ राम ❀

विश्वनाथजी — जानकीनाथजी — काशीनाथजी ०

कुंजबिहारीजी — गोपीनाथजी — लक्ष्मणजी — गोवर्द्धनजी — देवनाथजी — पुरुषोत्तमजी — भगवानदासजी ०

मुद्गल-षट्भ्रातृ (छभैया)

[३(ii)]

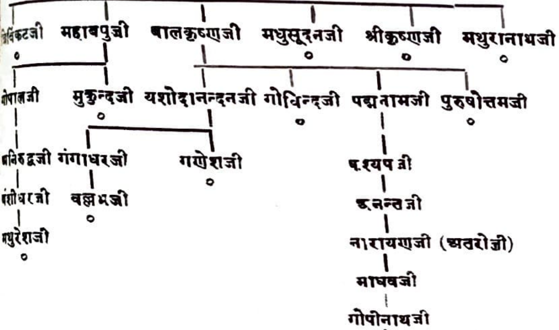
बीकानेर, अजयगढ़ आदि

- काशीनाथजी
  - जगन्नाथजी
    - गिट्टाजी (गोविन्दजी)
      - नागनाथजी
        - पद्मनाथजी
          - प्राणनाथजी
            - थानाथजी
              - चित्रनाथजी
                - काशीनाथजी ○
                - नागनाथजी
                  - शम्भुनाथजी ○
                  - जयशंकरजी
                    - श्यामनाथजी ○
                    - शंभुनाथजी
                      - विश्वनाथजी
                        - रमानाथजी
                          - दीनानाथजी
                            - गोरेलालजी (लालकवि)
                              - लोकनाथजी [देखो : मुद्गल ष. ३(i)]
                              - बैजनाथजी
                                - श्यामलेजी ○
                                - गोपीनाथजी
                                  - बलवन्तजी ○
                                  - नत्थूजी
                                    - नारायणजी ○
                                    - लेटेरेजी
                                      - जीवनलालजी ○
                                    - तुलसीजी ○
                                    - अनन्तलालजी ○
                                  - गिरिधारीजी
                                    - भवनाथजी
                                      - मनजी ○
                                      - धनजी
                                        - गोवधनजी ○
                                        - कुंभनजी ○
                                    - हरिनाथजी
                                      - गोविन्दजी
                                        - श्रीनाथजी ○
                                        - राधावल्लभजी ○
                                        - कुंजलालजी ○
                                    - बनमालीजी
                                      - चिरंजीलालजी ○
                                      - टीकमचन्द्रजी
                                        - उत्तमलालजी ❀ (बीकानेर)
                                          - कपिलदेव
                                          - कुन्दनलाल
                                      - प्रह्लादजी ❀ (बीकानेर)
                                        - ध्रुव ❀
                                        - श्रीचन्द्र ❀
                                        - प्रेमचन्द्र ❀
                                    - चौथनाथजी
                                      - गोवर्धनजी ○
                                      - रामधनजी ○
                                      - बद्रीप्रसादजी ❀ (बीकानेर)
                                - गोवर्द्धनजी
                                  - देवनाथजी ○
                              - रमानाथजी
                                - द्वारकानाथजी ○
                                - शम्भुनाथजी ○
                                - मथुरानाथजी
                                  - मुरलीधरजी ○
                                - रघुनाथजी
                                  - बैनीमाधवजी
                                    - भानुजी
                                      - गिरिधारीजी [दत्तक : भारद्वाज ने. (का१)में]
                                      - छोटेलालजी ❀ (अजयगढ़)
                                        - लक्ष्मीनाथजी ❀
                                          - मोहन ❀
                                          - सोहन ❀
                                    - जागेश्वरजी ○
                                - जयनाथजी
                                  - वृद्धिनाथजी
                                    - गोपालजी ○
                                    - गुम्भलूजी
                                      - बैजनाथजी
                                        - कन्हैयालालजी ○
                                        - ○
                              - विश्वनाथजी [देखो : मुद्गल ष. ३ (i)]
                        - ऋषिनाथजी ○
                        - भैरवनाथजी (देखो : मुद्गल ष ३[i])
                        - गंगानाथजी ○
                - यनाथजी ○
    - लम्बुकजी (लम्बोदरजी) ○
    - जोगियाजी (योगेश्वरजी) ○
    - तिघराजी ○
    - गिरिधरनजी ○
    - भरतजी (भद्राचजी)। ○

नारायणैय्या

विष्णुअय्या

जगन्नाथ (पंडितराज)



नारायणजी (अतरोजी)

माधवजी

गोपीनाथजी

रघुनन्दनजी — द्वारकानाथजी — गोपालजी, बालकृष्णजी — रामचन्द्रजी

यदुनन्दनजी — छोटाजी — गोकुलचन्द्रजी, रामचन्द्रजी

...जी, व्रजनाथजी, रघुनाथजी

लालजी, बालजी — ...रामचन्द्रजी

श्रीकृष्णजी, दामोदरजी, केशोरायजी, गोकुलजी, मोहनजी, बालमुकुन्दजी

यशोदानन्दनजी, द्वारकानाथजी

गोपालजी — श्रीनाथजी, गोवर्धनजी, श्रीकृष्णजी ❀ (कोटा)

...नी नरोत्तमजी

कृष्णचन्द्रजी (नत्थूजी), पुरुषोत्तमजी

वल्लभजी ❀, गोपालकृष्णजी (नासिक) ❀, बालकृष्णजी (नासिक) ❀, रामकृष्णजी (मडालिया) ❀ (बम्बई)

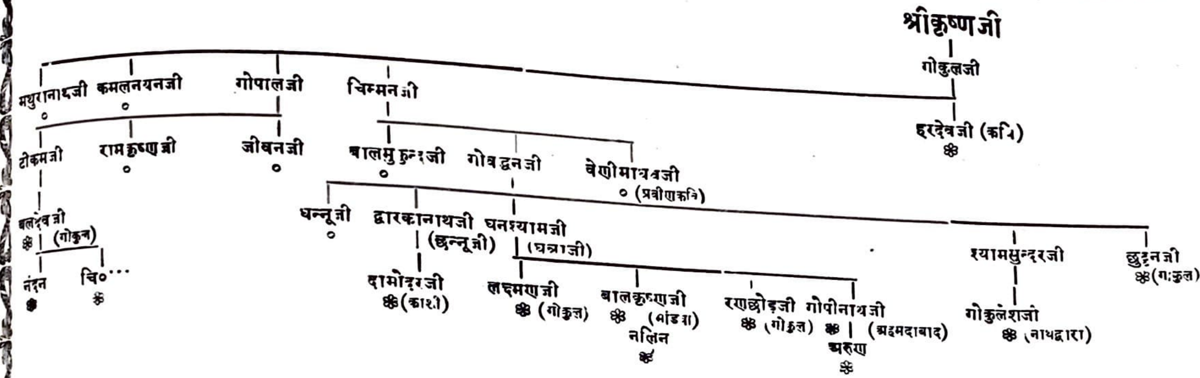
सत्यनारायणजी ❀

काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव त्रिप्रवरान्वित
ऋग्वेदान्तर्गत
आश्वलायन-शाकल-शाखाध्यायी

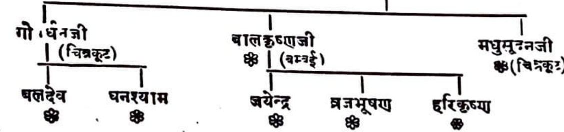
काश्यप-रेही (पातालभेदी)

[का१]

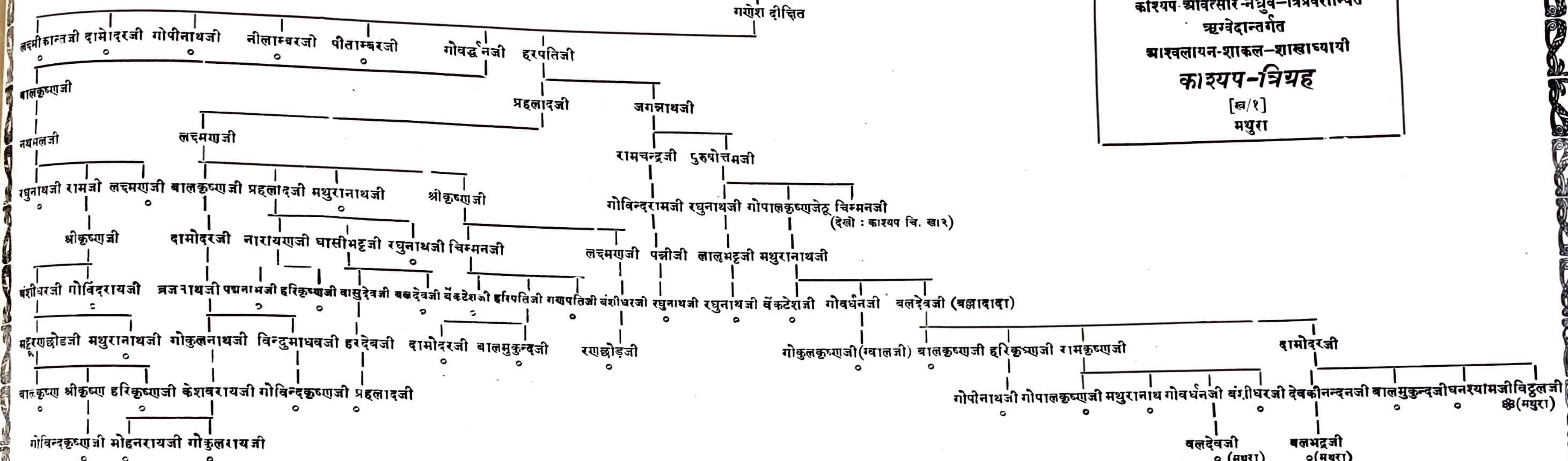
चंदौसी, कोटा, गोकुल, घाटा, काशी, नाथद्वारा, अहमदाबाद
नासिक मडालिया आदि ।



काश्यप-रेही
[का२]
गोकुल,काशी,मांडवी,अहमदाबाद,नाथद्वारा आदि



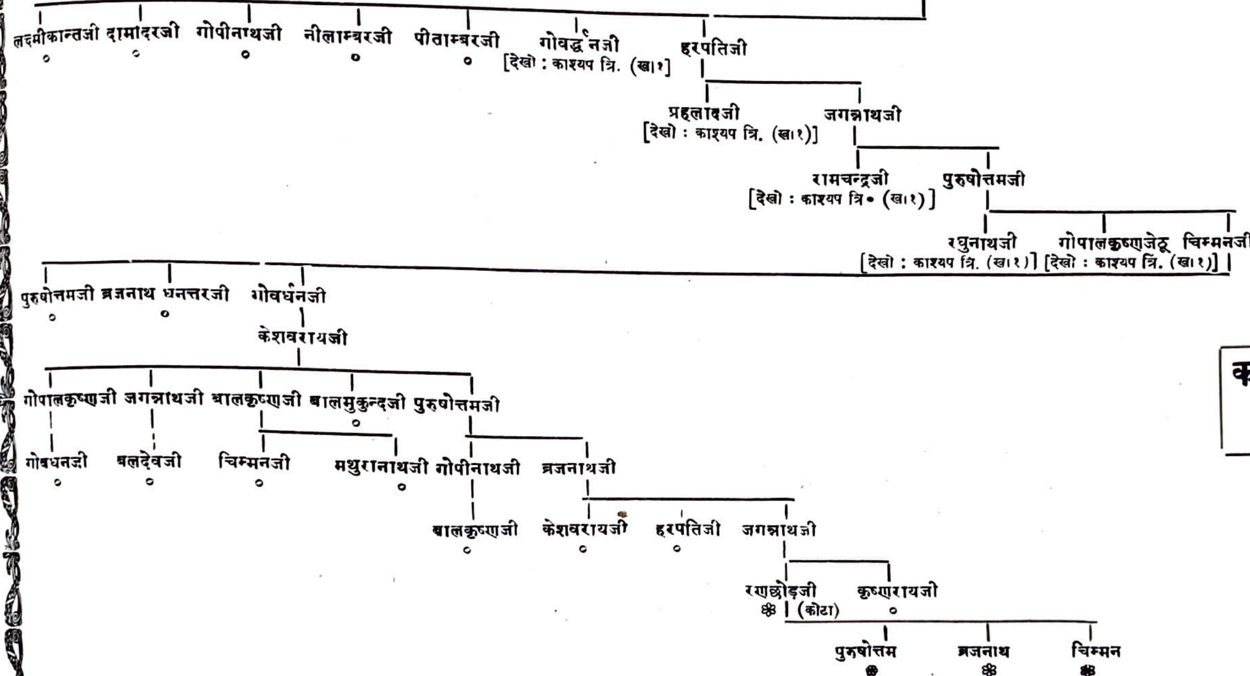
काश्यप-रेही
[का३]
चित्रकूट आदि


काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव-त्रिप्रवरान्वित
ऋग्वेदान्तर्गत
आश्वलायन-शाकल-शाखाध्यायी
काश्यप-त्रिग्रह
[ख/१]
मथुरा
रामचन्द्र दीक्षित
हरिहर दीक्षित
गणेश दीक्षित
लक्ष्मीकान्तजी
दामोदरजी
गोपीनाथजी
नीलाम्बरजी
पीताम्बरजी
गोवर्द्धनजी
हरपतिजी
बालकृष्णजी
प्रहलादजी
जगन्नाथजी
नथमलजी
लक्ष्मणजी
रामचन्द्रजी
पुरुषोत्तमजी
रघुनाथजी
रामजी
लक्ष्मणजी
बालकृष्णजी
प्रहलादजी
मथुरानाथजी
श्रीकृष्णजी
गोविन्दरामजी
रघुनाथजी
गोपालकृष्णजेठू
चिम्मनजी
(देखो : काश्यप चि. ख/२)
श्रीकृष्णजी
दामोदरजी
नारायणजी
घासीभट्टजी
रघुनाथजी
चिम्मनजी
लक्ष्मणजी
पन्नीजी
लालभट्टजी
मथुरानाथजी
बंशीधरजी
गोविंदरायजी
व्रजनाथजी
पद्मनाभजी
हरिकृष्णजी
वासुदेवजी
बलदेवजी
वेंकटेशजी
हरिपतिजी
गणपतिजी
बंशीधरजी
रघुनाथजी
रघुनाथजी
वेंकटेशजी
गोवर्धनजी
बलदेवजी (बल्लादादा)
रणछोडजी
मथुरानाथजी
गोकुलनाथजी
विन्दुमाधवजी
हरदेवजी
दामोदरजी
बालमुकुन्दजी
रणछोड़जी
गोकुलकृष्णजी(ग्वालजी)
बालकृष्णजी
हरिकृष्णजी
रामकृष्णजी
दामोदरजी
बालकृष्ण
श्रीकृष्ण
हरिकृष्णजी
केशवरायजी
गोविन्दकृष्णजी
प्रहलादजी
गोपीनाथजी
गोपालकृष्णजी
मथुरानाथ
गोवर्धनजी
बंशीधरजी
देवकीनन्दनजी
बालमुकुन्दजी
घनश्यामजी
विट्ठलजी
(मथुरा)
गोविन्दकृष्णजी
मोहनरायजी
गोकुलरायजी
बलदेवजी
(मथुरा)
बलभद्रजी
(मथुरा)

काश्यप-त्रिग्रह

[ख/२]

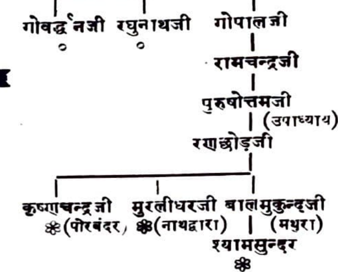
कोटा



काश्यप-करम्भा

[ग]

नाथद्वारा



काश्यप आवत्सार-नैध्रुव-त्रिप्रवरान्वित

ऋग्वेदान्तर्गत

आश्वलायन-शाकल-शाखाध्यायी

काश्यप-करम्भा

[ग]

नाथद्वारा (अनुपलब्ध)

काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव-त्रिप्रवरान्वित

ऋग्वेदान्तर्गत

आश्वलायन-शाकल शाखाध्यायी

काश्यप-झाञ्झेय

[घ]

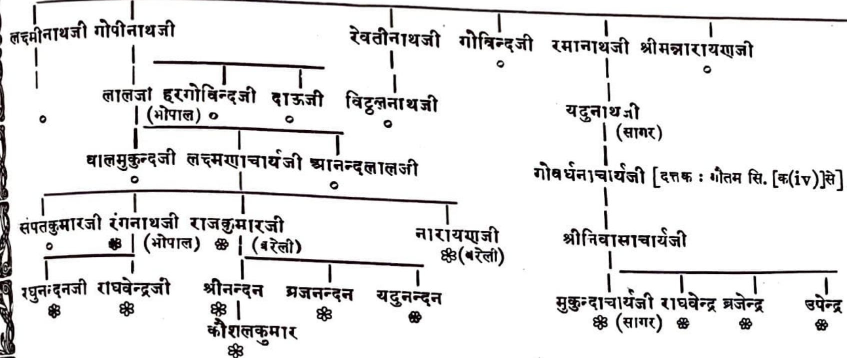
बम्बई (अनुपलब्ध)

श्रीलक्ष्मणाचार्यजी

गोविन्दजी

रंगनाथजी

जगन्नाथजी



वैश्वामित्र-अष्टक-लोहित–त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

लोहित–अबोटी

भोपाल, सागर आदि

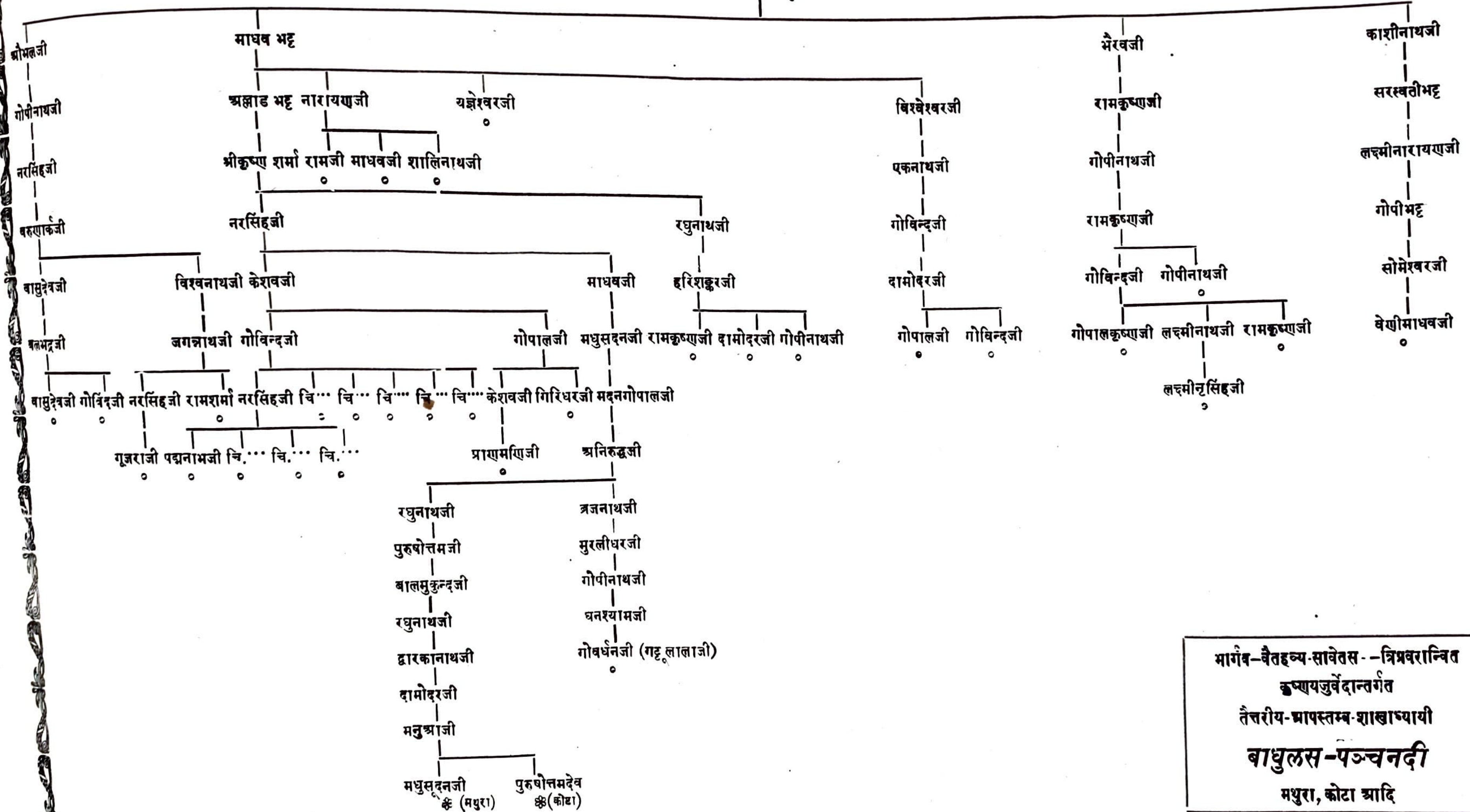
वैश्वामित्र–देवरात-औदल–त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

कौशिक-गोष्ठीशाल

अहमदाबाद (अनुपलब्ध)

आङ्गिरस, अम्बरीष-यौवनाश्व–त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

हरतस—पालगुल्ल : कामवन
(अनुलब्ध) मेंडूर : कामवन
पेद्दीभोटला : सूरत
चिन्तलपाटी: नाथद्वारा



भार्गव–वैतहव्य-सावेतस- –त्रिप्रवरान्वित
कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत
तैत्तरीय-आपस्तम्ब-शाखाध्यायी

बाधुलस–पञ्चनदी

मथुरा, कोटा आदि